अशोक
शिव शंकर श्रीनिवास
शैलेन्द्र आनन्द



त्रिकोण

मैथिली कथा - संग्रह

त्रिकोण

(मैथिली कथा-संग्रह)

कथाकार

अशोक

शिवशंकर श्रीनिवास

शैलेन्द्र आनन्द

प्रकाशक

उर्वशी प्रकाशन

पटना

प्रकाशक

उर्वशी प्रकाशन

मुसल्लहपुर, पटना-६

आवरण—मिडिया मैसेज

मूल्य—{ [illegible] टाका साधारण संस्करण
[illegible] टाका लाइब्रेरी संस्करण }
80/=

प्रथम संस्करण—नवम्बर, १९८६ ई०
प्रति—१०००

मुद्रक—पूर्णिमा प्रिंटर्स
मुसल्लहपुर, पटना-६

TRIKON

(*Maithili Short Stories*)

Ashok

Shiva Shankar Shriniwas

Shailendra Anand

शुभाशंसा

ई जानि परम प्रसन्न भेलहुँ जे मैथिलीक तीन उदीयमान कथाकार लोकनि विद्यापति-पर्वक अवसर पर त्रिकोण लए उपस्थित भए रहल छथि। मैथिलीक कथा-साहित्य तीन युग पार कए चुकल अछि आ चारिम युगमे अपना केँ स्थापित करबाक हेतु सचेष्ट अछि। मिथिलाक जनजीवन मे तीव्र गतिसँ परिवर्त्तन भए रहल अछि जकर चित्रण करब, मूल्यांकन करब, आ चित्रित मूर्ति-सभ केँ; आत्मनिरीक्षण एवं आत्मपरीक्षणक अवसर देब,कथाकारक रोचक कर्त्तव्य थिक। एहि कर्त्तव्यक पालन मे त्रिकोणक तीनू कोण कतेक दूर धरि सफल भेल अछि से तँ सहृदय पाठक लोकनि कहताह, परन्तु हम आशा करैत छी जे ई त्रिकोण उक्त उद्देश्यक पूर्ति मे सफल होएत।

गोविन्द झा

१४, नवम्बर, १९८६ ई०

दू शब्द......

- 'त्रिकोण' तीन समानधर्माक समान सोच, समान दिशा, मैत्रीक संगम पर ठाढ़, भाषा--कथ्य आ' शिल्पक वैविध्यताक प्रतीक थिक।
- जनजीवनक संग जुड़ल, आमलोकक कष्ट, औनाहटि, विवशता एवं ओकर भूख के, सहभागी बनि, सहेजनिहार क कथा थिक ई 'त्रिकोण'।
- रचनाकारक भूमिका मानव समाजक उत्थानक हेतु कटिबद्ध रहैछ। ओ समाजक विद्रूपता पर प्रहार करैत, विडम्बना ओ बिसंगतिक संग युद्ध करैत, आगू बढ़ैत अछि। मुदा, समसामयिक स्वर नहि मिलला सन्तों आवाज मिरमिरा जाइत छैक। ओ युद्धक अगुवाइ नहि कऽ पबैछ। आ'तें आइ जरूरी छैक एक स्वर, एक आवाजक। 'त्रिकोण' स्वरक एकात्मताक द्योतक थिक।
- आइ हमरा लोकनिक कथा पुस्तकाकार भऽ अपने लोकनिक समक्ष उपस्थित भ' रहल अछि।
- हम सभ अपन कथा आओर कथाकारक बादे एहि सँ बेशी नहि कह' चाहब। जे किछु कहबाक अछि, कथाक माध्यम सँ कहि चुकल छी।
- अस्तु, पोथी पाठकीय कटघरा मे ठाढ़ अछि, अपने सभक उचित टिप्पणी सुनबाक हेतु।
- पूर्ण सतर्क रहलाक बादो समयाभावक कारण पोथी मे अशुद्धिक आशंका अछि। तकरा हेतु क्षमायाचनेटा कऽ सकैत छी।
- कोनहुना मात्र दू दिनक अभ्यन्तर, जँ ई पोथी यंत्र सँ निकलि सकल तऽ तकर श्रेय छनि मात्र पूर्णिमा प्रेसक मालिक बन्धु गोपीकान्तजी कें।

परम आदरणीय पं० श्री गोविन्द झा जी कें आभारी छियनि जे शुभाशंसा लीखि प्रोत्साहित कएलनि।

अशोक शिवशंकर श्रीनिवास शैलेन्द्र आनन्द

समर्पण :



स्व० डा० ब्रज किशोर वर्मा 'मणिपद्म' क

नाम

सर्मपित अछि-ई त्रिकोण

अशोक

शिवशंकर श्रीनिवास

शैलेन्द्र आनन्द

क्रम :—

अशोक

शिवशंकर श्रीनिवास

शैलेन्द्र आनन्द



अशोक

- हड्डी
- हेयरपिन
- अन्तिम शह
- एकटा मुस्कुराइत आँखि
- खोंझ

हड्डी

आइ जागेशर के फेर डेरा अएबा मे विलम्ब भऽ गेलैक। आफिस मे बड़का साहेब क इन्सपेक्शन चलि रहल छैक। साहेब ततेक खोध-बेध करैत छैक जे जागेशर तबाह भऽ जाइत अछि। थाकि कऽ चूर भेल जखन डेरा विदा भेल तऽ साँसे अन्हरजाली पसरि गेल रहैक। जागेशर के होइत छैक जे फेर आइ सीमा मुँह फूला कऽ बैसल हेतैक। की करत ओ? चाहियो के कहियो सांझ सँ पहिने डेरा नहि पहुँच पबैत अछि। अन्हार भइये जाइत छैक। आफिस मे भरि दिन फाइल निपटेलाक बाद रोकड़ सेहो मिलाबऽ पड़ैत छैक। मुँह सँ मुँह मिलाएब होइत छैक। कहियो-कहियो तऽ दू चारि रूपैया क अन्तर ओकरा घंटो परेशान कऽ दैत छैक। मुदा काज तऽ खतम करैए पड़तैक। अजुका काज काल्हि पर नहि छोड़ल जा सकैए। आइ कहियो काल्हि नहि भऽ सकैत छैक। काल्हि फेर नव समस्या, नव व्यवस्था प्रति दिन एहि ओझाराहटि मे डेरा आ डेरा पर प्रतिक्षारत, तीन प्राणी जागेशर क मोन मे हुलकी दैत रहैत छैक। 'सीमा एखन की करैत हेतैक? कतहु सूति ने रहल होइक। छोटका पप्पू खूजल गेट दऽ के गली मे ने चलगेल होइ। कहुँखन संच-मंच नहि रहैत छैक। नव पएर भेलैक अछि तैं सदिखन बुलिते रहऽ चाहैत छैक। गली में गाय, महींस, सांढ़ सभ घूमैत रहैत छैक। पीचि ने दैक। बच्चा चोरबऽवला सभ सेहो तऽ घूमल करैत छैक। कहीं सुनसान देखि कऽ उठा के नहि चल जाइ।'—जागेशर चिन्तित भऽ उठैत अछि। सोचैत-सोचैत मोने-मोन भगवती के गोहराबऽ लगैत अछि।' भगवती छथिन्ह, रक्षा करथिन।' जागेशर मोन के बुझबैत रहैए। फेर सँ हिसाब मिलबैत रहैए।

डेरा आफिस सँ दू किलो मोटर दूर पड़ैत छैक। आफिस लग मे डेरा भेटब अत्यन्त कठिन। भेटबो करैत छैक तऽ किराया जान स ऊपर। आधा

दरमाहा जँ डेरे मे लागि जयतैक तऽ भोजन आ' आन खर्च कोना चलतैक ? तेँ विवशता मे डेरा दूर राखऽ पड़ैत छैक। एहि सँ पहिने जखन ब्लाक' मे रहय तऽ आफिसे लग सटल डेरा रहैक। दुपहरिया मे खएबा लेल सभ दिन डेरा पर आबि गेल करए। बड़ नींक जँका ओहिठाम समय कटलैक। मुदा जखन तीन मास पूर्व सबडीविजनल टाउन मे बदली भऽ गेलैक तऽ परेशानी शुरूह भऽ गेलैक। डेरा तकबा मे परेशानी' बढ़ल मासिक खर्चक परेशानी बदलीक उल्लास के बिला देलकै। मुदा बदली तऽ बदलिए होइत छैक। के बदली रोकएबाक लेल पैरबी मे तरबा खियाबए, दाँत निपोड़ए आ' जेबी खलास करए ? ताहि पर सँ कतेक दिन लगतैक तकर कोनो ठेकान नहि छुट्टी लेला पर दरमाहा सेहो बन्द। दरमाहा नहि भेटतैक तऽ चारि प्राणीक बुतात कोना चलतैक ?—जागेशर सोचैत रहय। बदली काल मे एक बेर भेल रहैक जे ओहो जँ अनका जकां कमाएल रहितए। तऽ पाइ कौड़ी खर्च कऽ कए बदली रोकबा लितए। जेना ओकर आन संगी सभ कएने रहैक। मुदा मोन के बूझा लेलक। कतेक रास नियम, सिद्धान्त, आदर्श सभ हड्डी जँका कंठ मे फँसि गेल रहैक। ने उगलल होइक मे गीड़ल होइक। ई हड्डी तऽ तहिये सँ फसल छैक जहिया सँ नोकरी शुरूह कएलक। चाहियो के आब फसल हड्डी के नहि उगीलि सकैत अछि। आब तऽ हड्डियो मे माँसुक स्वाद भेटऽ लगलैक अछि। दस वरख सँ नोकरी करैत अछि। चाहितए तऽ खूब कमा सकैत छल। मुदा पहिने नजायज करबा मे डर होइक। होइक जे पकड़ा जायब तऽ नोकरी छूटि जायत, वदनामी होयत। लोक के बूझत ? आन संगी सभ कतबो उत. साहित करैक तैयो साहस नहिं होइ। बापक भरि जीवनक इमानदारी मोन पड़ैक। भैया क पैंघ ओहदा पर रहितो सिकस्त हाथ मोन पड़ैक। विद्यार्थी जीवनक अपन सप्पत् मोन पड़ैक। सभ के टुकुर-टुकुर कमाइत देखैत रहल। अपने नहि कमा सकल। आब तेँ इमानदारी क 'इमेज' तेना ने छान- पगहा कसि लेने छैक जे परिस्थितियो, परिवेशो कमाए नहि दैत छैक। आब बइमानी सोचि तऽ लैत अछि, कऽ नहि पबैत अछि। कहने रहैक ओकरे सनक एक सहकर्मी, हमरा सभ मोन सँ बेइमान लोक छी। कर्म सँ नहिं। ई आर

खतरनाक भऽ गेलैक। हमरा सभ सँ नींक ओ सभ जे नजायज करैत अछि, नजायज सोचैत नहि अछि। सोचने रहय जागेशर जे ओ मोनो सँ बेइमानी हटा लेत। मुदा से सोझ गप्प नहि रहैक। एहि स्थित मे बदली भेलैक आ' जागेशर के शहर आबऽ पड़लैक।

आफिसक बाद बाजार पड़ैत छैक। बाजार के बाद कोशी प्रोजेक्टक कालोनी आ तकर बाद पैंघ सन के सिमेंटक पूल। पूलक बाद आधा किलो मीटरक रस्ता आर बचि जाइत छैक। बाजार धरि तऽ चहल पहल रहैत छैक मुदा क्रमशः सुनसान भेल जाइत छैक रास्ता। कालोनीक बाद सभ दिन अन्हार भइये जाइत छैक। जँ कतहु-कतहु विजली क बल्ब लगलो छैक तऽ लाइनक कोनो ठेकान नहि। बल्बो छौंड़ा सभ ढ़ेपा फेकि कऽ फोड़ि दैत छैक अक्सर जागेशर के सभ दिन पूल पार करैत काल डर होइत छैक। सौंसे देह रोमांचित भऽ उठैत छैक। कहियो के पूल पर पांच-सातटा गुण्डा टाइप छौंड़ा सभ सेहो बैसल रहैत छैक। हँसी ठहक्का करैत, अबैत जाइत लोक के बोली मारैत, पिहकारी दैत। जागेशर सब दिन एहिठाम सँ मूड़ी झुका चुपचाप ससरि जाइत अछि। पूल लग आबि जागेशर देखैत अछि जे आइयो छौंड़ा सभ बैसल छैक। जोर-जोर सँ फिल्मी गीत गाबि रहलैए। बात-बात पर ठहक्का मारि रहलैए। जागेशर अनठा कऽ पूल पार कऽ लिअऽ चाहैत अछि। छौंड़ा सभक लग अएला पर कने डर होइत छैक। ओ आगू निकलि जाइत अछि। पाछू सँ सुनाइ पड़ैत छै। देखही रौ, माटिक मुरत कोना गुरकल जाइए। ताहि पर सभ जोर सँ ठहक्का लगबैत छैक। जागेशर डेग झटकारि कऽ आगू बढ़ि जाइत अछि। छौंड़ा समक ठहक्का सुनाइ दैत रहैत छैक। ओकरा होइत छै जे कियो पाछू-पाछू आबि रहलए। सौंसे देह सर्द भऽ जाइत छैक। मूड़ी घूमा पाछू तकैत अछि। एकटा कुकूर पछोर धएने छैक। जागेशर आश्वस्त होइए। मने-मन अपन भ्रम पर हँसी लगैत छैक। छौंड़ा सभक विषय मे सोचऽ लगैत अछि। ओकरा होइत छैक जे यदि ओ किछु जबाब देबाक चेष्टा करितै तऽ अनेरे झगड़ा भऽ जएतैक। ओ छौंड़ा सभ जेना हरदम

झगड़ा करबा लेल उतारू रहैत छैक। जागेशर के मोन पड़ैत छैक अपन संगी विश्वनाथक कहल गप्प। एहि छौंड़ा सभक मादे कहने रहैक जागेशर तऽ बिश्वनाथ बिहुँसैत जबाब देने रहैक 'जनै छही; एहि छौंड़ा सभक लीडर के छैक? ओही कालोनी क इन्जीनियरक वेटा। बाप जायज, नजायज पाइ कमेबा मे ब्यस्त रहैत छैक। आ बेटा दू नमरी पाइ पर गुण्डा-गर्दी करैत छैक। जागेशर के होइत छैक जे दू नभरी पाइ वला बापक बेटा सभ एकदम उच्छृंखल भऽ गेलैक अछि। फकरो, कखनो बेइज्जत कऽ दैत छैक। प्रभुता सम्पन बापक बरदहस्त एकरा सभ के असमाजिक बना देलकैए। किएक ने होइ? जाहि समाजक फेज गब्बर सिंह होयतैक, ओहि समाजक सभ्य नागरिक डरे केबाड़ बन्द कऽ कए घर मे नुकाएल रहबे करतैक।

जागेशर सोचैत-सोचैत मोन घोर कएने जखन डेरा लग पहुँचल तऽ दूरे सँ डेराक आगूमे भीड़ देखाइ पड़लैक।

पुलिसक गाड़ी आ' भीड़ के देखि ओ चौंकि गेल! करेजा धक्क सँ रहि गेलैक।' की बात थिकैक? किएक भीड़ लागल छैक? कथी लेल पुलिस अयलैक अछि? ओ सोचि कऽ चिन्ता सँ नर्भस सन भऽ जाइत अछि। झटकारि कऽ भीड़ लग पहुँचैत अछि। भीड़ के चीड़ि देखबाक चेष्टा करैए। जमीन पर एकटा युवतीक लाश पड़ल छैक। जीह निकलल, आंखि खुजल……। दरोगा लिखा पढ़ी कऽ रहलैए। पंचनामा तैयार कऽ रहल छैक। जागेशर नजरि उठा अपन डेरा दिस तकैत अछि ओसारा पर सीमा आ, पप्पू, गुड़िया ठाढ छैक भय सँ त्रस्त, एकदम सकदम……। जेना जागेशरक अएबाक प्रतीक्षा मे होइ। ओ भीड़ के छोड़ि डेरा दिस बढि जाइत अछि। दूनू बेटा-बेटी क हाथ पकड़ि कोठरी मे चल अबैत अछि। सीमा सेहो पाछू-पाछू आबि जाइत छैक। जागेशर बिछाओनपर बैसैत पुछि उठैत अछि—"के छिऐक ई मौगी? कोना मरि गेलैक? चेहरा तऽ परिचित सन बुझाइत अछि।'

"नहि चिन्हैत छिऐक? बगल बला ओकील साहेबक पुतहु छियैक। गड़ा

मे नूआ बान्हि कऽ छत सँ लटकि गेलैक। साले भरि पहिने तऽ बियाह भेलैक अछि, दू घंटा सँ कुहराम मचल छैक। लोक सभ फुसुर-फुसुर गप्प करै छैक जे दहेज कम भेटबाक कारणे सासु-ससुर आ' दिअर बड़ कष्ट दैत छलैक। भरिसक नहि सहल भेलैक तऽ आत्म हत्या कऽ लेलकैए।" सीमा अपना के संयत करैत उत्तर दैत छैक। जागेशर सीमा क मुँह ताकऽ लगैत अछि बौक जँका। सात बरखक गुड़िया आबि कऽ लपटि जाइत छैक—"पप्पा हमरा डर होइए। अहाँ कतऽ रही एतेक काल?' जागेशर के किछु उत्तर नहि फुड़ाइत छैक। ओ गुड़िया के अपन पेट सँ सटा लइए। टुकुर-टुकुर तकैत पप्पू क डेन पकड़ि कोरा मे बैसा लैत अछि। हमरा देरी भऽ गेल। दू दिन सँ आफिस मे इन्सपेक्शन चलि रहल छैक। जागेशर सीमा के देखैत बजैत अछि।

अहाँके तऽ सभ दिन देरी भऽ जाइत अछि। केहेन नोकरी अछि से नहि जानि? साँझ होइत देरी हमरा सभ के डर हुअऽ लगैत अछि। गुड़िया आ' पप्पू तऽ डरें साँझ क' बाद कोठरी सँ बाहर नहि निकलैत छैक। एहि मोहल्ला मे नहि रहि सकैत छी। बड़ डेराओन सन लगैत छैक।'

जागेशर के होइत छैक जे ठीक कहैत अछि सीमा। बीस दिन पहिने मोहल्ला मे जागेशर क' डेरा सँ पाँच मकान हटि कऽ साँझे डकैती पड़ि गेल छलैक। गृहस्वामी क' हत्या क' संग डकैत सभ किछु लूटि कऽ लए गेलैक। बम आ' बन्दूक दूनू चलल रहैक। पूरा मोहल्ला जेना हीलि गेल रहैक बम क' आवाज सँ। संयोग सँ छुट्टी क' कारणे जागेशर डेरे पर रहय। क्यो अपन घरसँ नहि निकललैक। डकैत सभक चल गेलाक आधा घंटा बाद पुलिस अएलैक। तखन लोक सभ केबाड़ खोलि अपन घर सँ बाहर निकलल। ओहि दिनुका डकैती आ अजुका ई घटना! युवती द्वारा आत्महत्या। ठीके ई मोहल्ला बड़ अशुभ छैक। 'मुदा कतऽ जाए?'—जागेशर सोचैत अछि। सभ मोहल्ला मे तऽ कम-बेशी यैह स्थिति छैक। पूरा मोहल्ला की, सभ शहर क' यैह स्थिति छैक। भिनसर के अखबार उनटला पर हत्या, डकैती, बलात्कार आदि क' समाचार सँ अखबार रंगल रहैत छैक। आइ कालिह एकटा आर खबरि अखबार मे बहुधा देखैत

अछि । 'दहेजक कारणे पुतहु क' हत्या, सासु-ससुर गिरफ्तार ।' कतऽ जाएत ? सभ ठामक सैह हाल छैक । कहि उठैत अछि, 'कतऽ जाएब ? सभ मोहल्ला क' तऽ यैह हाल छैक । ई सभ आब साधारण गप्प भऽ गेलैक । दोसर, आफिसलग मे डेरा क' किराया तऽ जान सँ ऊपर मँगैत छैक । पाँच सए, छओ सए टाका'''। एतेक डेरे क' किराया दऽ देबैक तऽ खाएब की ?'

"की हेतेक ? जीयब तखन ने खायब । अधे पेट खा कऽ रहब मुदा सुरक्षित रहब । एतऽ तऽ डरे कोनो दिन मरि जाएब । आइ भीड़ आ' लाश देखि कऽ गुड़िया आ' पप्पू क' चेहरा एकदम उज्जर भऽ गेल छलैक । आब ठीक भेलैए ।' सीमा गम्भीर स्वरें कहि उठैत छैक ।

आब भीड़ हटि रहल छलैक । दरोगा आ' पुलिस लाश कै पोस्टमार्टम लेल पठा बिदा भऽ गेल रहैक । जागेशर देखलक फेर सँ लोक सभ अपन-अपन डेरा मे घुसि रहल छैक । घर-घुसना लोक । गली एकदम सुनसान भऽ रहल छलैक ।

कहुखन के बगलबाला ओकील साहेब क' मकान सँ ककरो कनबाक स्वर आबि रहलैए । वातावरण आर भयानक भऽ उठैत छैक । सभ अपन-अपन कोठरी क खिड़की बन्द कऽ रहल छलैक । जागेशर सेहो उठि क' खिड़की क केबाड़ बन्द क' दैत अछि ।

केबाड़ बन्द कऽ जागेशर बिछाओन पर पड़ि रहैत अछि । कात मे अपन दुनू धिया-पूता के सुता लैए । सीमा चाह बनएबाक लेल चल जाइत छैक । जागेशर के होइ छै जे ई सभटा धन लेल बढ़ैत लिप्सा क कारणें भऽ रहल छैक । जेना-जेना लोक पाइ लेल बताह भऽ रहलैए तहिना अपराध बढ़ल जा रहलैए''' । आब तऽ पाइ लेल अपराध कम होइत छैक, पाइबला अपराध बेसी करैत छैक । पाइ लेल लोक सम्बन्ध सभकेँ नकारि रहल अछि । पाइ ! पाइ !! जागेशर के मोन पड़ैत छैक जे कोनो सुरक्षित स्थान पर डेरा लेल सेहो पाइ चाही । चाहे जतऽ सँ आबए । बिना पाइक लोक सुरक्षितो नहि

रहि सकैत अछि आ' पाइए असुरक्षितो बना दैत छैक । मुदा तत्काल तऽ जागेशर के पाइ क' व्यवस्था करैए पड़तैक । पूरा परिवार के भय सँ ग्रस्त नहि देखि सकैत अछि ओ ! मुदा कतऽ सँ अओतैक पाइ ? जागेशर के लगैत छैक जेना फेर सँ कंठ मे कोनो हड्डी अँटकि गेलैक अछि । ओ परेशान भऽ जाइन अछि'''''।



हेयरपिन

उर्मिला के ँ गाम गेना पाँच दिन भऽ गेलैक आइ। एहि पाँचो दिन चन्दरके ँ रातिमे ठीकसँ निन्न नहि भेलैक अछि। बियाहक आब बरख दिन भऽ गेलैए मुदा जहियासँ संग रहऽ लगलैक अछि उर्मिला, पहिले बेर ओकरासँ फराक भेलैए। दिन तऽ आफिसक चहल-पहलमे, फाइलक मन्थनमे बीति जाइत छैक मुदा राति…उफ्…। जनमारा भऽ जाइत छैक। आखिर कतेक उपन्यास पढ़त? टेपरेकार्डर सुनत? किछु कालक बाद माथ भारी भऽ जाइत छैक। देहमे एक अजीव प्रकारक सनसनी पैसि जाइत छैक। होइ छै बगलमे राखल तकियाके ँ चीरी-चोंत कऽ दी। करीटपर करौट फेरऽ लगैत अछि। मोन पड़ैत छैक उर्मिलाक माँसल सौन्दर्य। ओकर इतिहास-भूगोल। कहने रहैक बिहुँसैत, कनडेरिये देखैत ओहि राति—"की होइये गीड़ि ली? गीड़ि लिअऽ। चिबेबाक काज सेहो नहि पड़त एकदम एक्के बेर घोंटि लेब। आखिर एतेक अगुताइ कथीक अछि? हम पड़ायल जाइत छी?'

'पड़ायले तऽ जा रहल छी। एखन गाम जयबाक कोन तुक छैक? हमर कोनो परबाहि नहि! कोना रहब हम! गामक प्रति अचानक एतेक मोह किएल उपजल अछि? गाममे रही तँ तंग कऽ देलहुँ संग रहबा ले'। आब संगसँ तंग भऽ रहल छी। नहि?'—चन्दर कहि कऽ उर्मिलाक नाक ऐँठि देने रहैक। उर्मिला चन्दरक छातीक केशके ँ सोहरबैत जवाब देने रहैक, 'नहि से बात नहि छैक। माय. बाबूजी की कहताह? छओ मास भऽ गेल ऐतऽ अयना। एक बेर बीचमे खोज-पुछारी करबा लेल गेनाइ जरूरी बुझाइये। की कहताह सभ? बेटा संगे पुतहुओ निरसि देलक। आ नैहर सेहो गेना कतेक दिन भऽ गेल। बहीनके ँ बेटा भेला चारि मास भऽ गेलैक। कतेक चिट्ठी बिगड़ि कऽ लिखलक अछि। कने ओकरो देखि लेबैक। जल्दीय चल आयब। अहाँ

एकसर छोड़ल जाइ बला जीबो नहि छी।' चन्दर अनिच्छा सँ गाम जयबाक स्वीकृति देने रहैक। "जयबाक अछि तँ जाउ। मुदा एक सप्ताहसँ बेसी नहि। बूझब जे एक सप्ताह रात्रि जागरण सप्ताह छिऐक।' उर्मिलाके ँ हँसी लागि गेल रहैक। हँसैत चन्दरके ँ भरि पाँज पकड़ि लेने रहय। आ तकर बाद चन्दरक बढ़ैत हाथ. झुकैत देह आ…।

चन्दर सौंसे देहमे जेना विसपिपरी बुलऽ लगैत छैक। ओ फेरसँ पत्रिका उठा लैत अछि। आइ पत्रिकामे मौगी सभहक फोटो दिस ध्यान आकृष्ट होइत छैक। ओ गौरसँ निहारऽ लगैत अछि। आन दिन यैह मौगी सभ नहि पसिन्न पड़ैत रहैक। आइ आकर्षित करैत छैक। कोनो विज्ञापन मे रूपक प्रदर्शन करैत युवतीक चित्र। अर्धनग्न…देहयष्टि। चन्दर पत्रिकाके ँ पूरा नहि देखि पबैत अछि। पटकि ैत छैक जोरसँ। बिजली मिझा सुतबाक चेष्टा करैये। आगूमे कोनो बातपर बिहुँसैत उर्मिलाक चित्र ठाढ़ भऽ जाइत छैक। चन्दर फेरसँ किदन-कहाँदन सोचय लगैत अछि। सोचैत-सोचैत कखन आँखि लगलैक से नहि बुझलक ओ। दू बजे तक तँ ओहिना कछमछ करैत बितौने रहय। निंदमे सपना देखऽ लगैत अछि। केबाड़पर खट्खट भऽ रहल छैक। सपनेमे ओ केबाड़ खोलैत अछि तँ सामने उर्मिला ठाढ़ि छैक। ओ जल्दीसँ उर्मिलाके ँ कोठलीमे खींचि लैत अछि। आ…। चन्दरक निन्न टूटि जाइत छैक। केबाड़पर ठीके खट्खट भऽ रहल छलैक। ओ अंगैठीमोड़ करैत उठि बैसैत अछि। केबाड़ खोलि दैत अछि सामने दूध बाली ठाढ़ि छैक।

—'आइ जाइके रहलैए। तेँ सबेरे दूध पहुँचा देलीहे। ले लू मालिक।'

दूध वाली ओकर प्रश्न भरल आँखि देखि कहि उठैत छैक। चन्दर कखनो बाल्टी भरल दूध आ कखनो दूधबालीके ँ देखऽ लगैत अछि। दूध आ दूधबाली दुनू आइ नीक लगैत छैक। अफसोस होइ छैक। अफसोस होइ छै दूधबालीपर पहिने ध्यान किएक नहि गेलैक। सभ दिन खाली दूधे देखैत रहल ओ ठाढ़े रहि जाइत अछि। दूधवाली चन्दरके ँ विस्मयसँ देखैत आग्रह कऽ उठैत छैक—'जल्दी करू मालिक। हमरा फजिले गाम चल जाय के हइ। लाउ बर्त्तन।'

चन्दर किछु नहि सोचि पबैत अछि। की करी ? पयर नहि उठैत छै बर्त्तन अनबाक लेल। अनायासे कहि उठैत अछि, 'कने अपने देखही कतऽ बर्त्तन राखल छैक ओहि घरमे। राखि दही दूधक बर्त्तन ताकि कऽ। हमर मोन खराब लगैये।' दूधवाली निधोख भीतर चल अबैत छैक। बर्त्तन ताकऽ लगैत अछि। चन्दरक मोन बरिसाती नदीक पानि जकाँ किन्हेरमे मूड़ी पटकऽ लगैत अछि। बेहोश भऽ जाइत अछि ओ। खाली दूधवाली आ सुनसान देखा रहल छैक। ओ चट्ट सँ केबाड़ बन्द कऽ दोसर कोठलीमे पहुँचि जाइत अछि जाहिमे दूधवाली दूध राखि रहल छैक।

दूधवाली ओकरा टुकुर-टुकुर देखऽ लगैत अछि। चन्दरक विचारकेँ बूझि ओ डेरा जाइत अछि। डेरायल कहैत छैक, 'मालिक, हमरा जाय दियऽ। डर लगै हइ अहाँ सँ।' चन्दर बेहोशियेमे बुदबुदाइत दूधवालीकेँ कहि उठैत अछि, 'डर कथी के ? की हेतैक ? कोनो बात नहि। केओ ने बुझतै। तोँ निश्चिन्त रह।' चन्दर दूधबालीक हाथ पकड़ि जबर्दस्ती दू टा नमरी ठूसि दैत छैक। दूधवाली मुट्ठी खोलि रुपैयाकेँ देखऽ लगैत अछि। मूड़ी झुका दैत छैक। आब चन्दर बिहाड़िमे उधियाय लगैत अछि। बरखामे भीजऽ लगैत अछि। आर दूधवाली सोचऽ लगैत अछि जे एहि रुपैयासँ घर छाड़ल भऽ जयतैक।

जखनि चन्दर के होश होइ छैक तऽ दूधवाली केबाड़ खोलि कऽ निकलि गेल रहैत छैक। खूजल केबाड़ चन्दर के बरदास्त नहि होइत छैक ओ केबाड़क छिटकली लगा दैत अछि। बिछाओनपर पड़ि रहैत अछि। निंद भऽ जाइत छैक। जखन निन्द टुटैत छैक तँ दस बाजि गेल रहैक। मोन पड़ैत छैक आइ तातिल थिकैक। भरि दिन डेरे पर बितेबाक छैक। एकाएक भिनसुरका घटना मोन पड़ि जाइत छैक। एक क्षण लेल ग्लानि होइत छैक मुदा मोन के मना लैत अछि। आइ भिनसर केँ एकटा अनुभव कऽ बाथरूम दिस विदा भऽ जाइत अछि। करीब घंटा भरि नहाइत रहैत अछि। नहा कऽ जखन बाहर होइत अछि तऽ भूखक अनुभव होइत छैक। गैस पर दू टा अंडाक आम-

लेट आ' चारिटा टोस्ट सेक लैत अछि। खा-पीबि कऽ प्रसन्नताक अनुभव करैत अछि। हुलसल-फुलसल सन। मोन एकदम फ्रेश बुझाइत छैक। बिछाओनपर पड़ि पुनः रातिक बाँचल उपन्यास पढ़ऽ लगैत अछि। उपन्यास पढ़ैत-पढ़ैत फेर आँखि लागि जाइत छैक। जखन उठैत अछि तखन रौदक धाही कम भऽ गेल रहैन छैक। मुँह-हाथ धो चूल्हापर चाहक पानि चढ़ा दैत अछि। चाह पीबि इजी चेयर पर बैसि भिनसुरका अखबार उनटाबऽ लगैत अछि। भिनसरमे तँ अखबार पढ़बाक मौके ने लगलैक। अखबार-पढ़ैत-पढ़ैत मोन होइछै जे फोटो एलबम देखय। अपन आ' उर्मिलाक फोटो के निहारब एखन नीक लगतैक। फाटल फोटो के साटि फेरसँ फ्रेममे लगाबऽ चाहैत अछि। एलबम तकबाक लेल जखन बक्सा खोलैत अछि तँ बहुतरास चिट्ठी सभ ओहिमे राखल भेटैत छैक। ओ एलबमक संगे एकटा चिट्ठियो निकालि लैत अछि। पहिने चिट्ठोए पढ़बाक इच्छा होइत छैक। उर्मिलाक चिट्ठी सभ थिकैक। ओ एकक्षण ठमकि जाइत अछि। अनकर चिट्ठी नहि पढ़बाक चाही मुदा उर्मिला तऽ आन नहि छैक। ओ एक-एक टा चिट्ठी उठा पढ़ऽ लगैत अछि। अपना द्वारा उर्मिलाकेँ लिखल चिट्ठी सभ पढ़ि हँसी लगैत छैक। उर्मिलाक भाइ ओकर भाउज सेहो कैकटा चिट्ठी लिखने छैक। तेकरो पढ़ि जाइत अछि। देखैत छैक। आब चारि-पाँच चिट्ठी आरो बाँकी छै पढ़बाक लेल। होइछै एकरो पढ़ि जाइ। समय कटि जयतैक। ओ एकटा चिट्ठी उठा लैत अछि। पढ़ऽ लगैत अछि। एकटा अपरिचित पुरुषक चिट्ठी उर्मिलाक नाम ! 'के अछि ई ? कोना एहन चिट्ठी लिखबाक साहस कयलक अछि ? केहेन सम्बन्ध छैक उर्मिलाक संग एकरा ?' चन्दर सोचैत अछि। क्रोध भऽ अबैत छैक। क्रोधमे फेरसँ चिट्ठी पढ़ऽ लगैत अछि चिट्ठी पर दू मास पहिलुका तारीख देल छैक।

प्रिय उर्मिला,

जहियासँ तोहर बियाह भेलौक अछि, तोरासँ भेंट नहि भेल अछि। एहि महा शहरमे खटैत-थकैत जखन घड़ी भरि लेल दम लैत छी तँ तोँ मोन पड़ैत

रहैत, छें। नेनेसँ हम तों एक संग खेलायल छी झगड़ा कयने छी, रूसल छी। कतेक नींक रहैक ओ राति-दिन। आब तँ एक सपना सन बुझाइछै।

इच्छा अछि जे तोहर शहर आबि तोरासँ भेंट करी। एहि उदास जिनगीमे किछुओ तँ खुशीक संचार होयत। आशा अछि तों सभ कूशल हेबें।

तोहर
रमानन्द

चिट्ठी पढ़ि चन्दरक माथ घूमऽ लगैत छैक। सौंसे देहमे क्रोध कुसियारक पतलोइ जकाँ पजरि जाइत छैक। 'उर्मिला क प्रेमीक चिट्ठी छिऐक ई। हमरा प्रति ओकर प्रेम एकदम फसि छैक। ओ ककरो अनका प्रेम करैत अछि ! दुनू गोटय एक दोसरा के नेनेसँ....। हमरा संग बियाह एकटा नाटक आ व्यवहार, एकटा अभिनय, देखबामे तँ कतेक निश्छल आ समर्पित बुझाइत अछि। मुदा...? की उर्मिला चरित्रहीन अछि? ठीके कहैत छैक त्रिया चरित्रम्...।' चन्दरक सोचबाक शक्ति जेना खतम भेल जा रहल छैक। अपनाकें बिसरि जाइत अछि। मोन रहैत छैक तऽ खाली उर्मिला आ उर्मिला संग बिताओल एक बरख..., ओ व्यस्त भऽ जाइत अछि। चिट्ठी आ एलबम के बक्सामे पटकि दैत छैक। आब एलबम देखि कऽ की करत? लगैत छैंक जेना चारू कात सँ कोनो तीर सन-सन करैत ओकर माथकें बेधि रहल छैक। छटपटाइत ओ कोठरीक चक्कर लगबऽ लगैत अछि। बरदास्त नहि होइ छक तँ डेरामे ताला लगा बाजारमे बौआय लगैत अछि। मुदा दग्ध मोन आर दग्ध भेल जाइत छैक। आपस घुरि जाइत अछि डेरा दिस। घुरैत काल होटलेमे खेनाइ खा लैत अछि। आर दवाइक दोकानसँ दू टा निंदक गोली कीनि लैत अछि। 'आइ बिना गोलीक निन्द नहि होयतैक।' चन्दर के होइत छैक। 'ओ डेरा चल अबैत अछि। निन्दक गोली खा बिछान पर पड़ि रहैत अछि। किदन कहाँदन सोचैत-सोचैत आँखि भारी लागऽ लगैत छैक। कखन निन्द भऽ जाइत छैक नहि बुझैत अछि। केबाड़क खट्खट सुनि निन्द टुटि जाइत छैक। होइ छैक जे फेर आइ दूधबाली आयल छैक।

प्रतिशोधक आगिमे फेरसँ किछु निर्णय कऽ लैत अछि। निर्णयक संग केबाड़ खोलैत अछि तँ सामनेमे उर्मिला ठाढ़ि देखाइत छैक। ओ एक क्षण लेल एकदम अकचका जाइत अछि।—'ऐं अचानक ! कोना आबि गेलहुं? के संगे आयल छथि?'--कोठरीसँ बाहर तकैत चन्दर पूछि बैसैत अछि।

—'अहाँ दुआरे गाममे मोन नहि लागल। भेल जे कोना खाइत-पिबैत होयब। रतुका गाड़ी सँ विदा भऽ गेलहुँ, रमानन्दक संगे। पाइ भजल नहि छलैक। चौकपरसँ भजाक रिक्शा बलाके देबऽ लेल गेल अछि। आब आबि रहल होयत।' उर्मिला चन्दरक हाथ पकड़ि घरमे प्रवेश करैत कहलकैक। उल्लाससँ उर्मिला फुदकि रहल छलि। मुदा चन्दर रमानन्दक नाम सुनि चोंकि गेल। चिट्ठी मोन पड़ि अयलैक। क्रोध उठि गेलैक। उर्मिलाक उल्लास अनसोंहात लगलैक। रोकि नहि सकल अपनाकें। तुरन्ते पूछि देलकैक, 'के रमानन्द? हम तँ नहि चिन्हैत छिऐक ओकरा? केहेन लोकक संग अहाँ एकसरे एतऽ धरि अयलहुं अछि। की सम्बन्ध अछि ओकरासँ?' उमिला चन्दरकें देखि आ' ओकर भाव बूझि हतप्रभ भऽ गेल। मोने-मोन चन्दरक सोचब पर हँसी लगलैक। मुदा संयत स्वरें उत्तर देलकै, "केहेन सम्बन्ध? केहन लोक? रामानन्द हमर पिसियौत भाइ छी। अपना सभहक वियाह सँ दू मास पूर्वे ओकरा कलकत्तामे नोकरी भेटि गेलैक। छुट्टी नहि होयबाक कारणे बियाहमे नहि आबि सकल। अहाँ देखनहि नहि छिऐक तँ चिन्हबै कोना?" उर्मिला मुसकुराइत चन्दर दिस देखऽ लागल। ओकर अगुताइ पर हँसी लगलैक मोने-मोन। मुसकुराइत मुँह हाथ धोबाक लेल बाथरूम दिस बिदा भऽ गेल ओ। बाथरूम जयबाक हेतु जखन उर्मिला दोसर कोठरीमे आयल तँ अचानक एकटा चमकैत वस्तुपर अनायासे नजरि चल गेलैक। अरे ई तऽ हेयरपिन थिकैक। एम्हर चन्दरकें उर्मिलाक जबाब सुनि भकचक लागि गेल रहैक जेना। बूझेलैक जेना सम्पूर्ण शरीर कोनो आँचसँ पिघलि रहल छैक। अपनाकें पिघलैत मोम सन अनुभव कयलक ओ। ओ ठाढ़ नहि रहि सकल धम्मसँ कुर्सी पर बैसि रहल। आब उर्मिलाक स्वर कान मे सुनाइ

दिअऽ लगलैक, 'ई ककर हेयरपिन थिकैक ? हम तँ हेयरपिन नहि लगबैत छी तखन ई ककर छिऐक ? एहि ठाम कौना आबि गेलैक ?' चन्दरक कान जखन नीक जकाँ उर्मिलाक प्रश्न सुनलक आ' चन्दरक आँखि जखन उर्मिलाक हाथमे राखल हेयरपिन देखलक तँ चन्दरक देह मोमसँ पाथर भऽ गेलैक। उर्मिला जोॅर-जोरसँ चन्दरसँ जवाब माँगि रहल छलैक मुदा चन्दर ने आब प्रश्न सुनि रहल छल, ने प्रश्न देखि रहल छल। ओ तँ पाथरक मुरुत बनि गेल छल। पाथरक मुरुत किछु बाजि नहि सकैत छैक। मुदा उर्मिला हाथमे चमकैत हेयरपिन चिचिया रहल छलैक""।



अन्तिम शह

बिशेशर जखन मुनहारि साँझ के झूरझमान भेल टीशन सँ घूरल तऽ मुनिगे गाछ लग ओकर स्त्री ठाढ़ि रहैक। लाठीक खट्-खट् सुनि अकानि कऽ पुछलकै, 'की बौआ नहि अएलइ ?"—आ अपन चारूकातक जमीन केँ देखि लेलक जेना कतहु सँ कुशेशर उगि औतैक। मुदा धरती तऽ आब स्याह भऽ रहल छलैक। विशेशर सोझे दलान पर जा कऽ बैसि रहल। ओकरा बुझेलैक जेना कोनटा लग बहुरियो ठाढ़ि छैक। एकटा निशांस छोड़ि कऽ ओ बाजल; 'चारि बजियो गाड़ी चल गेलै मुदा ओहू सँ बौआ नहि उतरल तऽ राति होइत देखि हम टीशन सँ विदा भऽ गेलहुँ।' निराशा क एक टिक्कड़ चारू महर बरसि गेलैक। कोनटा सँ चूड़ीक झन-झन शब्द सुनि बिशेशर आशाक एक क्षीण बिजुरी छिटकेबाक प्रयास केलक, 'भऽ सकैए रतुका नौबजिया गाड़ी सँ आबए। दूरकः बात छै। पटना सँ अबैमे कत्ते मोश्किल होइ छै। चिट्ठीमे तऽ अजुके दिन लिखल रहै'। एहि बात पर सभ अपन-अपन मोन केँ पतिया लेलक। सभ मने बिशेशर, कुशेशरक बाप, कुशेशरक माए आ' ओकर स्त्री फुलेशरी मने बिशेशरक बहुरिया।

आइए अबैया रहैक कुशेशर के पटना सँ। आइ तीन बरख सँ ओ पटनामे रिक्शा चला रहल अछि। एहि छोटछीन अशक्क परिवारक एक मात्र सहारा। गाममे बोनि कऽ पहिने खर्चा चलबै छल, मुदा जखन एहि सँ पेटो भरैमे आफति आबि गेलैक आ' मालिकक कर्जा ओहिना जख-तख पड़ल रहि गेलैक तऽ तगादा सँ तबाह भऽ ओ रमचरना संगे पटना चल गेल। पटना जा कऽ ओ रिक्शा चलबऽ लागल। भरि दिन रिक्शा चलाबए आ' राति केँ चौधरीक ढाबा पर जा रोटी खा कें पड़ि रहय। हरेक मासमे बिशेशर नामे रुपैया पठा दैक जाहि सँ घरक थोड़ेक खर्चा सेहो चलैक आ' फूलबाबू ओहि

ठामक सूदि सेहो भरि आबए बिशेशर। मुदा तैयो करजाक पाइ खतम नहिए भेलैक, द्रौपदीक चीर जकाँ बढ़ले गेलैक। बिशेशर के आइयो ओहिना मोन छैक जखन पन्द्रह बरख पहिने अपन बेटी धनमंतीक बियाहमे दू सए रुपैया आ तीन मोन धान फूलबाबू मलिक सँ करजा लेने रहय। ओहि समयमे कुशेशर छोटे रहैक। भरि दिन गाछी-बिरछी घुमैत रहए। छौंड़ा सभक संगे गुल्ली डंडा खेलए। पिंडस्याम, चौरस मुँह आ सुगठित बढ़ैत देह कें देखि बिशेशरक छाती सूप सनक भऽ जाइक, दुर! एखने ने खेलाइ-धुपाइक बएस छैक। कोन चिन्ता बेगरता छैक एकरा। हमरा जाबे शक्क अछि ताबे खूब निफिकिर भऽ कूदि-फानि लिअए।' कहियो के अखाड़ा पर सेहो जाए लागल कुशेशर। ओकर ई क्रम बढ़िते गेलैक। ओहि बेर सुकरातीमे जखन धरमपुर क पहलमान कें कुशेशर माटि चटा देने रहए तऽ कत्तो खुशी भेल रहैक बिशेशर दूनू वेकती के। 'गामक नाम राखि लेलक कुशेशर। चाबास, खूब सरों खेलाइए।'—गिरहथ जखन कुशेशर कें पीठ ठोकने रहथीन्ह तऽ बिशेशरक आँखि मे नोर आबि गेल रहैक। अपन जुआनी मोन पड़ि आएल रहैक। थोड़ेक दिनक बाद गिरहथक कहला पर कुशेशर हुनके ओहिठाम महींस पर रहि गेल रहए। मुदा ओकरा मोन नहि लगैक बान्हल-छान्हल रहै में।

बिशेशर गिरहथक ओहिठाम हरबाही करए आ' नूनो-रोटी खा कऽ अपन गुजर कइए लिअए। मुदा बेटीक बियाहमे तऽ ओ अशक्क भऽ गेल। फूलबाबू क ओहिठाम सँ औंठा पर करजा उठबैए पड़लैक। सेह करजा तँ देह तोड़ि के राखि देलकै। कनबो मेहनति करए तथापि नहिए सधा सकल। ताहिपर कुशेशरक वियाहमे तऽ थोड़ेक मूर आर जोड़ा गेलैक। कुशेशर आब छहर पर माटि काटए लेल सेहो जाए। करजाक चिन्ता सँ बिशेशरक देह टुटए लगलैक, ताहि परसँ जखन तेसरा साल ओकरा दम्माक बेमारी धऽ लेलकै तखन तऽ दमो टूटि गेलैक। भरि दिन दलान पर बैसि कऽ उकासी कैल करए। कोनो भरिगर काज नहि कैल होइक। सभटा भार असघर कुशेशरक कन्हा पर

आबि गेलैक। फुलेशरी जखन दुरागमन कऽ के आएल कुशेशरक घरमे, तऽ ओकर किशोर मोनक सभटा सपना दर्पना के माटिक वर्त्तन जँका टूटए लगलैक। कनिएँ दिनक बाद सँ लाज-धाख छोड़ि हवेली-महरमे काज करबाक हेतु जाए पड़लैक। लोकक पछुअबैत आँखि होइक जेना ओकर पीठ के चीरने जा रहल छैक। एक राति कहबो केलकै कुशेशर कें जखन ओ छहर पर सँ घूरल रहए, 'हमरा कोनादन लगैए हबेली-महर जाइत। मनसा सभ कोना आँखि गुड़ेर कें तकैत रहैए जेना काँचे चिबा जाएत।' मुदा कुशेशर हँसि कऽ ओकर गप्प के टारि देने रहैक। पाँजमे लऽ कऽ मात्र सान्त्वना आ' सोचल रंगीन सपनाक दू-चारि टा गप्प कहि सकलैक। आखिर की करत कुशेशर? की ओ सभटा नहि बूझै छै? मुदा चुप्प रहऽ पड़ैत छैक ओकरा। आखिर ककरा-ककरा सँ झगड़ा मोल लेत? गाममे इज्जत-आबरू बचा कें रहबा लेल चुप्पी सभसँ अचूक दबाई रहै छै गरीब-गुरूआ लेल। अन्तमे जखन सभक कष्ट नहि देखल गेलै आर करजाक बोझ ओहिना माथ पर पड़ल रहलैक तऽ ओ अपन घर-दुआरि छोड़ि के चल गेल पटना।

फुलेशरी के एखनो प्रतीक्षारत् रातिमे एतेक दिनक बादो कुशेशरक जेबा कालक आँखि मोन छैक जाहिमे एकटा विश्वास आ' भविष्यक सपना चूबल जाइत रहैक। फुलेशरीक माथ के चूमि एतबे तऽ कहि सकलै ओ, 'आब हम परदेश जा रहल छी, फूलो। सभ दुख-दरद के दूर करै लए। अहाँ बाउ, माए के देखबन्हि'—एहि सँ आगू किछु नहि बाजि सकल रहए, बकौर लागि गेल रहै मने। भरि राति यैह सभ किदन-कहाँदन सोचैत रहि गेल फुलेशरी। निंद तऽ एतेक दिन ओकर भागे संगे छलैक। ओकरा लग कहाँ अएलै कहियो। भोरमे जखन विदेश्वर मंदिरमे घंटा बाजऽ लगलै तखन जा कऽ कने अलसाएल ओ। मुदा थोड़बे कालमे सासु आबि कऽ झकझोरि देलकै। आ' कहि गेलै जे, 'बौआ आबि गेल छै। अखने अएलइ हे। भरि राति टीशन पर रहलै।'—तऽ फुलेशरीक आँखिमे नोर आबि गेलैक। तीन बरखक प्रतीक्षा आइ आँखिमे काँट जेंकाँ गड़ए लगलैक।

दलान पर लोक सभ जूटि रहल छलैक। कुशेशर शहरक गप्पसप्प कहि रहल छल अपन दोस-महिम सभ केँ। बिशेशर तऽ खुशीक मारे खन आँगन जाए आ' खन बहरी आबए। एहि बीचमे कुशेशर किरायाक रिक्शा चलौनाइ छोड़ि देने छल। अपनहि रिक्शा कीनि लेने रहए। अपन दोस-महिमक लग 'लेक्चर' झाड़ि रहल छल कुशेशर, 'हमरा सभक एगो 'यूनियन' छैक। कोनो बातपर हड़ताल' कऽ दै छैक तऽ पूरा शहर केँ रिक्शा बन्द भऽ जाइत छैक। कियो जोर-जुलुम नहि कऽ सकैए।'—बिशेशर केँ भेलैक जे ओकर बौआ शहरमे रहि कऽ बेस बुझनुक भऽ गेलैए। ऐन-मेन गिरहथक बेटा सन गप्प करै छै। ओ मुसकिया देने रहय।

बेरखन जखन दूनू बाप-पूत फूलबाबूक ओहिठाम करजा चुकाबऽ गेल रहए तऽ फूलबाबू मिसरजी संग शतरंज खेलाइत रहथि। कुशेशरक प्रणामक उत्तरमे फूलबाबू शहरक हालचाल पुछलथीन्ह ओकरा सँ। हाल-चाल कहि कुशेशर हुनकर आँगामे रुपैया राखि बाजल, 'आब बहीमे छेक लगा दिऔ मालिक! कागत आपस कऽ दिऔक।' फूलबाबू एक शह दऽ कनडेरिए तकलन्हि कुशेशर दिस आ' रुपैया गनि कहलथिन्ह, 'मुदा सभटा रुपैया कहाँ छौ? एखन तऽ आर बाँकी हेतौ तोरा ओहिठाम। तखन कागत कोना आपस कऽ देबौक? फूल बाबूक आँखि चश्माक भीतरमे स्थिर भऽ चुकल छल। कुशेशर ओहिना स्थिर स्वरेँ बाजल, 'आब तऽ सूदे-मूरक दूना सँ बेशी दऽ चुकलहुँ, मालिक। ताहिपर सँ करजा आब दस बरख सँ उपर...।' —कुशेशरक वाक्य पूरा हेबा सँ पूर्वे फूलबाबू क्रोधाएल स्वरेँ बाजि उठला, "तैँ तों हमरा कानून सिखबऽ लेल अएलेहें? की रौ बिशेशरा, एही दुआरे तोरा ओहेन बेगरतामे हम पाइ देने रहियौक जे आइ तोहर बेटा सँ कथा सुनऽ पड़ए हमरा?" बिशेशर के किछु नहि फुरा रहल छलै की उत्तर दिअए मुदा नहुँए सँ बाजल, 'नहि, मालिक, अहीं सभक तऽ आसरा अछि। मुदा ई तऽ......'—'तऽ की फेर हमर काज नहि पड़तौ तोरा?' फूलबाबू गुम्हरि उठलाह। एहिबेर कुशेशर बाजि उठल, 'किएक ने काज पड़त मालिक!

अहाँक काज हमरा पड़त, हमर काज अहाँके पड़त। जखन एकठाम रहै छी तऽ काज पड़बे करत। समाजेमे ने सभटा होइ छै। मुदा आब जुलुम के समय बीति गेलै। हमरो सभ केँ जीबाक अधिकार दिअऽ मालिक। आखिर कहिया धरि हम सभ पिसाइत रहब?' कहि प्रश्नबाचक दृष्टि सँ देखऽ लागल कुशेशर। फूलबाबू किछु नहि बाजि सकलाह, चुप्पे रहि गेलाह। बदलैत समयक सत्य आइ हुनका समक्ष ठाढ़ भऽ गेल रहय। मिसर जी ताबत अन्तिम शह देलन्हि आ' बाजि उठलाह, 'एकटा आर शह आ' मात। अहाँ हारि गेलहुँ फूल बाबू।' फुलबाबू केँ किछु नहि फुरलन्हि की करी। चुपचाप काठबला बक्सा सँ कागत निकालि बिशेशरक हाथमे दऽ देलथिन्ह। दूनू बाप-पूत बिदा भऽ गेल। मुदा शतरंज ओहिना बिछल रहल। फूलबाबू फेर सँ खोरहा पर गोटी राखऽ लगलाह।

रातिमे जखन कुशेशर केँ फुलेशरी सँ भेँट भेलैक तऽ ओकर पैघ-पैघ आँखिमे तकैत बाजल ओ, 'आब अहांके हबेली-महर नहि जाए पड़त, फूलो।' आ' कसि केँ अपन छातो सँ सटा लेलकै ओकरा...।

एकटा मुस्कुराइत आंखि

सँझुका टहलान लेल गामपर सँ विदा भऽ जखन पीचरोड पर अयलहुँ तँ पूब भर सँ अबैत डाक्टर बशिष्ट नारायण अपन चिरपरिचित मुसकानक संग भेटि गेलाह। ओना संझूका गोष्ठी सभ दिन हुनके क्लीनिकमे जमैत छैक। रस्तेमे हुनकां सँ भेंट भेलापर प्रसन्नते भेल। साइकिल सँ उतरि पैरें चलैत कहलनि 'एकटा बुझलहुँ, अहाँक मास्टर साहेब अपन गामेक हाइ स्कूलमे हेड-मास्टर भऽ गेल छथि, बेस प्रतिष्ठा छनि हुनका गाममे।' हम किंचित चौंकि गेलहुँ। आखिर डाक्टर साहेब हमरा मास्टर साहेबके एतेक 'सिरियस' कोना लऽ लेलनि ? एक दिन प्रसंगवश अपना अतीतक पन्ना उनटबैत हम हुनका समक्ष मास्टर साहेबक चर्चा कऽ बैसल रही। हमर ठोर पर अनचिन्हार मुसकीक एक झलकी पाबि डाक्टर साहेब पुनः अपनाकें स्पष्ट कयलनि, 'अरे, अहींक मास्टर साहेब, जिनका अपने एकान्त क्षणमे 'फील' करैत छी। हमरा हँसी लागि गेल, डाक्टर वशिष्ट नारायण माने मास्टर साहेबक स्मृतिपरसँ धूरा हटेबाक प्रयास कऽ रहल छलाह। एकाएक लागल मास्टर साहेब ओहिना हाफ सर्ट ओ धोती पहिरने हमरा लग ठाढ़ भऽ गेल छथि आ गीत स्वरमे कहि रहल छथि, 'हमरा बिसरि नहि जायब, मनू ! हमरा सौंसे देहमे रोमांच भऽ उठैत अछि। मास्टर साहेबकें बिसरेबाक चेष्टा कइयोके हम नहि बिसरि पबैत छी। मास्टर साहेब कोना की हमरा भेटि गेलाह से भनहि मोन नहि रहय मुदा हुनका संग बीतल हरेक क्षण हमरा ओहिना मोन अछि जेना डाक्टर वशिष्ट नारायणक क्लीनिकक रास्ता मोन अछि।

भरिसक हम षष्टम् वर्गमे पढ़ैत रही तँ मास्टर साहेब बी० ए०मे एडमीशन लेबाक हेतु गामसँ आयल रहथि। एके प्रान्तक एवं बाबूजीक एक परिचितक बालक रहलाक कारणें ओ हमरा डेरामे रहलाह। ओहि समयमे हम

आ बाबूजी मात्र दुनू बाप-पूत रहैत रही ओहि पँच सन डेरामे। माँ, हमर बहीन सुनीता, छोटभाइ टनू सभ आब गामेमे रहैत छल। घर आँगन ने विलटि जाय ताहि दुआरे। बहीनक बियाह-दान सेहो होयबा लेल रहैक ओहि बरख। हँ, तऽ मास्टर साहेबकें ऊपरका महलक एक कोठली देल गेल रहनि। ओहीमे ओ थोड़-बहुत वस्तु जातक संग रहथि। गामसँ आनल जनता स्टोव पर भानसो करथि। पहिने हम हुनका दिस कोनो कान बात नहि देने रही, बड बोड़ टाइपक लोक बुझायल रहथि। हरदम गुमसुम मुड़ी झुका कऽ सीढ़ी परसँ उतरनिहार लोक। कखनो टोकबो नहि कयने छलाह एखन धरि, तखन हमहीं किएक उपकड़ि कऽ बाजऽ लेल जैतहुँ। कोनो आकर्षण हुनका प्रति नहि उत्पन्न भेल रहय हमर किशोर मोनमे। मुदा अचानक एक दिन बाबूजी अपन कोठलीमे बजौलनि साँझके। मास्टर साहब सेहो बैसल छलाह। हम प्रश्न-वाचक मुद्रामे बाबूजी दिस देखने रहियनि, 'मनू ! ई अहाँक आइसँ मांस्टर साहेब छथि। साँझ कऽ हिनकासँ पढ़ल करब सब दिन। जे प्रश्न सभ हो से हिनका कहबनि, उत्तर लिखा देताह ई।' बाबूजीक आदेश सुनि पहिल प्रश्न यैह उठल रहय जे ई तऽ हरदम मूड़िये गाड़ने रहैत छथि, तखन की मास्टरी करताह ? हिनका बूते मारलो पार नहि लगतनि, नीके रहतै। किंचित बदमासी सँ भरल मुस्की हमरा ठोर पर हुलकी दऽ देने रहय। एहि प्रकारे एक अपरिचित, गुमसुम युवक हमर मास्टर साहेब बनि बैसल रहथि। सँझुका पढ़ाइक क्रम प्रारम्भ भऽ गेल छल। पढ़ेबा काल हुनक चेहरा एकदम सपाट रहल करनि। कखनोकऽ पढ़बैत-पढ़बैत ओ कतहु दूर ताकल करथि तऽ हमरो ध्यान हुनक दृष्टिक पछोड़ धऽ लिअए मुदा किछु नहि पाबि बैरंग घुरि आबय। आब हमरा मास्टर साहेबक चेहरा दिस एहि सभ क्षणमे ताकब नीक लागऽ लागल छल। आइयो हुनक हेरायल-हेरायल सन, शून्य दिस तकैत दृष्टि आ मुँहसँ निकलैत धाराप्रवाह वाक्य सभ हमरा मोन परि रहल अछि। हमर अनटोटल प्रश्न सभ पर मास्टर साहेबक ठोर पर जे हँसीक क्षीण रेखा आबि जाइन से बादमे हमरा आकर्षित करऽ लागल रहय।

एक दिन गुड्डी उड़ेबाक हेतु छत पर जाइत रही तँ कतहुँसँ बाँसुरीक धुन सुना पड़ल। एम्हर-ओम्हर ताकला पर बूझि पढ़ल रहय जे स्वर मास्टर साहेबक कोठलीसँ आबि रहल अछि। मास्टर साहेब विछावन पर वैसल, आँखि मूनि तन्मय भऽ बाँसुरी बजा रहल छलाह। एक गुड्डी उड़ायब बिसरि गेल रही ओहि क्षण, मास्टर साहेबक नवीन कोमल रूप हमरा बाल मस्तिष्क मे उभरि आयल रहय। लागल जेना बाँसुरी बजबैत काल हुनक आँखिसँ दहो-बहो नोर बहि रहल अछि। हमर मोन कोनादन करऽ लागल। गुड्डी उड़ायब छोड़ि चल आयल रही अपन कोठलीमे। 'आखिर मास्टर साहेब किएक कानि रहल छलाह; किएक बाँसुरी······?' हमरा किछु नहि फुरि रहल छल। ओहि साँझमे जखन सभ दिन जकां मास्टर साहेब पढ़बऽ लेल आयल रहथि तऽ हमरा फेर हुनकर बाँसुरी बजबऽ बला रूप मोन पड़ि आयल रहय एकाएक। हमर नेनपन हाबी भऽ गेल छल हमरा ऊपर। हम लजाइत कहि बैसल रही; 'मास्टर साहेब, बाँसुरी हमरा बड़ नीक लगैत अछि, हमरा बजायब सीखा देब? —ओ चौंकि गेल छलाह एक क्षण लेल मने कोनो चोरी पकड़ा गेल होइन। लगले भरिसक पहिल बेर हुनकर चेहरा थोड़ेक कठोर भऽ उठल छल, "नहि मनू अहाँ बाँसुरी जुनि सिखू। अहाँक बाँसुरी नहि सिखबाक चाही। पढ़बामे मोन लगाउ।" हम चुप भऽ गेल रही। मुदा मास्टर साहेबक ई बात हमरा एक्को रत्ती पसिन्न नहि भेल छल। जखन अपने बाँसुरी बजा सकैत छथि? क्रोधो भऽ आयल रहय। मास्टर साहेब भरिसक लक्ष्य कऽ गेल छलाह तेँ हमरा बहटारबाक लेल कविताक अर्थ बूझबऽ लागल रहथि। ओकर बाद मात्र एक बेर छोड़ि कऽ कहियो मास्टर साहेबकेँ बाँसुरी बजबैत नहि देखलि-यनि, साहसो नहि भेल पुछबाक जे, 'अहाँ बाँसुरी बजायब किएक छोड़ि देलिऐक?

हमर परीक्षा लगिचा गेल रहय। बाबूजी, सुनीता बहीनक वियाह लेल इंतजाम-बात करऽ गाम चल आयल रहथि। हम परीक्षाक कारणे मास्टर साहेबक संग ओतहि रहि गेल रही। बाबूजी मास्टर साहेबके हमर ताक-हेर

करबाक भार दऽ गेल रहथिन। एकाएक एक दिन हम दुखीत भऽ गेल रही। एम्हर-ओम्हरक पानि आ मेहनतिक कारण हमरा 'मम्स' भऽ गेल रहय। ज्वर बेश भऽ जाइत छल। मास्टर साहेब डाक्टरक ओहिठामसँ दबाइ आनथि आ अपने हाथे खुअबैत छलाह। दिनमे तीन बेरके। कालेज गेनाइ सेहो ओहि समय छोड़ि देने रहथि मास्टर साहेब। एक राति इंजे-क्शनक दर्दसँ हमरा निंद नहि भऽ रहल छल। लगैत छल जेना हजार हजार बिसपीपरी एके संगे बाँहिमे काटि रहल अछि। मास्टर साहेब दर्दसँ कछमछ करैत देखि पुछलनि, "मनू नींद नहि भऽ रहल अछि की? बड़ दर्द कऽ रहल अछि, मास्साहेब।' हम एतबे कहि सकल रही, एकदम जोरसँ कनबाक इच्छा भऽ आयल रहय। हमरा लागल रहय हमर उत्तर सुनि मास्टर साहेब कोठलीसँ बाहर भऽ गेलाह अछि। थोड़ेक कालक बाद जखन ओ अयलाह तँ हुनका हाथमे धूरा भरल बाँसुरी रहनि धोतीसँ धूराकेँ पोछि ओ बाँसुरीके ठोर पर राखि लेने रहथि। हम चुपचाप समटा देखि रहल छलहुँ। मास्टर साहेब बाँसुरीपर कोनो उदासी लय उठा चुकल छलाह। मुदा आइ तक ओहिना मोन अछि जे वाँसुरी हम बेसी काल तक नहि सुनि सकल रहीं, मात्र दू-तीन मिनट। तकर बाद हमरा निंद भऽ गेल रहय। भरिसक एक दर्द दोसर दर्दक मलहम भऽ गेल छल।

आब हम सभ क्लीनिक पहुँचि गेल रही। डाक्टर बशिष्ट नारायण हमर गुम्मी के तोड़बाक प्रयास करैत कहलनि, 'अहाँक मास्टर साहेब एहि बेर दुर्गापूजामे नाटकक आयोजन कयने छलाह, बेश सफल रहलनि। गाममे सार्व-जनिक कार्य सभमे सेहो खूब रुचि लैत छथि।" हमरा भेल मास्टर साहेब पूर्ण रूपसँ अपनाके बदलि लेलनि अछि भरिसक। कतेक अयाससँ परिवर्तित कयलनि अछि ओ अपनाके। ओहिना मोन अछि जखन एक दिन जेठक दुपहरियामे हुनकर कोठली गेल रही तऽ ओ पसेनासँ तर बतर भेल अयनाक समक्ष नाटकक डांयलाग बाजि रहल छलाह। हम आश्चर्यसँ हुनका देखिते रहि गेल रही। मास्टर साहेब हमरा देखि कहने रहथि, "मनू, काल्हि नाटक भऽ रहल छैक। प्रो० बनर्जी जबर्दस्ती हमरा चाणक्यक पार्ट दऽ

देलनि अछि। बनर्जीकेँ हमर चेहरा बड़ पसिन्न पड़लनि अछि नाटकक रोल
लेल।' कहि मास्टर साहेब एकटा उन्मुक्त हँसी हँसि देने रहथि। भरिसक
पहिले बेर एहन ठहक्का हम सुनने रही मास्टर साहेबक। मुदा क्षणेमे ओ
गम्भीर भऽ उठल रहथि। एक रहस्यमय स्वरमे कहने रहथि, "मनू, जिनगीमे
अभिनयक बड़ महत्व छैक। डेग-डेग पर लोकके कतेक तरहक नाटक खेलाय
पड़ैत छैक। अभिनय अहाँ जरुर सिखू! हम अहाँकेँ डायरेक्ट करब।'
आ' मास्टर साहेब अपन आदत अनुसार शून्य दिस ताकऽ लागल रहथि।
हमरा ओहि क्षण किछु नहि बुझबा जोगर भेल रहय जे मास्टर साहेब की
कहि रहल छथि, कोना हमरा डायरेक्ट करताह? मुदा तकर बादसँ जे
हमर बीस बसंत गुजरल अछि ताहिमे प्रत्येक पतझड़क बीच मास्टर साहेबक
चेहरा आ हुनक अभिनयक पाठ नव पल्लवक सृजन करैत आयल अछि। सभ
दर्द, अपमान, सुख-दुखक बीच कोना पासपोर्ट टाइप चेहरा राखऽ पड़ैत छैक
तकर डायरेक्शन हमरा मास्टरे साहेबसँ भेटल अछि। एकटा रहस्यक बात
ई रहल अछि जे हम सभ दिन एक वेलीक चलनिहार लोक रहल छी। एकदम
अनिययंत्रित लोक! कने आँखि झपकल की नहि सभ बान्ह-छेक के तोड़ि
भागि जाय बला मनुक्ख। सत्य पूछी तँ अराजकता जेना हमर नस-नसमे
सन्हिआएल अछि। गार्जियनो एहि खातिर हमरासँ परेशान रहल छथि। मुदा
सौभाग्य वा दुर्भाग्य कही सभ मोड़पर, शहर आ गाममे जतऽ थोड़बो दिन
बितौने छी एकटा मास्टर साहेब सनक लोक हमरासँ अनायास सटि जाइत
जाइत छथि। हमर बौआइत डेगकेँ लीक धरा दैत छथि। मतलब ई जे
मास्टर साहेब कोनो रूपमे सदिखन हमरा संग रहलाह अछि। हरेक मीलक
पाथर लग हुनक चेहरा आ मुसकुराइत आँखि हमरा इशारा दैत रहल अछि
दिशा निर्देश करैत रहल अछि। मुदा जीवनमे सभठाम मीलेक पाथर नहि
होइत छैक। दू मीलक पाथरक बीच महक रास्ताक सेहो वेश महत्व छैक
एही रास्तामे हमर मोन हमरा पर हाँबी भऽ जाइत अछि आ हम बौआय
लगैत छी।

बी०ए०क बाद मास्टर साहेब आगू पढ़बा लेल ओतऽ नहि रूकि सकल रहथि। भरिसक घरक असगरूआ मास्टर साहेब आगूक पढ़ाइ स्थगित कऽ देवापर विवश भऽ गेल छलाह। ओ गाम चल आयल रहथि। हुनका बिदा होयबाक काल हमर आँखिमे नोर भरि आयल रहय। ककरो मृत्युसँ बेशी संताप हमरा ककरोसँ जीवनमे फराक भेलापर होइत अछि। मुदा जे भेटल अछि से कोना हरदम संगे रहत? मास्टर साहब सेहो लागल बेशी भावुक भऽ उठल रहथि, "मनू, खूब पढ़ब-लिखब मोन लगाके पैघ लोक होयबाक अछि अहाँके। मुदा हमरा बिसरि नहि जायब। एक बेर हमर गाम जरूर आयब, आयब की ने? हम किछु स्पष्ट उत्तर नहि देने रहियनि ओहि क्षण। मास्टर साहेब अनायासे जे पैघ लोक होयबाक शुभकामना हमरा दऽ गेल रहथि सैह भरिसक फेरसँ आइ तक हुनका संग भेँट नहि होयबाक कारण रहल अछि। हमरा संग यैह विडम्बना रहल अछि जे हमरासँ जकरा जतेक आशा रहलैक अछि तकर पूर्ति हम आइ तक थोड़बोमे नहि कऽ सकलियैक अछि। सभ बेर गाछ खसबा काल हम नीचाक डारि पकड़ैत रहलहु अछि, मुदा एक दिन ओ डारि हमर हाथसँ छूटि जायत रहल अछि। क्रमशः हम जड़ि दिस बढ़ल जा रहल छी। फुनगी दिस निर्मिमेष तकैत लागि रहल अछि जे आखिर कोन पैघ लोकक बोर्ड लगाके हम जाइ मास्टर साहेबक गाम। मास्टर साहेबक विशाल हृदयसँ निकलल ई शुभकामना शब्द हमर पैरमे जंजीर जकाँ लपटि गेल अछि। हुनकर गाम रहबाक सूचना पबियौके हमरा कोनो प्रसन्नता नहि भेल। हुनका सँ भेंट बड़ महग अछि से एखन खूब जोरसँ हम अमुभव कऽ रहल छी। लगैत अछि जे यदि मास्टर साहेब अनायासो कोनो रस्ता-पेड़ामे भेंट भऽ जयताह तऽ हम भीड़क अढ़मे अपनाकेँ नुका लेब। हुनका आगूमे नहियेटा जा सकब।

डाक्टर वशिष्ट नारायण एक रोगीकेँ निपटेलाक बाद पुनः हमरा दिस साकांक्ष भऽ गेल छथि। डाक्टर साहेबक आँखि हमर चेहरामे उठैत- खसैत भावक प्रत्येक अक्षरकेँ नोट कऽ रहल अछि। हमरा नींक जकाँ बुझल अछि

डाक्टर वशिष्ट नारायण रोग आ भाव के पकड़बामे सिद्धहस्त छथि। ओ अकस्मात पूछि बैसैत छथि, "मास्टर साहेबक ओहिठाम चलब, हुनकासँ भेँट करबाक लेल ?" हमरा किछु नहि फुड़ा रहल अछि कां उत्तर दियनि हम हुनक प्रश्नक। जानि के उत्तर नहि दैत छियनि कने सुनबे नहि कयने हो। अपन हृदयमे उठैत बिहाड़िके शांत करबाक तथाकथित प्रयासमे हम डाक्टर साहेबपर एक प्रश्न दागि दैत छी, "अहांके बाँसुरी बजबऽ अबैत अछि डाक्टर साहेब हुनक नकारात्मक उत्तर सुनि हम कहि उठैत छी "अहाँके बाँसुरी जरूर सीख लेबाक चाही"। डाक्टर साहेब बौक जकाँ हमर मुँह दिस तकिते रहि जाइत छथि आ हम चोट्टे क्लीनिकसँ बाहर भऽ जाइत छी। लगैए एकटा मुसकुराइत आँखि हमर पछोड़ धऽ लेलक अछि फेर मास्टर साहेबक कोनो रूप...।

□

खौंझ

रामनारायण जखन डेरासँ बहराएल तऽ ओकरा ई नहि बूझल रहै जे ओ कतऽ जेबाक लेल बहराएल अछि। गेट सँ बाहर भऽ ओ रोड पर चल आएल दूरहि सँ चौक क चहल-पहल ओकरा आकर्षित केलकै। चौक दिस बढ़ैत ओ पानक दोकान लग आबि ठाढ़ भऽ गेल। पान क दोकान पर पान खाइत अएना मे अपन मुँह देखब ओकरा नीक लगैत छैक। दोकान पर आने दिन जकां आइयो भीड़ रहैक। ओ पान लेल कहि एकटा अठन्नी दोकान-दार क सोंझा मे फेंकि देलक। पान खएबा सँ पूर्व पाइ फेंकबाक हिस्सक ओकरा शुरूहे सँ छैक। पान, जर्दा खा ओ दोकानदार सँ चून मंगलकै। ओ पान मे सभ बेर चून नहि खाइये। जखन मोन खँउझाएल रहैत छैक कोनो बात पर मात्र तखने टा खाइये। खँउझ आ' चून मे जेना कोनो संगतियारे रहैक। ओ ओनहिं मोन मुसकुरा उठल। तखनहि ककरो हाथ ओकर पीठ पर पड़लै। ओ घूरि कऽ तकलक तऽ गामक बाल संगी रविशेखर रहैक। हाथ मे बैग लेने ठाढ़। ओकर मुसकी कने आर पसरि गेलैंक।

"की रौ शेखर ! कोना के ? कखन अएलें ?"—भाइ बस सँ उतरि सोझे तोरे ओतऽ आबि रहल छी। बोर्ड आफिस मे किछु काज अछि। कहिया सँ तोहूँ कहैत रहें जे पटना नहि अबैत छैं।' रविशेखर ओकर हाथ जोरसँ दाबि देने रहैक। "चल-चल। डेरा दिस चली। कतेक दिनसँ तोरा संग भरि पोखगप्प नहि भेलए।" रामनारायण अपन स्वरमे उत्साह अनलक। मुदा अपन संगीक संगे तुरन्त डेरा दिस घुरैत ओकरा मोन पड़लै जे ओ किएक कोन अबस्था मे डेरा सँ निकलल रहय ? बुझेलैंक जेना तारकोलक सड़क पर टूटा फुलही थाड़ी एक्कहि बेर हाथ सँ छूटि कऽ खसि पड़ल होइक। झनाक......। जखन डेरा मोन पड़लैंक तऽ पत्नी सुधीरा मोन

पड़लैक। दूटा बेटा आ' एकटा बेटी मोन पड़लैक। ओकरा भेलैक जे एखनो छोटका पिंकू फर्श पर पड़ल कानि रहल हेतैक। सुधीरा विछाओन पर सीरक सँ मुँह झँपने बेर-बेर करौट फेरि रहल हेतै। तीनू धिया-पूता सकदम भेल भयसँ त्रस्त एक दोसरा के टुकुर-टुकुर मुँह तकैत हेतै।

अपन घनिष्ठ मित्र रविशेखरक संग डेरा दिस बढ़ैत रामनारायणक दूनू पएर मे जेना उक्खड़ि बन्हा गेल रहैक। रामनारायण अपन पएर घिसिया रहल छल।

एतबा काल मे शेखर की सभ कहि रहल छलैक, ओ सुनियो कऽ नहि सूनि रहल छल। डेराक फाटक लगीच आएल तऽ अचानक बिजलीक लाइन कटि गेलैक -फक्क……। समूचा अन्हारे-अन्हार पसरि गेल रहए।

'ओह आफति भेल। एखने लाँइनो के कटबाक छलैक। आब गेलैए तऽ नहि जानि फेर कखन आएत।' रामनारायण विदविदाइत फेरसँ खउँझा उठल।

'राजधानियोक सैह हाल छैक। गाभ-घर,दिस तऽ बिजलीक स्वीच छूना कतेक दिन भऽ छाइ छै। मोनो नहि अछि कहिया बत्ती जरल रहए। डेराक केबाड़ बन्द छलैक।

रामनारायण केवाड़ पर हाथ सँ चारि-पांच बेर ठक-ठकीलक। मुदा कोनो उत्तर नहि। ओ अकानि कऽ सुनऽ चाहलक। सभ चुपचाप-निशब्द। रामनारायण आरो जोर-जोर सँ केवाड़ के पीटऽ लागल। भेलैक जे सभ तामस एहि केवार पर उतारि दी। मुदा हाथ मे चोट लगलैक। तखनहि भीतर सँ छिटकी खुजबाक ध्वनि सुनलक।केवाड़ के ठेलि कऽ देखलक ओकर स्त्री दोसर कोठली दिस बढल जा रहल छलैक। सउँसे घर अन्हारे-अन्हार रहैक। ओ कोठली मे प्रवेश कऽ गेल रहए। रबिशेखर इजोतक प्रतीक्षा मे बाहरे ठाढ रहल। जाबत घरि लालटेमक इजोत नहि पसरलैक, गुम्मी पसरल रहैक। रविशेखर जखन कोठली मे प्रवेश कएलक तऽ लालटेमक मद्धिम इजोत मे एकटा खाट आ' दूटा फोल्डिंग कुर्सी राखल देखलक। ओ बैग के नीचा राखि कुर्सी पर बैसि रहल। रामनारायण कपड़ा बदलऽ लागल रहए।

तोहूँ कपड़ा बदलि ले। एटीज भऽ कए बैस बड़ गर्मी छैक।, रविशेखर सेहो बैग सँ लूंगी निकलि पहिरऽ लागल। कपड़ा बदलि क जखन दूनू संगी बैसल तऽ रामनारायण जबकाह वातावरण के दूर करबाक प्रयास मे पूछि बैसल, 'आब कहऽ गामक हाल-चाल ? तोहर दोकान ठाठ सँ चलि रहल छइने ? रविशेखर एकटा पँघ निसांस छोड़लक।

'मोटा मोटी गामक समाचार ठीके-ठाक, कहबाक चाही। मुदा हमर दोकान बन्द भऽ गेल भाइ।'—''ऐं से कोना ? केहेन नींक जँका तऽ चलैत छलह। तखन बन्द कोना भेलह ? रामनारायण के अजगुत लगलैक। एतेक दिन धरि अपनो सँ नींक शेखर के बुझैत आयल छल। शेखर कहि रहल छलै; गाम मे की दोकान-दौरी चलैत ? सभटा उधारिए मे पार अपनैती मे कसि कऽ पाइ असुलबो मुश्किल। ताहि परसँ एतेक टा परिवारक भरण-पोषण……। हारि थाकि कऽ दोकान बन्द कऽ देलियैक। तोंहीं सभ नीक छें। ने घाटा ने दाही-जरती....।, शेखर एकटा कठ हँसी हैसाबाक प्रयास केलक। राम नारायण सेहो अपना पर हँसि कऽ चाहक ओरियाओन मे लागि गेल।

आशा क अनुरुपे ओकर स्त्री मुँह झांपि कऽ पड़ल छलैक। तीनू नेना सेहो सकदम। कोनो आंदकक छाँह मे टुकुर-टुकुर तकैत। रामनारायण सांस जेना गरम भऽ उठलैक। ओ छोटका पिंकू के कोरा मे उठा चुम्मा लेलक। पिंकु सान्त्वना पाबि बाप दिस ताकऽ लगलैक। रामनारायण सुधीरा दिस तकलक। फेर सँ खँउझी उठलै। ओ बाजि उठल; किएक एना पड़ल छी ? देखू तऽ ई सभ कोना सकदम भेल अछि। एहि अबोध नेना सभक कोन दोष जे छटपिटा दैत छियैक। क्रोध हमरा पर आ' झाड़ि दैत छियैक एकरा सभ पर ? ओ अपन पत्नीक देह डोला देलक 'उठू आब। कने दू कप चाह बनाउ। गाम सँ शेखर आयल अछि।

शेखर आयल अछि तऽ हमरा की ? चाह ताह एखन नहि हैत। हमर

माथ फाटल जाइए। चक्कर दऽ रहल अछि। सुधीरा सूतले सूतल लोहछि कऽ जबाब देलकै। रामनारायण के बड़ क्रोध भेलैक। भेलैक जे देवाल सँ माथ फोड़ि लिअए, जोर-जोर सँ चिकड़ए लागए। मुदा नहि जप्त केलक अपना के। भनसा घर दिस विदा भेल। निश्चय केलक जे अपनहि चाह बना लेत। स्टोव के झमारि कऽ देखलक, तेल छलैक। स्टोब लेसि कऽ केतली ताकऽ लागल। सोझां मे सुधीरा आबि कऽ ठाढ़ भऽ गेलैक। "दूध नहि छैक।

—'की भेलै दूध? चाहो जोकर नहि छैक। रामनारायण बिन तकनहि पूछि बैसल। उत्तर मे मूड़ी झुकौ नहि सुधीरा केतली उठा लेने छल।' नेबो अछि। नेबो बला चाह बना दैत छी। फेर एकटा चुप्पी पसरि गेल। सुधीरा दाबले थएरे पानि अनबाक लेल ससरि गेल रहैक।

रामनारायण कोठली मे घुरि आयल। रविशेखर एकसर बैसल-बैसल बोर भऽ गेल रहए जेना। ठोर पर मुसकी साटि रामनारायण पुछलकै, "आब सुना? एहि बेरूका दशमीमे नाटक भऽ रहलैए की नहि?"

"हँ नाटक क तैयारी तऽ भऽ रहलैए। मुदा आब को हेतैक नाटक? मुण्डे-मुण्डे मतिभिन्ना। सभक अपन भिन्नेँ बथान छैक। कियो मेहनति नहि, करत छैक। दू टा नाटक खेलाएत की नहि अपना के बड़का एक्टर बूझऽलागत। नाटक खेलाइत रही अपने सभ""। आ कि नहिं? शेखर अतीत क पन्ना पढबाक चेष्टा कएलक।

आह। सभटा खतम भऽ गेल-नोन तेलक पाँछा। आब तऽ ने पलखति होइए, ने ओहन उमंग अछि। समयक बाढ़ि मे सभटा दहा-भसिया गेल। बांचल रहि गेल खर-पात घास-फूस सनक जिन्दगी। सभ फूल सुखा गेल। अछि, भाइ। रामतारायण बेश गम्भीर भऽ उठल छल। दूनू संगीक बीतल अतीत कंठपूतरी जकां नाचऽ लगलैक आँखिक सोझा मे। कठपुतरी नचैत रहलै....।

'चाह बनि गेल'। पत्नीक स्वर आयल रहैक भीतर सँ।

—भाइ, नेबो क चाह पिया रहल छियह। हमरा नीक लगैए। स्वास्थ्यो क हिसाब सँ नेबोक चाह उत्तम"'।

—'हमरो नीक लगैए। मुदा एहि मे सभ वस्तुक कम्बिनेशन' बड़ माने रखैत छैक। जेना, कने चीनी विशेष मात्रा मे चाही नेबो बला चाह मे। 'शेखर अपना दिस सँ संतोष दिअऽ चाहलक अपन मित्र के। मुदा; चाह मे चीनी कम पड़ल रहैक। ई गप्प ने शेखर बाजल रहए आ' ने रामनारायण . फाइत चाहक संग गप्पक पेटारा खुजलैक तऽ खुजिते चलि गेलैक। बीच मे राम नारामण भीतर जा कऽ देखि आएल रहए। सुधीरा भोजन बनएबाक व्यवस्था मे जुटल छलैक। रामनारायन के खुशी भेलैक।

एकटा बड़का बोझ माथ पर सँ हेंठ भऽ गेल रहै। जेना...। पत्नीक प्रति अनुराग उमड़ए लगलैक। ठीके कहैत अछि सुधीरा। ओ बेसी खर्चीला अछि। अनट-बनट मे पाइ के फुरं कऽ दैत अछि। पाइ कें जोड़ि कऽ नहि खर्च करैए। कोनो स्थायी काज नहि कऽ पबैए। स्थायी बस्तु जात नहि कीनि पबैय। सभटा पाइ एम्हर ओम्हर मे खर्च भऽ जाइत छै। ओना महानगर मे खर्च बेसी होइत छै।' ओ सोचैत रहल आ, गप्पक गुलछर्रा उड़ैत रहलैक। उड़ैत-उड़ैत महगी रानी के फांसि लेलक आश्रमी झंझटि"'गृह कारज नाना जंजाला।

अपन इमानदारी पर मोहित स्वरें बाजि उठल रहए रामनारायण —। बुझलह भाइ। आर किछु इच्छा नहि अछि। खाली अपन परिजन लोक संग भाइ-बन्धु संग बिना कोनो झंझटि कें खा-पीबि सकी। सत्कार कऽ सकी सभक। कियो हमरा सँ उपेक्षित फील नहि कऽ सकए। किछु पाइ-कौरी मास मे बचि जाय तऽ सोन मे सुगंधि। मुदा से नहि होइए। तेसर सप्ताह मे रेलगारी पर चल अबैत छी। कहुना कऽ जोड़ि-जोड़ि कऽ चलाबऽ पड़ै ए....। सदिखन चिन्तातुर बनल रहैत छी। —कने आर बेसी पाइ भेटिते। तोरा तऽ बुझले छह, हम ऊपरि पाइ नहि कमाइत छी।

रविशेखर केँ मोन पड़लैक जे ई मास क तेसर सप्ताह छियैक ···· ···। ओह ¡ एखन नहि अएबाक चाहैत छल। मुदा आब की कऽ सकैय। बोल भरोस दिअऽ लागल रहए ओकरा। ओकर इमानदारीक स्तबन करऽ लागल रहए। समाज मे ओकरा सन गनल-गूथल लोकक गप्प कहऽ लागल रहए। परोपकार क महिमा-बखान करऽ लागल रहए। रविशेंखर ई बूझैत छलै जे ई सभ गप्प आर आगि मे घीक काज करतैक। आर जरऽ लागत ओकर बाल संगी। मुदा एहि आगि मे पानि तऽ नहि ढारल जा सकैय। ई धधरा तऽ जतबे उठैत ततबे मोनके आर शान्ति भेटतैक। एहि शांतिक प्रयास मे रामनारायण किछु उम्मीद कऽ पुनः भनसा घर दिस गेल। ओकर प्रवल इच्छा रहै जे अपन संगी के किछु नीक निकुत खुआबय।

'की सभ बना रहल छी ? पहिल बेर आयल अछि शेखर कने दालि सेहो बना लेब। रामनारायण बेस कोमल स्वरें पत्नी के आग्रह कएलक।····

सुधीरा चुप्पे रहलैक हँ, नहि किछु नहि बजलै। एहना स्यिति मे स्वभाविक रुपे रामनारायणक मोन खऊझाए लगलैक अहाँ सँ तऽ गप्पो करव कठिन। किछु कहवो मुश्किल। सदिखन मोन खिन्ने रहैए। दू बोल बजवो करब से नहि ?

'की बाजू ? स्टोव मे तेल कम छैक। कहुना कऽ सोहारी-तरकारी भऽ जायत। मटिया तेलक इन्तजाम कऽ दिअऽ तऽ हमरा की ? दालियो बना देब सुधीरा कनेक जोर सँ जबाब देने रहैक।

रामनानायण घड़ी देखैत बाजल, "आब दस बजे कतऽ भेटत तेल ? जे करब से करू। मुदा जोर सँ नहि बाजू। शेखर की कहत ? रामनारायण अपन स्वर के संयत राखबाक प्रयास केलक। खाली सोहारी-तरकारी। दूधो दही नहि। अच्छा, काल्हि देखल जएतैक। कोनो ब्यवस्था करब।" सोचिकऽ ओ कोठरी मे घुरि आयल। रविशेखर ओहिना मुँह पर हाथ देने बैसल फेर सँ रंग विरंगक गप्पक टिपकारी दिअऽ लागल रहय रामनारायण। एतबे टा घर मे कोनो गप्प छपित राखब मुश्किल। सभटा सुनैत रहल हेतैक शेखर। की हेतै ताहि लेल ? संगिए छी की ने ?' अपना के मोने मोन

बुझौलक ओ खएबाक काल सेहो उचती-मिनतीक संग अपन अभावग्रस्तता के झँपबाक प्रयास केलक।

रविशेखर लेल सुतबाक ब्यवस्था मे मसहरीक अभाव खूब जोर सँ खटकलै एक्केटा मसहरी रहैक। दूनु घर मे एकटा मसहरी सँ कोनो काज चलतैक ? विजलियो निपत्ता। पांखि ठाढ कएने पंखा लाज सँ जेना कठौत भऽ गेल रहैक। निन्न नहि हेतैक शेखर के आइ। बेचारा के मच्छर तंग कऽ देतैक —एहि गुनधुन मे पड़ल पुनः अपन मित्रक कोठली मे पहुँचल। सुधीरा पढि रहल छलैक विछाओन पर मसहरी लगाकऽ...... कोनो किताब ···। धिया पूता सभ निन्न मे भेर फोंफ काटि रहल छलैक।

"एकरा सभ के खुआ नहि देलियैक ? ; पत्नी के दुलार सँ बांहि दाबैत पुछलैक। सुधीरा करोट फेर ओकर दिस घूरि गेल आ अपन पति के हियासि के देखलक भरि आंखि। कोना निन्न हेतन्हि अहांक संगी के ? लाइनो कटले छै। मसहरी लेल कहैत-कहैत अकच्छ भऽ गेल छी। किएक हमरा गप्पक मोजर देब अहां ? बुझै छियै जे कियो ने कियो गाम-धर सँ अबिते रहैत अछि घर मे एकटा मसहरी सँ आब काज चलऽ वला अछि नै···" पत्नी कहि उठल रहैक। पहिने तऽ रामनारायण केँ विश्वासे नहि भेलैक। पत्नी क समुद्र सन गहीँर आँखि मे तकलक —कोनो ब्यंग नहि। कोनो उपलब्ध नहि। ओकर मोन जुड़ा गेलैक।

"की करबै ? आइ कहुना कष्ट सहि लेत ओ। काल्हि चौधरी सँ पैंचो उधार लऽ कए मसहरी किनबे टा करब। बेइज्जत भऽ जाइत छी।" रामनारायण दृढ़ स्वरे कहलकै। मोन पड़ए लगलैक सँझुका गप्प। लोहछि केँ कहल अपन पत्नी के मुखाँ आ' बताहि शब्द। क्रोध मे ओ राक्षस भऽ जाइए। आफिस सँ अयलाक बाद ओकरा कोनो अभाव अभियोग नहि सोहाइत छैक। पुरुषत्व पर पड़ल चोट सहन कऽ नहि कऽ पाबैए। अपन नपुंसक स्थितिसँ सहजहि क्रोध भऽ जाइ छै। जेना ओ कहुखन के सोचि लैत अछि। एहिमे सुधीराक की दोष छै ? समये एहन भऽ गेलैए। चीड़ी-चोत भेल कपड़ा सँ

कतहु देह झांपल होइ। ओ मुसकिया कऽ पत्नी दिस तकलक। ओकरा पँजिएबाक प्रयास केलक।

"छेड़ू, इ की कऽ रहल छी ?" कहैत सुधीरा अपना के रामनारायणक अंक पास सँ मुक्त कऽ लेलक।' 'एकटा बात कहै छी। पचास टाका हम बचा कें रखने छी। अहाँ काल्हि कहुना एकटा मसहरी कीनि आनू।" सुधीरा कहि रहल छलै। रामनारायण क खौंझाएल मोन जेना पिछरऽ लगलै। अपनहि घाम सँ नहा उठल ओ। स्नेह सँ पत्नी क गाल पर अपन कँपैत ठोर राखि देलक कि भक्क दऽ विजली चल आयल रहैक। सगर कोठली दुधिया इजोत सँ नहा उठलै। सुधीरा लाजसँ मुड़ी घुमा लेने रहए। दोसर कोठलीक सीलिंग फैन चलबाक ध्वनि ओ एतऽ सँ साफ सुनि रहल छल। शेखर के आब निन्न भऽ जएतैक। ओ सोचलक....।



शिवशंकर श्री निवास

- दक्षिणा
- अपन बुत्ता
- धार आ मनुक्ख
- परिस्थिति
- एकटा डेग लैत जिनगी

दक्षिणा

"दवाइ-तवाइ स' किछु नै हेत' कोनो तांत्रिक स' देखबहक ।"

"घरवालीक माथमे चक्कर दै छह आ बेटाक दवाइ करबैत-करबैत थकलह, हुउ हम कहब' कोनो प्रयोग छह ।"

"हमरा त' कहबाक अइ जे डीह बदलि लय । तोहर कोन ? तोहर बाबूओ के एत' कोन नीक रहलनि ? चारि टा सन्तानमे तोंही त' एकटा टन्ना बचलहुँन ।"

"हे हमरा बुझाइ'ए कोनो दुष्ट आत्माक चक्र छह।"

"कोनो ज्योतिष स' देखाब ।"

"धुर दाइ-माइक किरदानी छन्हि, कोनो तांत्रिकसँ देखाबथु ।"

सुनैत-सुनैत काशीक मोन विखिन्न भ' उठै । की कर'ओ ! किछु नै फुराइ जे-जे केओ ओकरा एहन बिचार दै तकरा मादे सोचय । आन खन दुष्टइ-ए करैत रहै छै मुदा एखन जेना केहन हित । मोन खौंझा उठै, मुदा अपनाकें रोकि राखय । कखनोकें सोचय जे यदि ई सभ करबो करत त' कोना क' क' सकत ? तांत्रिको कत' भेटतै ? मोन उद्विग्न भ' जाइ । लोक सभ पर तामस होइ जे एते तरहक बात किए कहै छै ? एकटा ज' सभ कहितै त' करबो करैत । एक त' बेटा दुखित छै दोसर लोक आर मोन घोर कएने रहै छै । ओह ! कखनो कें होइ छै सभटा छोड़ि छाड़ि क' दूर भागि जाइत, जत' केओ नै भेटतै !

मथा हाथ ध' क' धुरखुरमे ओङठल । सोचय की करी ? घरबाली बच्चा कें कोरामे लेने उदास भेल बैसलि छलै । काशी बच्चा दिस तकलक आ फेर पत्नी दिसि, पुछलकै—"आइ केहन हालति छै ?"

केहन रहतैं, बड़ दस्त होइ छै।—"कुहड़ैत घरवाली कहलकै।

मोन वीदीर्ण भ' गेलै। मिलमिलाइत सन बाजल—"केहन रोग भेलै एकरा से नै कहि।"

गामक डाक्टर स' ल' क लहेरियासराय तकक डाक्टर स' दबाइ करा क' रहि गेल। जेना रोगकेँ कोनो सुनबाहि-ए नहि !

केओ कहै—"हउ राँचीमे बच्चाक नीक डाक्टर छै। फुदै बाबूक नाति केँ देखब' ल' गेल छलियनि। आब एकदम ठीक छन्हि।

"हम त' कहब' पटना जाह, ओत' हास्पीटलमे नहि सी० पी० सिंहक प्राइ-वेट क्लीनिकमे भरती क' दहक। सभटा ठीक भऽ जेतह। काशी सोचलक लोक अपना मोने एकरा नीके कहैत हेतैं। मुदा एहि सभ स' एकरा अपन लाचारी पर तते ने आक्रोश होइ छै जे...। ओना कत' जायत। कतौ जायत त' पाइ चाहियैं। डाक्टरो सभ विचित्रे छै। कते तरहक दवाइ ! ओह, कतौ जाँचमे किछु निकलै छै त' कतौ किछु ! एना किए होइछै से नहि कहि जेना लोक तहिना डाक्टर।

कखनोकेँ होइ छै आल इण्डिया मेडिकल इन्स्टीच्यूट ल' जइतिअइ। मुदा सभमे पाइ...। गरीबी सभटाकेँ मचोड़ि क' राखि देने छै ! की करत ? सभटा सोचियो क' किछु नहि क' पबैत अछि। टकटक देखैत रह' कनैत रह'।

"की होय-ए अहाँ के ? ओना छाती किए दबने छी ?"—घरवालीकेँ पूछलक।

'छाती धरधराइए' आ कखनो कऽ तते जोर स' दर्द भ' उठै-ए जे'''।'

"ओह ! की करी ?"—फेर माथ पकड़ि लेलक काशी।

"अहाँ लोकनिक केहन कर्म भेल जे हमर भेलहुँ। नीक स' दवाइ'''।"

—बकोर लागि गेलै काशी के।

घरवाली अपन मूड़ी उठा घरवला दिस तकलक किछु घरवाला के बोल-

भरोस देब' चाहलक, मुदा नै किछु कहि सकल। भेलै ज' किछु बाज' लागत त' जोर सँ कना जेतैं। मुदा दुनू आँखिक नोर गाल पर ढरकि अयलै।

काशी घरोवालीक गाल पर नोरक टघार देखलक त' मोन आर कचोटि उठलै मोनकेँ थीर करैत सान्त्वना देब' लागल—कनै किए छी, कनला सँ की हयत ?

थोड़े काल ने वैह वाजि सकल ने यैह।

"सभ कहै-ए कीदन सभ। रामवचन छै पूवारि टोलमे से ओइ आङन वाली काकीकेँ कहै छलनि जे किए ने कोनो तांत्रिक सँ देखबै छै। जाउ साँझ मे पठा दीअऽ। विसनगंजमे बड़ नीक तांत्रिक अयलाह हे। कते गोटयकेँ मुइले मुइले बचौलथिन्ह हें ! से आबह, हम जेबै संगे—" आर्द भेल घरवाली काशी के कहि गेलि।

'धुर, तांत्रिक....!

"अहाँ के एहिमे की लगै'ए ? विश्वास करबै तखन ने।"

काशी किछु नहि बाजल।

घरवाली आ घथार' लगलै। मोन ओआय लगलै। टूट' लागल। लोकक उपदेश मोन पड़लै। हृदय चुराइत बूझेलै। आ बेटाक ममत्व !

साँझमे रामवचनकेँ संग क' क' विसनगंज गेल। रामवचन भरि रस्ता तांत्रिकक महत्ता मे विभिन्न कथा कहैत गेलै। काशी सभटा सुनैत भगवान केँ गोहरबैत ओत' पहुँचल।

भीतर सँ केबाड़ खुजलै। दुनू गोटय भीतर गेल।

धूनी जरैत छलै। एकटा बड़ी टा त्रिशूल गाड़ल जइ पर पाँच-छः टा रुद्राक्षक माला लेपटायल आ त्रिशूलक नीचा दिस सँ एकटा लाल कपड़ा बान्हल। चारुकात देवी-देवताक फोटो ओ ओहि पर लाल-लाल फूल चढ़ायल धूनीक एक कात मृगछाला पर लाल वस्त्र पहिरने तांत्रिक महराज बैसल। एकहाथक दाढ़ी, पूरा शरीरमे भस्म लेपल। कने हटि क' एकटा पटिया पर चारि पाँच गोटे बैसल रहय।

रामवचन ठेहुनिया रोपि, दुनू हाथ माटि पर आ' माथ तांत्रिक जीक पैर पर राखि प्रणाम कयलक। काशी सेहो रामवचनक अनुशरण कयलक। सभटा रामवचन रस्तेमे सिखा देने रहै।

"रामवचना तों फेर उठा अनलें""। आब हमरा मनुक्खक बीच स' भाग' पड़त'''चण्डाल'''पापी""!" तांत्रिक काशी दिस ताकि खूब जोर सँ बजैत गुम्हरला—"जय माँ काली—" करज्नी सन लाल-लाल आँखि! काशीक कोढ़ धरधरा उठलै।

मुदा ताबत तांत्रिक आँखि बन्द कऽ लेने छलाह।

रामवचन तांत्रिक कें नेहोरा-विनती करऽ लगलै। पटिया पर बैसल लोक सभ सेहो तांत्रिक जी कें गोहराबऽ लगलनि।

तांत्रिक जी कने कालक बाद अपन दहकैत आँखि खोललनि। मुँहक रूप बदलि गेलनि। आँखि जेना उनटऽ लगलनि। सम्पूर्ण देह झूलि रहल छलनि।

ओत' जते गोटे बैसल छल सभ गोटय अपन-अपन माथ नीचा मे टेकि देलक। काशी सेहो ओकरा लोकनि कें देखि ओहिना केलक।

"—पापी....दुष्ट .चोर.... खूब जोर सँ अट्टहासैत तांत्रिको हँसऽ लगलाह। हँसैत-हँसैत तांत्रिकजी गम्भीर भ' बजलाह...'जय माँ काली.... तोरा देख' पड़तौ'''देख पड़तौ.... जय माँ काली खप्पर वाली....मैयाऽऽऽ...।' जेना खूब जोर सँ चीत्कार कऽ उठलाह। काशी तऽ डेरा जकाँ गेल।

सभ मूड़ी उठा-उठा हाथ जोड़ि लेलक।

तोरा बेटाकें दस्त होइ छउ, दिन-दिन गलल जाइ छउ, घरवाली कें माथमे चक्कर दै छउ""। दबाइ""सं किछु नहि हेतौ। किछु नइ""।

भक्त जन गोहराबऽ लगलनि।

तांत्रिक कने सौम्य सन भ' गेल छलाह "तों सभ कहै छें, परन्तु एकरा विश्वास कहाँ छै। पापी'''दुष्ट""" तांत्रिक फेर रौद्र भ' उठलाह।

सभ काशी कें हुथकारऽ लगलै। काशी थरथरा गेल। भेलै जे आब खसि पड़त। तांत्रिकक पैर पर माथ राखि कानऽ लगला।

तांत्रिक फेर सौम्य भऽ अयलाह। काशीक स्थितिक देखि हुनका दया जनु लागि गेलैन—"मूड़ी उठा जो ओहि ठाम बैस।" ऊपरसँ ढ़ेरो फूल झड़झड़ा उठलै।

आश्चर्यित होइत काशी आज्ञाकारी शिशु जकाँ निर्दिष्ट कयल स्थान पर बैसि गेल।

"तों पूर्व जन्ममे एकटा व्रती साधुक कम्बल चोरा लेलें। तकरे पाप खिहारै छउ। एकर निदान यैह जे एकटा एहन साधू कें ताक जे कहियो चोरि नहि केने हो। ओकरा भरि पेट भोजन करा क' एकटा कम्बल दान दे। जहिया करबें ओकर प्राते सँ बच्चा नीके होबऽ लगतौ। एकदम नीक भऽ जेतौ। विश्वास गिरतौ तऽ नहि""? ब.ज ""।

"जी नै'''काशी थरथराइत बाजल। तांत्रिक एकटा फूल देलथिन्ह—जो बच्चा कें हँसोथि कऽ सिरमामे राखि दइहनि तांत्रिक जाइकाल पुनः चेताबनी दैत कहलनि—देख, ओहेन व्यक्ति जे कहियो चोरि केने हैत ओकरा खोअयबें त' ओकरा कुष्ट भ' जेतै""। हँऽऽऽ।

घर पर तांत्रिक जीक ओहिठाम सँ आयल तँ पत्नी पुछलकै—"की कहलनि तांत्रिक?""

"कहलनि पूर्व जन्मक पाप अइ। कोनो साधू कें जे कहियो चोरि नै केने हो तकरा भरिपेट भोजन करा कऽ एकटा कम्बल दान दै ले। बच्चा एकदम ठीक भ' जाएत।

"त' जल्दिए कऽ लीअ।"

"हँ, से। हे, की कहू छथि मुदा असली तांत्रिक। जे बौआ के होइ-छै सभटा अक्षरसः कहि देलनि। हम तऽ अबाके रहि गेलहुँ। आर सभटा कहलकै। सैह बुझियौ। अहाँ कें तऽ पहिने एहि सभ पर विश्वासे नै होइ छल। "पहिने एहन पहुँचल व्यक्ति सँ दर्शन नै भेल छल तैं........।"

दूनू बेकती आशामे प्रसन्न छल । आब छलै साधू कें खोअयबाक । पहिने नहि सोचने छल जे एहन लोक कें तकैमे दिक्कत हेतै ।

पहिने अपन यार सूरति कें कहलकै । सूरति कहलकै "जे ई बड़ कठिन छऽ कारण एहन लोक भेटनाइ कठिन जे चोरि नै केने हो । ओना नै त' धीये पूता मे, कने दूधें, कने छल्हि'ए । श्री कृष्ण भगवान छलाह आ बड़का चोर छलाह । यशोदा मैयाक केहन सभटा मक्खन चोरा क' खा लेथि से तऽ बूझले छह । कते कथा छैक ।

रामलखन गप्प सुनलकै तऽ खुब जोर ठहक्का मारलक —"काशी तों सभ दिन बमभोले रहि गेलें, रौ एहि युग मे एहन लोक के भेटतौ । कियो, हुँ कहि कऽ खा लेतौ । कम्बलो लऽ लेतौ आ छुटतै नहिए, जो दवाइ करबही नीक डाक्टर सें ।

"से नै भाइ झूठ कहत तें कुष्ट भऽ जेतै —" काशी रामलखन कें तांत्रिक पर विश्वास दीएलकै ।

'धुर बुड़ि' तखन हमरे खोआ—कोना कुष्ट होइए । ओना हम एक बेर जरूर परमानन्द बाबूक आम चोरा कऽ तोड़ने छियै । चोरि तें भेबे कयलै । तखन खोआ कऽ अजमाइए ले ।

काशी सोचलक—"देखू-ई सभ हँसी-चौल करै'ए ।" मोन दुखा गेलै आ विदा भऽ गेल ।

आइ पांच दिन भऽ गेलै तांत्रिक ओहिठाम सें अयना । मुदा एहन लोक केओ नै भेटलै जे कहतै हम चोरि नै कएने होइ ।

एक गोटय कहलकै "केओ ने चोर अइ, जे पकड़ायल से चोर, जे नै पकड़ायल से साधु ।"

विचित्र मन स्थिति भऽ गेलै काशी क' आब ओ की करओ । सांझ भऽ गेल रहै । काशी चल अबै छल । दोकान पर बैसल लोक सभ एकरे द' गप्प कऽ-कऽ मारे छलै ठहक्का ।

"हइ बताह छै, "

"बताह की रहतै, बूड़ि छै कशिया, कहऽ तऽ के एहन लोक भेटेतै ?"

"केओ नहाँइत मे ठकि लेतै ।"

"हे एकटा बुझलें लोक आब ओकरा मारतै, काल्हि एहिना शोमी बाबू कें तांत्रिकक गप्प कहि गेलनि कि बूझऽ बिगड़ि उठलथिन । ओ जें चुप चाप नै चल अबैत तऽ बड़ मारि लगितै ।"

"तखने एकर मोनो ठीक हेतै...."

"रउ एहने लोक अपन घरोवाली कें····"हा···हा··· एके बेर सभ मारलक ठहक्का····तांत्रिकबा तहन त' उठि बैसत !"

काशीकें भेलै जे क्रोधे खसि पड़त । भेलै जा कऽ एक-एक थापर मारी परन्तु रूकि गेल, ककरा-ककरा मारतै ।

कहुना कऽ मोन के संयत केलक ।

घर पर आबि असोथकित भऽ बैसि गेल ।

बच्चा दऽ पूछारि केलकै "केहन छै बौआक मोन ।"

"धुर की रहतै, फेर आइ सोनिते भेलैऽ ए दस्त, की भेल ? नहिए केओ एहन भेटल ?"

"नहि, आइ तांत्रिकेजी के कहै छियनि, वैह करताह उद्धार, रामवचन कहै छल ओहन लोक अइ युग मे भेटत ? जाउ तांत्रिके जी कें पकड़ू ।"

"तऽ जाउ एखने, रामवचन कें संग कऽ लेबनि, बहुत मोनखराब छै ।"

काशी उठि कऽ बिदा भेल । मोने-मोन भरि रास्ता काली मायकें प्रणाम करैत गेल । कहुना तांत्रिकजी दान लेब स्वीकार कऽ लेथि । मोन मे शंका होइ जे ओहेन पहुँचल लोक दान स्वीकार करत कि नहि ?

रामवचनो के संग कऽ लेलकै ।

दूनू गोटय जा कऽ तांत्रिकजीक पैर पर खसि पड़ल। पहिने तऽ तांत्रिकजी फटकारऽ लगलथिन। काशी जखन तक तांत्रिकजी बात के नै मानने रहथिन तावत तक काशी कनैत-कनैत तांत्रिकजीक पैर कें भीजा देने रहनि।

"अच्छा जो उठ काशी मानि लेलियौ जे तोरा पक्का विश्वास छउ। 'आये शरण तजौ नहि ताही।' ठीक छै, बाबा के दान देबें तऽ पांच गोटेकें भोजन, एकटा कम्बल आ एकटा गायक दाम पन्द्रह सय टाका लगतौ। छह, मंजुर।'—तांत्रिक जी आत्मीयताक भाव आनि जेना पुछलथिन।

हं बाबा...काशी बच्चा सन हिचुकैत, निश्चल भऽ कहलकैन। आब काशी कें जखन भोजन सामग्री आ कम्बलक जोगार नहि भऽ सकलै तऽ बासेक चारि धूर जमीन किसुनजीक हाथे बेचलक। किसुनजी कें बहुतो दिन सऽ ओतेक जमीनक निहाइत छलैक। चारि धूरक दू हजार टाका देलकै।

भिनसरे काशी रामवचन संगे झंझारपूर गेल। तांत्रिक जी कहि देने छलथिन रामवचन कें संग कऽ लियन्हि। रामवचन कम्बल चिन्है छै,। शुद्ध भेंड़िक रोइयां वाला कम्बल चाही। सभ सामग्री खरीद अनलक। धर पर अयलाक बाद—

—भोजन सामग्री, कम्बल आ टाका लऽ कऽ काशी तांत्रिकजीक ओहि ठाम चलल। कने ठाढ़ भ' बच्चा दिस तकलक तऽ पत्नो कहलकै—"जल्दी सऽ जाउ बच्चाक हालति आइ बड़ खराब छै। देखै छियै हकमी आबि गेल छै।

काशी बच्चा कें देखलकै तऽ मोन क्लान्त भऽ उठलै। पहिने एहन हालति भेल रहितै तऽ डाक्टर कें 'निश्चित बजा अनितय, मुदा एखन तांत्रिक पर एहन विश्वास दृढ़ भऽ आयल रहै जे डाक्टर मादे सोचवो ने केलक। समान सम्हारैत तांत्रिकजीक ओहिठाम सँ बिदा भऽ गेल।

तांत्रिकजी सभ समान राखि लेलथिन, आ कहलथिन जो सभ ठीक होबऽ लगतौ। काली माय सहाय भेलथिन। हं, एकटा बात पन्द्रह सय जे गाय क

देलें हें से, आ' ओकर दक्षिणा ? जो गरीब छें, मात्र एकावन टाकालेने अविहें। हाथ सँ कने भष्म उठा कऽ देलथिन—"जो सीधे गाम चल जैहें। बच्चा कें सौंसे देह लगा दैनि। काशी भष्म कें लऽ कऽ धोतीक खूट मे बान्हि लेलक आ तांत्रिकजीकें प्रणाम कऽ बिदा भऽ गेल।

मोन नव आशाक संचार सँ हर्षायल सन छलै। होइ छलै कखन धर पर पहुंचत आ निरोग होइत अपन बेटाकें देखत। आँखि पर स्वस्थ बेटा क' खेलाइत-धूपाइत, हँसैत-बजैतक कल्पना नाचि रहल छलै। मोन जुड़ा रहल छलै। हर्ष रहल छल'''।

× × ×

आइ अधभोरिए एकटा काया किछु झपने जा रहल छल। ओकर चालि मे एकटा बिचित्र गति छलै।

ओ विसनगंज पहुंचि तांत्रिकजीक निबासक आगू ठाढ़ भऽ गेल। चारु कात किछु तकलक। पुनः ओसारा पर चढ़ि खूब जोर सऽ केबारमे धक्का मारलक।

'के छी' भीतरसँ केओ बिगड़ैत केवाड़ खोललकै। बाहर आयल व्यक्ति कें जखन केवाड़ खोलि देखलक तँ ओ आश्चर्यित होइत वाजल—"के, काशी।' आ डराइत सन पाछू हटि गेल।

तांत्रिकजी तमसाइत उठि कऽ बैसि गेल छलाह—'के काशी।'

"हं बावा हम,हमरा अहाँ पर पूर्ण विश्वास अछि।"

—काशी बच्चाक लाश कें बाबाक आसन पर राखि देलक।

तांत्रिक चौंकलाह—की ? ई की ?

"ई अहाँक दक्षिणा।"

काशीक आवाज एहन भेलै जे तांत्रिक उठि कऽ टाढ़ भऽ गेलाह। काशीक आंखि दिस तकना गेलैन। आँखि सँ जेना ज्वाला निकलि रहल छलैक। थर-थरा उठला तांत्रिक।

दक्षिणा !!! काशी हुंकारि उठल।

तांत्रिक थरथराइत अपनाकें नहि सम्हारि सकलाह, तलमलालत खसि पड़लाह।



अपन बुत्ता

आसिन मास क चारि-साढ़े चारि भ' गेल रहै। साँझ होइ मे गोटेक घंटा बाँकी रहि गेल छलै। मन भरिआयल लगै छल। बिभिन्न समस्या आ तकर निदान। सोचै छी किछु, करै छी आ भ' जाइ ए किछु। आखिर एना किएक ? शहर सँ गाम आ गाम स' शहर। कुण्ठा आ संत्रास मे बोड़ल मन फेर जिजिविषा अपन शक्ति आ कार्य पर। आ अन्त मे गाम आ फेर खेती…। खेती, सोचैत जेना मन मे आगि लागि जाइए। अपन मेहनति आ फेर ओकर फल मन खौंझा दैए आ विदा हेबाक लेल उद्यत होइ छी—'पैटघाट'। पैंटघाट माने अपन गामक चौक, मन बहटारवाक लेल। पत्नी के कहै छियनि कुर्त्ता देबाक लेल' ओ कुर्त्ता दैत कने विहुँसैत सन सकुचाइत कहै छथि—"गुलाब दाइ की कहैत छलीह से कहू ? तमसायब त' ने ?"

'कहू ने की'।—हम कने साकांच होइत कहै छियनि।

"हुनकर ब'र, अहाँ कें त' संगिए छथि। हुनका मंत्री लग बड़ पैंट छनि। कहैत छलीह अहाँक घरबला ओतेक पढ़लनि आ घरे पर छथि। अपना बुते कोनो नोकरीक जोगार नै होइ छनि त' हुनका कहथुन ने। ओ त' कतेक के सुन्दर-सुन्दर नोकरी धरौलनिहें। से हुनका कहियौन ने ! एना कोना चलत ? आइ-काल्हि सिद्धान्त स' नोकरी भेटै छै। बाल-बच्चा अइ ओकरो पर त' सोचि किछु करियौ।" अपन एक हाथ स' कुर्त्तालैत हुनका दिस कनडेरिये ताकि कुर्त्ता पहिरैत आंगन स' बिदा भ' गेलहुँ। हुनकर गुलाब दाइ क' अपना बुते' शब्द जेना जहर सन पुड़िया माथ मे घोड़ि देलक, फन-फन करैत मन लहर' लागल। अपना बुते…! एक हँसीक संग हमरा मुँह स' शब्द बहरायल। पुनः हम अपने मुँह स' बहरायल शब्दक बिबेचन करय लगलहुँ। ठीके त' कहलक हमरा बुते कहाँ भेल। कतेक ठाम इन्टरव्यू देलहुँ, कहाँ भेल कतौ नोकरी। ओहि लेल जे चाही से नै ने केयलियै ? कहने रहय ग्रामीण बैंक

क इण्टरव्यू मे एक गोटय हमरा त' भ' गेल।" हम विस्मित होइत कहलियै इण्टरव्यू भेवो ने कयलै'ए ताअहाँ कहै छी हमरा भ' गेल ? ओ जबाब देने रहय—"इण्टरव्यू त' एकटा देखनाभा छै, लोक पहिने सेट रहै छै। हम त' अपने गाम क बैंक मैनेजर स' पैरवी लगेलियै, दस हजार लागल। ओकरा दिस तकने रही एक विजय-मुद्रामे बिहुँसि रहल छल। भेल जे धुरि जाय, छोड़ि दी इण्टरव्यू। मुदा भाँज पुरा अयलहुँ, जे-जे प्रश्न पूछलक सभक उत्तर नीक जकाँ देने रहियै मुदा, ओहि मे जे बुत्ता क प्रयोजन रहै से हम नहि क' सकल रही आ नै भेल। ई बात सेहो जे कते गोटय इण्टरव्यू नहियो दैये आ ओकरा भ' जाइ छै। ओकरा लोकनिक बुत्ता मे सेहो सम्भव छै। कहने रहय रामू आ हम अपनो अनुभव केने रही जे जेहन नोकरी तै मे तेहन जोगार चाही, ओहि बिना ज' ककरो भ' गेलै त' बूझू जे ओकरा लोकनि स' कोनो गलती भ' गेलै।

त' की करीऽ कोनो जोगार…? गुलाबक ब'र, अपन सगी, मंत्रीजी क' कृपापात्र सुरेश कें पकड़ी। सुरेश मन अबिते मन पड़ि आयल ओकरा संग बिताओल छात्र जीवन। बड़ भुसकौल रहय सुरेश। परन्तु अपन उदण्डता क कारणे ओ स्कूल भरि मे चर्चित रहय। कते कें मारब आ मारि खायब ओकर नित्यकर्म रहैक। एक दिन संस्कृतकघंटोमे पंडितजीकें गारि द' देने रहय, तही पर हेडमास्टर बिगड़ि क' स्कूल स' निकालि देने रहथिन। तकर बाद सुरेश कोनो स्कूल मे नाम नै लिखेलक। मुदा ओकर बदमाशी चालू'ए रहलै। इह ! भवानीपुर मे संक्रान्तिक मेला रहै। प्रायः छः साल सँ ऊपर भेल हेतै। हम ता बी० ए० पास क' गेल रही। गामे मे रहो। हमहुँ गेलहुँ मेला देखक लेल। कने काल गेना भेल रहय, सुनलियै ककरो केओ छूड़ा मारि देलकै। सभ उम्हरे दोड़ल। हम दौडलहुँ त' देखै छी सुरेश के भागल चल जाइत आ जकरा छूरा मारने रहै ओ वेहोश भ' क' खसल। ओकर पेट स' सोनित क पेमारा चल जाइत। पूरा जगह सोनिते सोनिताम। अधैर्य भ' गेल रहय देखि क'। लोक उठा-पुरा क ओहिठाम क अस्पताल ल' गेलै। बाद मे बहुत इलाज क बाद ठीक भे'ल, सुरेश पर केस भेलै। परन्तु ओकर बाप ततेक ने थाना मे

खर्च केलक जे थानेदार पूरा केस खा गेलै। सुरेश क रोईयों ने भग्न भेलै। ओहि दिन स' सुरेश 'हीरो भ' गेल। लोक डराय लगलै ओकरा सँ। केओ भीड़क साहस नै करै। इमरजेंसी मे ओ युवा कांग्रेस भ' गेल। खादीक धोती। कुर्त्ता पहिर' लागल, सभटा भ' गेलै आजु क नेता सन। इमरजेंसी क बाद जनता पार्टी क शासन भेलै, जाहि मे ओ ओहि पार्टी मे मिलि गेल। आ जाय कि जनता पार्टी टूट' लगलै कि ओ फेर कांग्रेस पार्टी ज्वाइन क' लेलक। जखन फेर चुनाव भेलै त' फनन्द बाबू विधान-सभा क्षेत्र स' ठाढ़ भेलाह। सूरेश जी-जान स' हुनकर संग देलकनि। कतेक लठैत के ने जुटेलक। चारिटा बूथ पर कब्जा क'क' फनन्द बाबू कें भोट देने रहय। पिपरौलिया बूथ पर त' चारू कात स' विद्रोही सभ घेर लेने रहै। ताबत एकर लोक सभ पहुँचि गेलै आ' ओ सभ भागि गेलै। फनन्द बाबू भारी मत स' विजयी भेलाह। मंत्री सेहो भेलाह आ सुरेशक चलती भ' एलै। समाज मे अपन एक धाख जमा लेलक। समाज क केहन-केहन विद्वान आ प्रतिष्ठित एकरा लग पैरवी ल' जाय लगलाह। लोकक काज होम' लगलै चारू कात वाह-वाही। आदर-स्नेह उमड़' लगलै। सुरेश सभहक प्रशंसा पात्र भ' गेल। संस्कृत पंडित जी सेहो आइ अपन गलती पर पछताइत ओकर प्रशंसा करैत छथि। हेडमास्टर सेहो अपन गलती पर दुख करैत ओकर वर्णन करैत कहै छथि कोना ओ हुनकर बदली के रोकि सकलन्हि।

"की समाज आइ एहने व्यक्ति के प्रतिष्ठा दै छै ?" मन मे प्रश्न जागि अबै'ए ?

'हँ, दैए त' रहल छै।' पुनः अपनहि मे उत्तर अबैए, हँ तें ने समाजक ललक ओहने बनबाक दिस छै।

"तँ की आइ समाज एहन प्रवृत स' प्रभावित अपन नैतिकता बिसरि चुकल ?

"बिसरि'ए त' गेल"—ई उत्तर जखन पुनः स्वतः रूप मे अपना संग देखलहुँ त' चौंकि सन गेलहुँ। "नैतिकता ! नैतिकता छै। एकर लोप भ' गेने मनुक्ख ? नै ! नै ! किन्नहुँ ने ! नैतिकता क लोप नै भ' सकै छै। एहि बिना

मनुक्ख नै रहि सकै'ए। एखन मनुक्ख सूतल सन अइ। एक दिन अवश्य जागत। मनुक्ख के मनुक्ख जगेतै। मनुक्ख अपन मनुक्ख लेल जगतै। तहन रहतै अगवे मनुक्ख लेल मनुक्ख। पूनः पत्नीक गुलाब दाइ क गप्प मन पड़ि आयल। टीसा उठला मन। एहि जमानाक एहन नोकरीक बुत्ता हमरा मे ठीके नै अइ। नोकरी के भगवान ! स्वात्मा मे परमात्मा। अपना के बिसरि जाउ ? नै अपना के नै बिसरब। हमरा अपन बुत्ता पर सभटा करबाक अछि।

ई सभ सोचिते-सोचिते आबि गेलहुँ पँटघाट। इहो पँटघाट केहन छल आ आइ केहन अछि। पहिने मात्र एकटा रूपलाल क चाह क दोकान आ डा० पीताम्बर बाबू क होमयोपेथिक कमला फार्मेसी। आ आइ चक-चक चारू कात दोकाने-दोकान। दोकान क छोड़ दूनू कात नमरल जाइ'ए आ सड़क सिमटल जाइ'ए। आइ चाह-पान क दोकान सभ स' बेसी अछि आ दिन-पर दिन एकटा ने एकटा खुजिए रहल अछि। एहि चौक क प्रतापे जेना आइ गाम क सभ चाह-पान क अभ्यासी भ' गेल अछि। लोक सभ के हिस्स क भ' गेलै'ए चौक एटेन्ड करबाक। चौक पर बिना अयने जेना ककरो खेनाइ पचितें ने छै। आ हमहू त' तेहने छी, की करब मन के बहटारबा क लेल त'.... भेल जेना हम अपना केफराक करैत सबल कर' लागल होइ ! दक्षिणबारी कात तकना गेल लाइब्रेरी ? कतेक हरान स' लाइब्रेरी बनल, परंतु एक्के रातिमे सभ किताबपार। आइ जेना लाइब्रेरी खण्डहर भेल पढ़ुआ क चित पर सन्न अछि। इह ई चौक ! जेना गामक' श्री' बिला रहल अछि चौक क चाह क घोंटमे। यैह सभ सोचैत देखैत आबि गेलहुं पोखरिक पछबरिया घाट पर। घाट पर ईंटाक टूटा बेन्च जकाँ बनाओल छै, ओही पर बैसि गेलहुँ। दोकानमे तेहन-तेहन वसिआयल गप्प होइत रहै छै जे हम ओत' नै ने खपि पबै छी। एक दिन हम किछु कह, लगलियै कि बुच्चन तेहन ने गप्प कहलक जे हम तिलमिला गेल रही।

कहने रहय जे एहन छो तें ने गामे मे सड़ै छी। आ तकर बाद चौठिया चाहवाला इन्दूबाबू के कहने रहनि जे "ई जे कहै छो चाह खराब छो से

अहाँ पढ़ुआ बाबू सभक-यैह छिच्छा ।' इन्दू बाबू कने गप्प भजैत कहलथिन,

"की पढुआ तोरा माने बूड़ि ?"

"हँ यौ बूड़ि नै त' की ? आइ-कालिह पढ़ओक कोनो मोजर छै ?" इन्दू बाबू बिगड़ि गेल रहथिन आ हमरो बड़ खराब लागल रहय । आ ओहि दिन सँ चौक पर पान-तान खा क' फराके बैसैत छी, तैं मे ई स्थान बड़ शान्त बुझाइत अछि । हँ त' बैसल रही कि जीतन मिसर पहुँचलाह । पहुँचैत देरी पुछि देलनि—"गामे मे छी ? कतहु जोगार नै बैसलै' ए ?

"नहि ।" एक संक्षिप्त उत्तर दैत चुप्प भ' गेलहुँ । दिक्क क' देने अछि इहो प्रश्न । जत' तत' केओ पूछि देत-गामे मे छी ? गामे छी ? मन आजोज भऽ गेल'ए अहि प्रश्न सभ सँ । जीतन मिसर पर क्रोध भ' आयल मुदा क्रोध कें दबैत ओहिठाम स' उठि क' बिदा भ' गेलहुँ । थोरे काल इम्हर-उम्हर घुमलौं । परन्तु मन नै लागल । बेर-बेर पत्नी क गुलाब दाइक गप्प, विभिन्न प्रश्न आ फेर जे पूछि दीअय-गामे मे छी' तकर आशंका मन के कोना दनक'देलक आ विदा भ' गेलहुँ गामे पर ।

फेर अनेक समस्या क निदानक चिन्ता आबि गेल माथ मे कोना क' की करी दिन-दिनक बुतात, बढैत जाइत ऋण बचा-बुच्चीक पढाइ लिखाइ, लता-कपड़ा ? आमदनीक स्त्रोत खेती, मुदा ओ त' चौपट्ट अछि । रौदी पर रौदी बोरिंग खराब, नहरि मे बान्ह नहि । सिंचाइक एस० डी० ओ० ओत, ओतेक दौड़लहुँ मुदा किछु नहि । गामक लोक जेना सूतल अछि आ सरकारी व्यबस्था पर जत' सगरे मरछाउर छीटल अइ । गामक लोक गाममे किछु करैए ने चाहै छै । सभके शहरक चसक लागि गेलैए आब बोनिहार बोनि करैले पंजाब आ भदोइ जाइए । गामक हालतिए तेहने भ' गेल छै जे बोनियो ने लगै छै, की करतै ? कतेक दिन पर परूकां ओहेन कुसियार भेल रहै, परन्तु की त' मिल बन्द रहलै, किछु दिन लेल खुजबो कयलै त जमादारक कृपापात्र क योग्यता हमरा मे नै भ' सकल सभटा कुसियार खेतमे सुखा क' जाड़नि भ' गेल । ओह ! शरीरक सोनित जेना अपन गति तेज क

देनक' फेर मन मे आबि गेल पत्नीक गुलाब दाइक गप्प । तँ की पैरवी करी नौकरी ली ? की बिसरि जाइ सभटा ? बिसरा दी अपना कें ? जाहि विरोधमे बजैत अपनामे शक्तिक अनुभव करैत रहलहुँ ओकरा नोकरी नाम बेचि दी ? भेल जेना आँखिक आगू सूरूजक विर्रो नाच' लागल हो । अन्हार बुझायल आ अन्हार मे ठाढ़ कोनो ललाइत रूप, जे फनन्द बाबू बूझेलाह आ फेर सुरेश फेर अनचिन्हार बहुतो गोटय सभ एकहि बान्ह कें, बुझायल जेना ओ खिसिय'बैत गाबि रहल हो—'बिनु फँसने ने परकार'—माथ झनझना उठल नहि ई किन्हु नै भ' सकैए । हम अपना के नहि बिसरा सकै छी । हमरा गाम मे रहबाक अछि, हमरा भेल गामक माटि गाम मे किछु करबाक लेल सबल करैत हो । कार्य हमरा हकारि रहल हो । तावत आङने आबि गेल रही । कुत्ता बाहर कएलहुँ आ घास ल' क' महींस के देलियैक आ डोल ल'क' पर्रु खोलि दूध दूह' लगलहुँ । ईह एहू लेल जे लोक सभ केलक । किदन-कहाँदन लोक ढ़ेर बाजय । कतेक गोटय कहय पढ़ि-लिखि क' महींस पोसै छी । अहाँ स' पार लागत । कतेक तरहक गप्प । एखन त' गुजर यैह महींस चलबैए । दूध दूहि पत्नी के देलियन्हि आ हम पयर-हाथ धो क' खाइ लेल बैंसि गेलहुँ । पत्नी कह' लगली—"हम जे कहलहुँ से किछु बजबो ने केलियै । ई नहि सोचैत छियै जे बच्चा सभ पैघ हएत, ओकर किताब-फीस । आ से जखन हैत तखन घरो टूटल जाइए फेर कत'स' बान्हब ? वेटी के त' कहै छियै पढ़ायब आ जमाय पढ़ल हैत कएल, अहाँ बुते ? हैत व्यवस्था गनल ? देखियौ ने केहन संयोग छै। आइ गुलाब दाइक वर आयल छथिन्ह । अहाँ कें खोजो करै छलाह । भेंट क' अवियौन आ अपन गप्पो कहबनि, आब संसार बदलि गेलैए अहूँ बदलु ।" कण्ठ तर जेना रोटी गर' लागल । मन तित्त भ' उठल, पानि पीब' लगलहुँ कि छाती मे दर्द उठि गेल, छाती पकड़ि लेलहुँ वामा हाथ स', मन घूम' लागल एक्के बेर दृष्टि, शब्द मन मे आँउर मार' लागल । गामक लोकक हेय दृष्टि, अपन पढ़नाइ, स्थिति. समाज, खेत-पथार चौक, खण्डहर लइब्रेरी, तिक्खाह शब्द आ पत्नी-धिया-पुता । अपना कें संयत कर' लगलहुँ ।

"की भेल" – पत्नी हड़बड़ाइत पुछलनि ।

"ऊँह, कने दर्द जकाँ उठि गेल, हम बात के टारि देल ।"

"अहाँ के त', दूओक'र कि खेलहुँ नै, आ हलक' पानि पीब' लगलहुँ ।" पत्नी बजली ।

हम किछु नहि बाजि पुनः खाएब शुरूह कएल । खा क' ओछाओन पर आबि पड़ि रहलहुँ । पत्नी जखन खा' पी क' अयलीह त, चुप-चाप घुमकि' सूति रहलीह । हम बड़ी काल तक किछु-किछु सोचैत रहलहु । भिन्न भिन्न योजना आँखि पर नचैत रहल । मनस्थिति अपन वुत्ता कें संजोगि रहल छल ।

भोर भेलैं त, चमरटोली गेलहुँ । चमरटोलीक रामचरण जे हमर स्कुलिया 'संगी रहय' ओकरा जा क' कहलिये जे गाम मे ढ़ोलहो द' दही जे लखनदइ मे बान्ह पड़तै, तें सभ गोटय चलै चली । हम अपन चारि गोटय संग ल'क' आरो लोक कें कहैत, छिट्टा-पथिया-कोदारि ल' बिदा भेलहु लखनदइ' ढ़ोलहो सेहो भेलै । लोक सभ जूट' लगलै । बान्ह हूह लगलै । पानि बान्हाय लगलै । सभ किसानक फसलि तऽ सुखाइ'ए रहल छलै । सोचैत सभ छल मुदा के करय सैह प्रश्न छलै । हँ,त' तीन दिन बान्ह बनि क' तैयार । धार उमड़ि क' पानि बाध दिस जाय लगलै । खेत पटऽ लगलै, लोक आनन्द सँ झूम' लागल जड़ैत धान पानि स' पट' लगलै । सभ अपन निर्भरताक बाट तकैत बूझायल । सहज स्थिति मे गप्प कर' जाय लगलहुँ । धनेसर बुढ़बा बाजल-'सरकार तकार सँ किछु नै हैत, एहि बेर सँ छोटका-बड़का मिलिक, अपन बाट ताकू, विभिन्न योजना क कार्य-क्रम बन, लागल । खेती पथारी केना हुअए । केना कोन फसल उपजायल जाय । तै लेल की कएल जाय । हमरो मन आइ हर्षित छल । भरि गामक किसान मे नव उत्साह जागि गेल छलै । सभ पूर्ण रूप सँ मानि लेने छल हमरा सभ अपन उत्थान अपनहि क' सकै छी, अपनहि बुत्ता पर ककरो भरोसे किछु नै हैत ।

गामपर जखन नहा-सोनाक खाइ लेल बैसलहुँ त' पत्नी के कहलियैन–– "अपनो सभक खेत पटि गेल, ई बुझू अहि बेर एतेक धान भऽजायत जे एक सांझ के साल लगा देत । फेर गहुँम नीक जकां उपजबक अछि । जइ

लेल पूरा तैयारी करबाक अछि । आ हे अहि बेर कुसियारो अपनहि पेरब गूड़ बनायब आ सभ ब्यवस्था करब । आब देखियौ की होइ छै । हमरा अपने बुत्ता पर सभ किछु करबाक अछि ।

पत्नी सेहो भरि गामक उत्साह स' उत्साहित छलीह । कहलनि––लखनदइ बान्हल गेलै तें नहि आइ ई आशा भेल जे धान हेबे करत । एहिना सभ किसान मिलि क करैत रहत त' नोकरी-चाकरी लेल बाहर किए जाए पड़तै, गाम सँ नीक कत' हैत । पत्नी क एहन गप्प सूनि बिस्मय आ आनन्द दूनू भेल जेना माथ हलुका रहलए आ दायित्व बढि रहल ए । अपना के विजयी अनुभव करऽ लगलहु आ गप्प कें अपना दिस अनैत कहलियैन ––"अपन सोना-श्वेता कते नीक पढ़ैए, देखबै ई सभ बिदुषी हेतै । अपन आत्मनिर्भरता स्वयं पाबि लेतै ।

हँ से त' स्कूल मे सभ मास्टर साहेब सभ प्रसंशा करैत रहै छथिन ।

"हे एकटा कहु टुन्ना-मुन्ना कें कथी ले पढ़ायब । दूनू बेटा कें नेता बनायब । सुरेश सन ।" हमर एहि बात पर पत्नी बिहुँसि उठलीह – "से किए पढ़ेबै नै । अहाँ मने सुरेश सन –"जेना लजाइत चुप्प भ' गेलीह ।....."

पुनः बात कें बदलैत कहलनि –"हे एकटा कहू आइ जखन अहाँ बाध गेलहुँ त' दलान पर बहुतो गोटय गप्प करै छलै आ अहीं द' कहै छलै जे एहन कर्मठ पढल-लिखल गाम रहि सुधार करय त' केओ दुखी नहि रहत ।"

एक आत्मीय आनन्द मे पत्नीक मुँह दिस तकलहुँ एक अभाक लाली मोन कें गुदगुदा देलक ।

आ कि ध्यासक अनुभव भेल । गट-गट क' भरि लोटा पानि पीबि गेलहुँ । मन शीतल लागि रहल छल ।

□

धार आ मनुक्ख

मन होइए, जँ मनुक्ख होइत त' काँच करची सँ छौंकिया दितियै एहि कमला बलानकेँ। परन्तु, एकरे एकरा खैर छै जे ई मनुक्ख नहि धार थिक धार ! इह, ई कमला बलान !

कमला बलानक दूनू कात छहर बनि गेल छै। मुदा, तै स' की ? सभ साल छहर टूटिते छै। चाहे ओ पूबारि कात हो वा पछबारि कातक। पहिने छहर नै रहै त' पानि आस्ते-आस्ते पसरैत बढ़ै, आ लोक अपन-अपन सुरक्षाक व्यवस्था करय। मुदा आब त' एक्के बेर कोनो-ने-कोनो कात छहर तोड़ैत तेना ने हुल द' बढ़ि अबै छै जे जाबत लोक सम्हरय-सम्हरय ताबत कतेक नाश भ' जाइ-ए। बरसातक समयमे दूनू बगलीक गामक लोक आदंकित भेल रहै'ए रातिकेँ सूतलमे ज' कोनो आबाज सुनाइ छै त' होइ छै जे छहरे टूटलै, आ कि चेहा क' उठि बैसैए। बेचैन क' देने छै लोक के इहो कमला बलान !

आ, एहि बेर देखू ने हमरे गाम बथायल छलै।

सौंसे पानिये-पानि, की घर की आङन ? की डबरा आ कि पोखरि, सौंसे एके रंग !

कतहु घर भसिआइत, कतहु माल-जाल दहाइत ! सौंसे नोर-झोर ! सभटा लहायब क' गेल ई डकनियाँ ! एही स्थिति मे बिदा भेल रही झंझारपुर, झंझारपुर ब्लौक मे किछु किरानी पदक विज्ञापन रहै। ओहि दिन आवेदन सभ संग प्रपत्र जमा करबाक अन्तिम तिथि रहै, तेँ ओहनो स्थितिमे आवेदन देबाक लेल जायब नितान्त छल। सभ कागत-पत्तर ओरिया लेने रही, मात्र मार्कसीट सत्यापित करेबाक छल कोनो गजेटेड पदाधिकारी सँ। नाह पर चढ़ि विदा भेलहुँ, सोचलहुँ जे जाइ छी छहड़क एहि कात जे पूबरिया उचकापर इन्जिनियर सभक डेरा छैओतहि ककरो स' मार्कसीट सत्यापित करा लेब। हाहाकार आ क्रन्दनक बीच स' नाह जा रहल छल। वर्त्तमानक दुखाह परिस्थिति मोन के बेचैन केने छल। मुदा जिनगीक जीबाक लेल, भविष्यक सुख भोगबाक इच्छा वर्त्तमान के अङेजी पहुँचि गेलहुँ इन्जिनियरक डेरा पर।

बाहर मे केओ नहि छलै। भीतर स' केबाड़ बन्न बुझायल, वरामदा पर एकटा ब्रैंच राखल छलैक, ओहि पर बैसि क' इन्जिनियर साहबक बाहर अयबाक प्रतीक्षा कर' लगलहुँ। भीतर सँ दू टा स्त्रीगणक वार्तालाप सुनाइ पड़ल, हँसी ठहाका आ पुनः—

—यै अहाँक साहेब साइड पर स' अयलाह ?

—नै त', एखन कि फुर्सति होइ छनि।

नै ने होउन फुर्सति, भगवान सभकेँ एहने काज दैत रहथुन।

—हँ से त', एहि बेर जे बाबाधाम गेल रही से बाबा के कबुला केलियनि जे एहि बेर ज' हिनका काज हाथ औतनि त' पाग चढ़ायब।

—हँ, हमरो कबुल अछि, हमहूँ अहीं संगे जा क' चढ़ा देबनि।

—आंय यै अहाँ एखन तक रेफरीजेटर नै खरीदलियै-ए?

—ऊँ......, अहाँ त' अहिना अनठ'बैत रहै छी, हिनका इसक्यूटिव देख' चाहै छन्हि। ओत' हमही अहाँ संग जाय लगलहुँ इक्सक्यूटिवक डेरा पर त' काज भेटलन्हि। मुदा एहि बेर हमर महत्व के ओ मानि लेलनि।

—हा...हा....ही....ही...दूनूक मिश्रित ठहक्का गूँजि उठल।

—अहू बेर अहाँक साहेब छथि ने !

—हँ, अय, अहाँ हमरा कमजोर बूझै छी...?

—नै नै...से....किए...

हा...हा....ही...ही...

—"हँ...हँ मोन पड़ल, एहि बेर त' दूनू गोटय संगहि रिपेयरिंग मे छलाह।

—"हँ अय, हमरा त' पहिनहि कहै छलाह जे एहि रिपयरिंग तेना करौलहुँ हे जँ कमला मैयाक कृपा रहलनि त' एक लाख स' ऊपर..."

"हँ, इहो बजै छलथिन, आ से देखियौ कमला मैयाक कृपा।"

"हँ अय, से की ई दूनू गोटय कम चलाक छथिन ?

हा हा हा हा.......हो ही ही ही......

हमरा बैसि नै भेल उठि क' ठाढ़ भ' गेलहुँ। छहरक भीतर कमला बलान बहि रहल छलि.......हा हा......ही ही जेना कहि रहल छल। हँसैत-हँसैत बदहवास भ' रहल छलि......हा हा...ही...ही...जेना कहि रहल छल —"मनुक्ख त' भेटि गेलौ, छौंकिया ने आब !!

△

परिस्थिति

बीस बरख स' ऊपर भेल हेतै निर्मलीवालीकेँ सासुर बसना। एक बरख भेल रहै द्विरागमनक कि बेटा भेलै। एकर पितिया ससुर कारी मुसहर बड़ कहबैका, भरि मुसहरीक नाम बैह रखै, जखन निर्मलीवाली के बेटा भेलै त' कहलकै—सुनै जाइ जा हइ जनीजाइत, तोरे आउर के कहै हीअ' ग'। जमुनाक बेटा फागु खेलाइत जनम लेलकै ग', तखनी एकर नाम फगुनिया राख', हे हइ, नामक बड़ असर होइ हइ, आ कि नै? आ' बच्चाक नाम पड़ि गेलै फगुनिया। फगुनियाक बाद एकटा बेटी भेलै—नाम रहलै—अमिरती।

हँ, त' यैह दू धीया-पुताक माय अछि निर्मलीवाली। समय बितैत की देरी होइ छै। यैह अठारहो नहि भेलै फगुनियाके कि यैह चकैठे सन भ' गेलै। फुटि क' जुआन, अनमन बापे सन धूआ-काया। जखनि केओ-केओ कहै "बापे सन त' हइ फगुनिया त' निर्मलीवाली, उनटिक बेटा दिस ताकय, हरखे मोन लजा जाय, हीआ भरि उठै, आ अपन दूनू हाथ ऊपर उठा देवताके गोहराबय—जय हे दीना भदरी।

आइ दू बरख भेल हेतै, जहिया फगुनिया पहिले-पहिल टाला पकड़लकै। पहिल दिन जखन बेटा जड़े खटि क' अयलै त' जमुना घरवालीके कहैत रहय—सुनै हइ, फगुनिया त' हमरो स' बेसी माटि टनै हइ, बड़ नीमन हाथ चलै हइ।" बेटाक प्रशंसा घरवला मुँहे सुनि जुड़ा उठलि। छाती सूप सन भ' गयलै, आनन्दे कहुँ हिलोर लैत घरवाला के सहलाब' चाहलक—"बेटा त' एकरे हइ ने।"

—से कि पक्का हइ—जमुना हँस' लागल।

ऊँ····मुँह दूसि लेलकै निर्मलीवाली—"हमरा नहि नीक लगैए जाह····।

जनका अपन बढ़ैत हाथके छिप लेलक, जाय कि देखलकै अमिरती बेटीके सुरसुराइत आङन चल अबैत।

आ प्रसंग बदलि गेलैल—बोनिमे धान देलकै कि? "कोनो दै छलै, कत्ते कहि क' त' लैलियै हन' नइ त' पातरि कथीके दैतियै।"

मोन पड़लै जमुनाके इहो जखन पहिले दिन टाला उठौने रहै त' एकरो माए वाउ पातरि देने रहै। अपन माय-बापक स्मृतिमे कने काल ओ हेरायल रहल।

एक दिन दूनू बापूत कामहि'ए रहय। एहन कामहिक दिनमे फगुनियाँक मोन बौआय लगै छै।

ओइ दिन निर्मलीवाली रोटी पकबैत रहय। बेटा लगमे आबि क' बैस गेलै—माय गइ, अमिरतीक कते बरख हेतै?

"यैह चैत स' तेरहम चढ़तै, सिरपुरवालीक बेटीक तुरिया हइ, ओत' सासुर बसै हइ।—बेटाकेँ गप्प त' कहि गेलै मुदा बेटीक वियाहक चिन्ता जोड़ क' देलकै।

बेटा बुझि गेलै जे ओकर माय एना किए किछु सोच' नहाँइत लगलै। कने काल किछु सोचैत फगुनियाँ मायक आरो लग सहटि अपन मोनक बात पूछकक—माय गइ, रामचरित आउर फेनो राजस्थान जाइ हइ, जाउ? जइतौं त' किछु कमा-खटा क' अनितौं त' गिरहतक सेहो द' दैतियै आ परूकाँ तक अमिरतीक लगन क' लैतेँ? "नइ हउ-- माय छिनगि उठलि। "गामक कते गोटय त' गेलै ग' की कमेलकै? रबियाक देह केहन पीअर-कपीस भ' गेल रहै। सुनै हीअइ, ओत' हफीमक पानि चाहमे द' क' पिअ'बै हइ। धुर! नइ जाय देबै फगुनियाँकेँ—मोने-मोन एते बात सोचि गेल निर्मलीवाली मुदा बेटाकेँ सभटा नहि कहि भेलै।

"से किए गइ, कह ने?—बेटा पुछलकै।

"ओते दूर जेबऽ से हमर मोन ठाढ़ रहत?"

"तोरा सभ के त' अनेरो···। हम कोनो बच्चा रही गऽ तखैन, हम पुछै हीअउ एतऽ कए दिन काज लगै हइ, सेहो केओ सुपतो के देबइ चाहै हइ ? —कने तमसायल बाजल फगुनियाँ ।

माय बेटा मुँह दिस तकलक किछु नहि बाजलि ।

"देखही, गामक हालति बड़ खराब भेल जाइ हइ। बाउ जड़े लागल रहै छी तखन त' गिरहतक अगुरबारे हइ। अँय गइ तिरपित गिरहतक कते भ' गेलै ओइ दिन कहैत रहय ।

"चारि बीस हइ, तेसरा बाउ बेराम रह' त' लेने रहक से कए दिन चरच करै हइ, कहैत रहै बलू जे सूइद-मूर पर चढ़ि गेलौ। कल्हि बड़ अहलदिल भ' बजैत रहै। जेना····।—माय बेटा दिस तकैत बाजलि ।

"तें त' कहै हीअ', जायब नइ त' चलतौ ?

बेटा सेहो समर्थ, कत्ते काल माय नहि कहितै ?" बेटा दिस तकैत बाजलि—मासुल कत' स' औत' ?

—"से त' रामचरितर कहलक जे··· किछु रुकि सन गेल फगुनियाँ आ फेर कहलकै—"अपन दूनू छागड़ फुलेसरा ल' लेतै आ जे भाड़ा हेतै से रामचरितर दैत जेतै, रामचरितर ओइ जग औकर पाइ हइ, बिनु दामे केने द' देबहक ?"

नै, से दाम कऽ लेबै की ?

तखन आब' दहक बाउके पूछिहक—माय किछु सोचैत कहलकै। आ ने, अन्तमे नहि'ए मानलकै फगुनियाँ। चलिये गेलै। तीन मासक करीब भेल हेतै गेना कि एक सय रुपैया पठेलकै। जामुना डाकपीन स' रुपया छोरा क' अनलक आ घरवालीक हाथके देलकै—एकटा नमरी छलै ।

—की हइ नमरी ? अइमे पाँच बीस रहै हइ ने ? —निर्मलीवाली उनटा-पुनटाक देखि-देखि आनन्द ल' रहल छलि—बेटाक कमायल रुपया मोनके त' भरल चास क' देने रहै ।

"सेहो नइ बुझै हइ। जुगताके बिरहारामे राखि लउ। आ से कि रखतै, फुलेसराक एक सय रुपया ल' क' गेल हइ गऽ, रुपया आयल हइ से छपित रहतै ?

"हँ, ई ढोलहो दउ गऽ····।

"मर, बहि, ढोलहो की देबै ? हम पुछै हीअइ, डाकपीन सुक्खो काकक दूरा पर आयल रहै, एकरा मोने ओइ जग सभ आँखि पर पट्टी बान्हि नेने रहै ?

आब की कहितै निर्मलीवाली ? मुदा कहितै कोना ने। एकर बेटा रुपया पठेलकै'ए एकर गप्प कोना ने बढ़ि क' रहतै ?

—"तहन पहिने जाउ, राजाजी ले गांजा ल' आनौ, पहिल कमाइ हइ गऽ बिनु राजाजी के गांजा चढ़ौने खरच नै कर' देबै। रामजी कक्काके ओम्हरे स' कहने अबउन।"

सैह भेलै। आन दिन ज' जमुना रामजी कक्का संगे भांगक फूल निछाड़ऽ लागय कि तखने स' निर्मलीवाली भनभनाय लागय आ जाबत-जाबत दूनू गोटय दम लगबय ताबत तऽ निर्मलीवाली धनुकी टोलक चरखी भ' जाय छलि, मुदा आइ त' राजाजी के गाजा चढ़बैके बात हइ ने। अपने स' ठाँव क' देलकै, बैसकी बैसेलक, गोर्ली बनबै ले सुतरी बैसलि जाइ राजाजी बहुत रास मनौती कहि गेलि ।

रामजी आ जामुन जा कि सोट मारै आ चीलममे धधरा लपकि उठै कि निर्मलीवालीक करेज बढ़ि उठै आ दूनू हाथ जोड़ि माथमे सटाक कहै—"जय राजाजी घट्टी-कुघट्टी माफ करिहक।"

तकर दोसरे दिन दीना भदरीके लड्डू, गांगो महराजके पान-सुपारी चढ़ायल गेलै, देवी-देवता केलाक बाद निर्मलीवाली रुपया फुटका-फुटकाक गनलक—"चारि बीस पाँच टा हइ, अइ बेर तिरपिते घरवालीके सूइद द' दउ, मारि अमनी-गभनी बजै हइ, दोसरा बेर फुलेसराके द' देतै।"

—ओ ज' नइ मानै ?—शंका केलक जमुना ।

—की नइ मानतै, हमर छागड़ के बलू डेढ़ सय होइतय, ओ त' फगुनियाँके···"से त' गेने की भेलै, तीन मास स' ऊपर भेलै, कत्तो बोनि भेल रहितै कतबो कामहि होइ त' जोड़उ ?"

—"ई जोड़ैत रहउ कोना ओ ओत' बैसल हइ—घरबालीक मोन तुरूछायल देखलक त' जमुना चुप्प भ' गेल । आ अन्तमे, वैह भेलै चारू बीस टाका तिरपितक घरबाली के सूइद तरे द' अयलै ।

ओ रुपया अयना तीन मास करीब भेलै त' फेर एगो चिट्ठी अयलै, आ तकर बाद आइ तक किछु नहि । साल बीत गेलै, मुदा किछु कतहु नै । चिट्ठी पर चिट्ठी लिखै बेटाके, अन्तमे बेरन सेहो देलकै, मुदा कोनो उत्तारा नहि ।

निर्मलीवालीक मोन अन्देशाय लगलै । ओकर बेटा त' एहन नै हइ तखन एना सुरता किए बिसरा गेलै । चिन्ता स' मन ठ'र नहि लै, राति-राति भरि सिदिर-बिदिर सोचिते रहि जाय, मन खोटकै त' कोढ़ घरघराय लगै, मनके थोर करय—'जय बरहम बाबा, जय मकसूदन—नाथ ।

एक दिन एहिना मन चितिर-बितिर करै, घरबला थोड़बे दूरा पर अपन चीलमक जोगारमे रहै । घरबाली दिस ताकि बाजल—"छौड़ा गेलै से जेना मुँहछी मारि देलकै, ओकरा बलू हमरा आउरीक धीयान किए रहतै, मौज मार' गS ।

"चुप्प रहउ एकरे नहाँइत नै हइ, अपने चीलम फूकि-धूकि करेजा डाहैत रहउ । हम त' ओही बेर कहलियै से के मानै'ए । सौंसे दियामान बढ़बS गेल जे रुपया आयल । घोल भ' गेल । ककरा ने की होइ हइ, हम आउरी शबदो बुझं हीअइ ? कोनो दाय-मायके हमर नीक नै देखल भेलै ।

"रवउ तोरीके, हम घोल केलिऐ ? एकरा त' माथा चनकि गेल हइ । किए जाय देलकै ?"

निर्मलीवाली चुप्प भ' गेलि, मुदा मोन जे टङलै से घड़ी पहर घड़ी कनिते रहलि ।

एहि बीच पंजाबमे काण्ड भेलै । सौंसे हल्ला भ' गेलै जे पंजाब जे ज'न गेलै तकरा पंजबिया सभ मारि देलकै । निर्मलीवाली सुनलक त' जी-हाथ हरा गेलै । सभके पुछने घुमै—राजस्थान पंजाबेमे हइ ? कतबो लोक कहै, बुझबै जे—पंजाब दोसर राज्य छियै, मुदा एकर कमजोर भेल मोनमे होइ जे—बलू परातारैनै हइ ।

एक दिन बड़का टोल गेल । सुनने रहै पचकौड़ी सिंहक बड़का बेटा जे राजस्थान रहै छै से अयलै'ए । ककरो पुछलकै त' कहलकै—देखै नै छीही वैह त' दलान पर बैसल छथिन । मोन त' सरबेधिया चिड़ै सन कच्छमछाय लगलै—कोना क' पूछब ? बड़का लोक, धाक होइ, एकबेर भेलै घरबलाके पठा दै, मुदा मन कोना मानितै ? सहटल-सहटल दलानक कोन लग ठाढ़ि भेल आ अपन धाकके तोड़लक—बौआ अइ, इहो राजस्थाने रहै छथीन ?

ओ बात बुझि गेलै, कनिये काल पहिने जमुना आयल छलै—हँ, हँ, चिन्ता नइ कर, सभ ठीक छौ । कहिलियै'ए त' जमुना के पता द' दैले, हम खोजि लेबै । ओत' कोनो गड़बड़ी नहि छै ।

निर्मलीवालीक मोन एतबे बातमे शीतला उटलै जेना—ई बौआ ओतै रहै छथीन, ई नै झुठ कहथिन । फगुनियाँक ममता ओकरा पर उमरि उठलै, आँखि डबडबा गेलै । इच्छा भेलै जे अइ बौआ सँ खूब गप्प करिते ? परन्तु पैघ लोक स' ओतबे बहुत । बेसी काल ओना तकितो रहतै त' लोक किछु आने सोचि लेतै । आहिस्ते विदा भेलि ।

राजो सिंह कहलकै—"के छैं, जमुनाक बहु, की पुछै छ'ल' ? ओ । सार सभके राजस्थानोमे पंजाबे सन मारितय तखन ने हिस्सक छुटितय; हँ हौ सभ भागि जाइ'ए, कहै छिअ' अषाढ़मे ब'न बेतरैक गाममे कुहराम मचि जाइ छै ।

निर्मलीवाली अ'ढ़ स' सभटा गप्प सुनलक रास्ता पर केओ जाड़ैन फाड़ै छलै, से ओकरा भेलै होइ कुड़हरि जाड़निमे नै ओकरे छाती पर खसि रहल होइ, भेलै जे उनटि क' बहुत किछु कहै राजो सिहके मुदा ''।

राजस्थानक समाचार सुनिक कनियें आश्वस्त त' भेल, मुदा कोढ़ जे उनटल रहै से सुसकै सरियैतै ।

राति दबाक आङन अयलै जमुना, पैर हाथ धो क' खाइ ले बैसल फेर अखरे नोन रोटी देखि क' मोन बिदैक उठलै आ गुनगुना क' बाजल—डोको-तोको देखितै, कोनो आरि-धूरमे से नै ।

निर्मलीवालीक मन लोहछि उठलै । राजो सिहक गप्प मनमे त' करै, ओकरा त' नै किछु कहि भेलै से घरवाला पर बरसि पड़लि—हँ, हँ, अइ मरद आउरके लाज होइ हइ, बहुके लोक गाड़ि पढ़ौ त' आर सुआस बढ़तै, हमरा बुते नै हेतै ककरो आरि-धूरमे गेल । रूचि खुजै छै त' किए ने अपने अनै छै ।

''चुप्प रहतै कि नइ, खाय देतै कि ?

निर्मलीवाली डरा गेलि, कहू खेनाइ पर स' उठि नै जाय, चुप्प भ' गेलि कने-काल दून दिस चुप्पी रहल । जमुना चुप्प-चाप खाइत रहल । खा क' पानि पीलक, घरवाली दिस तकलक—''आइ नव गामवाला पहुंना भेटल रहै, तैं बलू लेट भेलै । ओ कहैत रहै जे लड़का देखि क' अयलाहक से करबह की नै, से लड़काक बाबा पहुनाके तंग केने हइ, कहाँदन ई छौड़ीके देखिक' जे गेलै बुढ़वा से रट लगेने जे बलू हम वैह पुतहु करब । लड़को हइ से त' छौड़ीक भाग होइतै, पहुना कहैत रहय जे परसू तीन हजारके एकटा पाड़ी तरे महींस लेलाक'ए, से जे करथिन गोड़िया ।

''त' ओइ दिन मोतिया माय के भतीजी हइ ओत कहाँ दिन कहैत रहै, कोदो खाय-पीवा क कम्मी नै हइ, त' क' लौ । जे हेतै से ।''—निर्मलीवाली ''तैं त' पहुने स' दू सय टाका लेलियै गऽ दूरा परहक आम क गाछ द' देलियै ।

''आम'क गाछ द' देलकै से फेर कोनो बगान हइ ?''

''आहि रे तोरी के, ई त' सुनतै नहि' ए बिच्चे मे टोनि देतै, छौड़ा गेलै से गेले हइ, की केना हइ, से देखब जरूरी नइ हइ ? आइ पचकौड़ी सिहक बेटाक भेंट केने रहै, मुदा ओकरा सभक गप्पक कोन, पैघ लोकक गप्प क थीर होइ हइ !''

''तहन की करतै ?''

''की करबै, अन्देशा नै होइ हइ, ओकरा परोछे मे अमिरती के घर क' देतै ? जा क' ल' अनै छियै, गामे मे खटतै, बुझलियै एत' दिक्कत हइ से नव आँखि वला हइतऽ एतै करौ ने दुख दूर, भागल फिरला स' हेतै ।''

तहन काल्हि नै परसू चल जाउ, देरी करतै त' सभ बूझि जेतै जे आम क गाछ बेचलकै'ए, सभ नंगो-चंगो क' क' छोड़ि देतै । जाउ तखन लोक बुझतै । एखनी तुरते गाछ नै ने कटतै ?''

''नै, से त' कहलक'ए जे फगुनियाँ पाइ आन' त' द' दीहे' ।''

''से त' पहुना के नीक लोक मे भाङट नै हइ ।''

से आइ जमुनो के गेला तीन मास सँ ऊपर भ' गेलै । निर्मलीवाली सोचैत-सोचैत सुखा गेलै'ए । एते दिन बेटे क चिन्ता छलै । आब घरवाला गेलै त' सेहो सैह । मन घोर भेल रहै छै । अहू मे पेट की मानल जाइ छै ? दूनू माय-धी टहलि-टहलि क' लोक' क अरी-खरी काज क दैत छै तहन कहुना क' गुजर चलै छै । काल्हि तिरपितेक टाट लेबैत रहै । सौंसे देह दर्द करैत रहै । अमिरती कतबो मना केलकै जे माय गइ तों नै जो, मुदा माय कोना मानितै ! से दूनू माय-धी जखन टाट लेबि क' समाप्त केलक आ बोनि लेबा'क ले तिरपित घरवाली के कहलकै ''गिरहतनी से कने हले करथुन एतऽ स' जेबै तखन पिसबै आ रोटी बनेबै ।''

"अँय गइ, जनकाक बहु, तोरा वजैत लाज नैं होइत छौ, बेटा गेलौ घरवला कें सहटौजें आ बोनि मंगै छै ?" तिरपितक घरबालीक मोन रंगि गेल छलै ।

"बोनि नै लेबै त' खैबै की ? गिरहतनी ओकरा हम पठेलिए ! की करथिन हमर कपारे ····" कोढ़ फाटि गेलैक ।

'गइ एत' अलच्छ सन नहि कान, आ कि पाइ देबा क नेत नै छौ ।"

एना किए कहै छी गिरहतनी बलू रुपया की नइ देब........ ।"—कहैत निर्मलीवाली उठि गेल आ बेटी के कहलक चल गइ—"हमर कपारे खराब हइ । " गिरहनी त' आर जोर-जोर स' बाज' लगलै । साँझ मे कतौ स' साग तोड़ि क' अनलकै अमिरती, माय कहलकै एकटुल्ली मे देखहक कनेटा लता मे कत खुद्दी हेतै, भूजि क' खालय । साग रह' दय कांल्हि करिहक । हमरा एखन स' नइ टोक' मोन खराब अइ । अमिरती डरे खर आनि क खुद्दी भुजलक आ खाय लेलक । ओकरो खेबाक मोन नै रहै मुदा नै खायत त' माय मारि बाजऽ लगितै ।

काल्हि साँझ जे निर्मरीवाली पड़ल छल से अखन जा क' रौद मे आबि बैसलि । भरि राति कनिते अछि आइ कतौ काज नहि कर' गेल- 'सम दिन काजो की लगै हइ ?' केहन ई नगरी हइ, आ हमरा आउरी स' लोक काजे कोन करेतै ? वैह त' भेलै अरी-खरी । केहन भेलै ई सभ, एक त' देबा गरीब कैलकै ! आ गरीबो भेलै त' एहन जाति किए भेलै जे लोक छूल पानियो ने पीबै हइ ? आइ ज' धानुको-कियोट रहितै त' दस घर पानि' ए भरि क' गुजर चल लेतै ?—मोने-मन सोचत रहलि आ कनैत रहलि ।

आइ-काल्हि एहिना सन रहै'ए । कखनो देह सुन्न लगै जेना देह आब उठबे ने करतै । एहि बीच ककरो अपसगुन सुनै छै तं' कोढ़ आर धक् स' मारि उठै छै ।

"माय गइ, बथुआ साग उसनलिऐ से कने छिपा मे नोन सानि क' दीअउ ।"—डराइते बाजल अमिरती । आइ-काल्हि कनियो टा बात पर माय बिगड़ि उठै छै । एहन किए भ' गेलै' ए से अमिरती बुझै छै । ओ बुझै छै जे ओकरे खातिर एकर भाइ परदेश गेलै, एकरे खातिर एकर बाउ ओकरा लाब गेलै आर बात त' तर परि गेल छै । मुदा अमिरती की बाजत ? ओकर कोन सक्क छै ? परांक्ष भेला पर भरि पोष कानि लै' ए, सेहो चौंकायले जे कहु माय देखि ने लिअय ।

"ठहरऽ, किछु खाइ के इच्छे नहि होइ' ए, लगै'ए जेना कंठ लग किछु बैसल अइ ।"—बेटी दिस तकलक, बेटी क हकोप्रत्यास भेलि देखि मोन कचोटि उठलै । मोन पड़लै केहन खन-खन बजैत रहै छलै । इहो केहन खुशी रहै छलि । कहियो क अमिरती पूछै "छलै माय गइ, ओ फकड़ा कही जे नानी कहै ।

"कथी गइ" ई अनठियबैत कहै

वैह मोहरा माय गई····मोहरा माय ।"

तहन ई फकड़ा पढ़य—मोहरा माय गइ मोहरा माय,

कतबो करबें, कतबो खटबें डोका फोड़ि-फोड़ि
पड़तौ खाय ।

माछ पकड़ि क' आड़ि पर रखबें, ल' चिलहोड़िया उड़िजाय ।
ज' नै मारबे, ज नै देखबें, डोका फोड़ि-फोड़ि पड़तौ खाय ।

से आइ निर्मलीवाली के मोन पड़ै छै । आ होइ छै जे जेना वैह मोहरा माय रहय, मुदा आइ त' एकर एहन दिन छै जे डोको नै भेटै हइ । आइ एकरा होइ छै जेना सभ चिल्होड़िया होइ आ एकरा पर झपटै हइ, जकर-जकड़ किछु धारने छै से नंगो-चंगो केने रहै छै । ओइ दिन तिरपितक घर-वाली तेहन-तेहन गप्प कहै जे कोढ़ मे सट्-सट् मारै । कहैत-कहैत कहलकै ने—हम नै जनियौ जे बेटा, घरवला अबौ वा नै अबौ, हमरा पाइ द' दे, हमर सरोजक बियाह छी, बड़ पाइ के काज अइ,—तैं पर कने एकरो बजना

गेलै जे हमरो अमिरतीक लगन करै के हइ, एते गप्प पर कोनो टा दशा बाँकी नहि रखलकै—तोहर बड़ सख, "तोहर बेटीक बियाह हमर सरोजक एकें, तों छोट लोक क कोन छौ," आर किदन कहाँदन ढेर कहलकै। निर्मलीवाली चुप्पे-चाप चल आयल। मोन त' केरा पात जेना झांट मे फटै छै तेना फाटि गेलै। बेर-बेर होइ छोट लकक जिनगी, जिनगी नै होइ हइ, एकरा आउरी क बेटीक वियाह नै होइ हइ।" मोन मे भेलै जते ई सभ सहै हइ तते आर लोक एकरा सभ के पीसै हइ, पेरले के पेड़ै ने आसान लगै हइ ने !"—बेटी दिस तकलक—"काल्हि जनका घरवाली गाड़ि दैत रहउ, ओकरे मे बथुआ साग तोड़ने रहक ?"

"हँ, किए ? ओरिया के त' तोड़लियै, एकोटा जजात कहाँ पीचल गेलै से !"

"की करबहक, दुनिये कीदन भ' भ' गेलै' ए, हम आउर बच्चा रही माथ जरे ज इ, गाम क कियो देखै त' कहै—के छियै मुसहरनी अउर, तोड़ दही साग-ताग तोड़ै हइ, तोड़तै नै त' खेतै की ? से आइ, लगै' ए सभटा उनटि गेल हइ।"

"माय गइ, काल्हि देखलियै पूरनदाहा क बान्ह बन्है हइ।"

"बान्ह दहक, पैघ लोक खुशी हूअ ! हमरा आउरी के की ? ओइ साल बाउ आ भाइ त' खटल रह' सभटा ठीकेदरवा खा गेलै।"

"से सभ खाय देलकै तैं ने ? सभ मिलि क मारितय से नै।"

"से रहितै त' एहन दिन रहितै ? माय बेटी क गप क समर्थन केलक। गाछ पर कौआ ··· का ···· का ··· ···· क' उठलै। कोनो अपसगुन क आशंका सँ निर्मलीवालीक फेर कोंड़ धरधरा उठलै।

"हा····; मार रच्छसा के, कोना करैयै, मार गइ अमिरती, अइ रच्छस कौआ के मार।

"हा ··· हा ···· अमिरती ढेपा ल' क' कौआ के मार' लागलि। तखनै सुकनाक नन्हकिरबा दौड़ल अयलै—'काकी गइ कक्का अबै हउ।' धरफरा उठलि माय-धी; दूनू गोटय बाहर आयलि।

"गइ अमिरती असगरे हुउ बाउ !"

हँ गइ—कहैत अमिरती बाउ जिम्हरे अबैत रहै उम्हरे विदा भेलि। निर्मलीवाली सेहो उम्हरे सहटलि जा रहल छलि, मोन आशंका स' भरल जा रहल छलै—एहन किए लगै हइ ? कि भ' गेलै ? फगुनियाँ के नै देखै हीअइ ! हे गोरैया ! ! कोढ़ दहला रहल छलै। जेना कोनो गाय के गारा मे गरदामी फँसि जाइ छै, तहनि ओ अपन चरवाहा के अबैत देखि जे हूम्हरैए तहिना निर्मलीवालीक मोन हूम्हरि रहल छलै "कखन लग औतै 'ओ' आ नीक बात कहतै।

घरवला आ अमिरती लग आबि गेलै। घरवला एकरा दिस सँ नजरि घुमा आङन बढ़ल जा रहल छलै। ओकर वगय-बानि आ मुँहठान एकदम बुझा रहल छलै जे निश्चित किछु भ' गेलै' ए।
अमिरती बाप के कोना किछु पुछि तै ? धाक होइ छलै ओहो पाछू-पाछू अन्देशाइत चलि अबै छलि। माय लग आबि क' माय के तकैत ठाढ़ भ' गेलि।

आब नै रहल गेलै निर्मलीवालीके—'किए ने किछु बजै हइ ? फगुनियाँ नीके हइ कि नइ ··· ?"

"नीके किए ने रहतै ?"

"तहन एहन मुँह किए केने हइ ? कि भेलै ? अयलै किए ने ?" किछु ने उत्तर देलकै जमुना चूप्प-चाप्प आङन आबिक' बैसि गेल, किछु काल तँ निर्मली-वाली बुझय आब कहतै मुदा घरवला के किछु नहि बजैत सुनि मोन लोहछि उठलै "किए ने बजै हइ, की भेलै ?"

"छौड़ा नै औतै ?" जमुना बाजल।

"ऐँ ···· ···· सन्न द' लेलकै निर्मलीवाली के ।

"जमुना कहऽ लगलै राजस्थान जखन पहुँचलियै त' कते पुछाड़ि केलाक बाद रामचरन भेटलै, फगुनिया द' पूछलियै किछु कहबे नइ करै, तखन जा क' कहलकै जे छौड़ा तऽ नाक कटा देलकै 'की नाक कटा देलकै"—साफ-साफ जहाँइत किए ने बाजि होइ छै ?

"की बजतै ? बाजै के बात हइ, ओ छौड़ा एकटा हलालखोड़नी क संग फाँसि क वियाह क' लेलकै । ओइठाम स' दोसर बाजार चल गेल । एक दिन । एक दिन कने अझक्के देखलि'ए··· । सरबा सभटा बौरा देलकै । फेर कतबो पता लगेलियै नहि भेटलै ।"

निर्मलीवाली के ठकमूरी लागि गेलै । अमिरती के होइ खूब जोर स' कानय लागय—'भैया एना किए केलकै !

एक दिन रामचरन के भेटलै त' कहलकै बाउ के कहियक चल जाइले, हम आब गाम नहि जायब ।" रामचरन आरो आरो बात पुछ' लगलै । त' कहलक डेरोक पता नहि कहलक । कएक दिन हम रामचरन मिलि क' तकलियै नइ भेटलै ।

ओही दिन ई देखलकै त' दौड़ि क' पकड़ितै से नइ ?'—निर्मलीवाली पुछलकै ।

इह जाय कि हम किछु कहियै अे खूब दौड़ि क कत' दिन चल गेलै । एकदम सनकल सन लगल—जमुना बाजल ।

'देह-दसा नीक हइ की ?'—मायक कोढ़ दहलि रहल छलै ।

'से किए ने रहतै ? से त' बलू कुम्मर' सन लगै हइ कोनो बाबू भया स' मुँह खराब छै ? नीक कपड़ा-लता छलहि'ए ।

निर्मलीवालीक धाहैत मोन पर देने एकठा हल्लुक बसात बहि गेल ।

एक दीर्घ श्वास लेना गेलै जमुना केँ बेटाक ममत्व धोखरि रहल रहल छलै—'ओ जुलुम क' देलकै चण्डलवा । की की आसरा लगौने रहै !'—हिचुक' लागल जामुन ।

'ऐँ ई कनै किए हइ ? मरद हइ कि की हइ ···· अपन स्वांग रहतै त' सभटा हेतै । ई ओकर बाप छै से नइ बुझै छै, ओ जत' रहत सुखी रहउ । तैँ कनतै किए । हम दूनू व्यक्ति अपन जिनगी देख लेबै । देखा देबै ओकर हम सब की करै हीअइ । ई हिम्मत राखउ । अमिरती क लगन करक' हइ बहुत काज करैक हइ ।"—निर्मलीवाली अपन घरवला के हिम्मत देब' लागलि । जामुनो के भेलै ठीके कहै छै निर्मलीवाली । आब किछु फेर स' बढ़ि क' करक छै । गेठुल्ला दिस तकलक—टाला कोदारि राखल रहै । दूनू हाथ फरकि उठलै ।

गाछ पर टूटा चिड़ै अपन उजड़ल खोताकेँ नव' क' बना रहल छल ।

★

डेग लैत एकटा जिनगी

—टिफिनिक घंटी भेल रहैक तखन। विद्यार्थी सभ वर्गसँ उछलैत-कुदैत अपन-अपन कोठरीसँ बाहर आयल। केओ टिफिन-बक्स खोलि जलखै कर' लागल, केओ आगाँक मैदानमे खेलाय लागल। शिक्षक लोकनि चॉक-डस्टर राखय कार्यालय दिस जाय लगलाह। ओहि पब्लिक स्कूलक प्रधान शिक्षक जे प्राचार्य कहबैत छलाह, जेना कोनो कछमछी लेने एम्हर-ओम्हर आँखि फिरबैत ककरो ताकि रहल छलाह, तावत नजरि पर पड़लनि मोहन।

— मोहनकेँ अपना दिसि अबैत देखि आतुरताक सङ सम्बोधित कयलथिन —"मोहन बाबू ! अपनेकेँ सचिव महोदय बजौलनि अछि। टिफिनेक अवधिमे भेँट क' लियनु। कोनों आवश्यक काज छनि प्रायः........

—ई गप्प सुनिते सभ शिक्षकक ध्यान मोहन पर केन्द्रित भ' गेलनि। कारण जखन-जखन प्राचार्य के छोड़ि क' आन शिक्षकक बजाहटि होइत छैक तँ कोनो-ने-कोनो संकट ओहि शिक्षककेँ भोग' पड़ैत छैक तेँ सभक मोन आशंकित भ' गेलनि।

—चॉक-डस्टर राखि मोहन जखन कार्यालयसँ बहरायल तँ सचिव आ प्राचार्यक मुँहलगुआ भोला झा आ विलट मिश्र एकहि बेर ठहक्का मारलक— आइ बुझथु यार ! बड्ड न्याय छँटैत रहै छथि ! ! हाऽ हाऽ ऽ हा ऽ ऽ ऽ....

— "आउ मोहन बाबू ! बैसू !"

—सचिव महोदय वरंडा पर एकसरे सिकरेट धुकैत जेना मोहनेक प्रतीक्षामे रहथि तहिना मोहनकेँ देखिते कहलथिन आ उठि कऽ मोहनकेँ अयबाक संकेत करैत अपन कोठरीमे ढुकलाह। कोठरीके भीतर किछु क्षण चुप्पी रहल।

—सचिव महोदय बैसलाह आ अत्यन्त गम्भीर होइत मोहनकेँ कहलथिन—

"अहाँ ई खूब जनैत छी मोहन बाबू, जे हम कोन परिस्थितिमे अहाँकेँ रखलहुँ। बहुतो गोटे पैरबी ल' क' आयल रहथि, मुदा सभकेँ छाँटि क' अहाँकेँ रखबाक पाछाँ हमर उद्देश्य ई छल जे गरीब लोकके बेसी सुविधा देल जाय। ई स्कूल हम व्यापारिक बुद्धिसँ नहि, जनकल्याणक हेतु खोलने छी। एहि ठामक शिक्षाक कुव्यवस्था आ बेरोजगारीक दुनूक समाधानक भावना एहिमे केन्द्रित अछि। अहाँ पर हमर ध्यान एहि दुआरेँ गेल जे हमरा पता छल अहाँ बेसी आर्थिक संकट मे छी।"

—"जी नहि, हमर अपने 'इण्टरव्यू' लेने रही आ हम"........।

—"हँ लेने रही। परन्तु एकटा बात अहाँ बुझियौ जे हमरा एहि स्कूलक लेल बड़का विद्वानक आवश्यकता नहि अछि। मात्र छोट-छोट बच्चाकेँ पढ़एबाक छै"....

—"सर ! अपनेक ई सोचब ठीक नहि अछि। बच्चाकेँ पढ़यवाक लेल बेसी योग्यता आ धैर्यक आवश्यकता छै !"

—"कथीक आवश्यकता छै आ कथीक नहि से हमरा अहाँसँ सीख' नहि पड़त ! सचिव महोदय आँखि गुड़ारैत चुप्प भ' गेलाह। कनेक काल धरि दुनू दिस चुप्पी रहल।

— मोहनकेँ मोन पड़ि गेलैक ओहि दिनक गप्प जहिया प्राचार्य महोदयक एकटा काज क' देने रहनि ओ आ ताहि पर प्रसन्न भ' अपनत्वक भाव देखबैत ओ कहने रहथिन—"मोहन बाबू ! हमर सचिव महोदयक विचार छनि जे बेसी-सँ-बेसी महिला वर्गकेँ राखल जाय आ किछु ओहि व्यक्ति सभकेँ जे 'रिटायर्ड' रहय कारण ओ सभ कतहु भागत नहि आ किछु बाजि नहि सकत, संगहि ओ अनुभवी शिक्षक रूपमे काज सेहो नीक जकाँ करत। तत्काल हम हुनक एहि विचारकेँ नहि मनलियनि।"

— मोहन ओहू समय शोषणप्रवृत्तिक कृपाक शब्दक अर्थ बूझि गेल छल। आइ फेर सचिव महोदय दोसर तरहेँ बुझा रहल छलथिन।

—"अहाँ हमरा प्रशासनमे दखल जुनि दी। आन शिक्षकसँ सरोकार अहाँकेँ कोन अछि ? अहाँ सभ गोटेकेँ 'सेकेन्ड्री एग्जामिनेशन कोचिंग'मे भाग लेब' पड़त। एहि लेल सभकेँ अलगसँ दस टका भेटतनि। हँ व्यक्तिगत रूपेँ प्राचार्य अहाँकेँ अलगसँ किछु देथि तँ से भ' सकैत अछि। एहिमे अहाँ नेतागिरी क' प्रशासन दृष्टिमे अपराधी बनबाक चेष्टा नहि करू ! अहाँ लोकनिक शिकायत अछि जे स्कूलसँ कम पाइ भेटैए, से ईहो बूझि लेबाक चाही जे एहि कारणेँ अहाँ लोकनि 'ट्यूशन'मे प्रर्याप्त कमाइत जाइत छी। बेस, अखन जाउ आ अपन स्वीकृति पठाउ !"

—मोहन एहि पर किछु कह' चाहलक परन्तु सचिव महोदय ओकर पीठ ठोकैत कहलथिन पुनः—"अहाँ एखन युवक छी ! भावुक होयब स्वाभाविके। थैंक्स ! ठीक छै तँ एखन जाउ। शिक्षक लोकनिकेँ मोल्ड क' क' स्वीकृति पठाउ। हमरा अहाँ पर विश्वास अछि। 'यू आर इन्टेलिजेन्ट·······।" सचिव मुस्किआइत दोसर कमरा दिसि चल गेलाह।

—मोहन कमरासँ बहरा भ' मैदानमे आयल। स्कूल दिस तकलक। 'टिफिन'क समय समाप्त भ' गेल छलैक। कार्यालयमे आबि क' 'रुटीन' देखलक —स्टैन्डर्ड वन'मे 'क्लास' रहैक। ओ झटकारैत क्लास दिसि विदा भेल। वर्गमे जा क' ओ चुपचाप बैसि गेल। वर्ग आबि क' एना बैसल रहब ओकरा अपराध सन बुझैत छैक मुदा आइ ओही अपराधबोधकेँ अंङेजि रहल छल। ओकर आँखि खिड़कीसँ बाहर जेना किछु जोह' लगलैक।

पब्लिक स्कूलक शिक्षासँ एकटा असमानताक जन्म होइत छैक। पाइवलाक विद्यालय, जकरा मोहन कहियो मोनसँ पसिन्न नहि कयलक, से ओकरा अपनहि बिसा गेलैक। कखनो क' होइत छैक छोड़ि देअए ई स्कूल।

मुदा मोन पड़ि जाइत छै—दू टा धीआ-पुता। पत्नी। बूढ़ि माय आ बाप। पढ़ब छोड़ि क' बैसल ओकर छोटका भाइ·······। जँ ओ एहि पब्लिक स्कूलकेँ छोड़ि देत तँ कोना चलतै घर ·····कोना जीवित राखि सकत ककरो·······।

ओ सोचैत अछि जे केहन परिस्थितिमे ओ धयने रहय ई स्कूल······ चारू भाग औनाइत। इन्टरव्यू दैत-दैत तबाह भेल। जखन ओ मनमारि क' बैसल रहय।

एक दिन कालेज-गुरु टलथिन डा० रामजी ठाकुर आ बैह कहने रह-थिन—'मोहन, यदि शिक्षाक महत्व रहितै, योग्यताक आधार पर सभ किछु होइतै तँ कहिया ने भ' गेल रहैत नोकरी···। अहाँ एकटा काज करू—रतनपुरमे एकटा 'पब्लिक स्कूल' खुजलैए। ओत'सँ शिक्षकक पदक लेल विज्ञापन भेलैए। अहाँ जँ प्रयास करी तँ ओहिठाम जोगार लागि सकैए ····हमरा विश्वास अछि····।

—"हमरा ओहिठाम होएत ?"

– "हँ। अवश्य होएत। एकटा कारण छैक। देखू अन्य योग्यतावला जे अछि ओ एतेक कम वेतन पर नोकरी किए करत ? तखन तँ ओतै अहीँ सन कुव्यवस्थाक मारल। शिक्षित बेरोजगार लोक सभ आ ताहिमे योग्य व्यक्तिक चुनाओ होएतै···हमरा लगैए अहाँकेँ होयबे टा करत।"

से, मोहनकेँ एहि स्कूलमे नोकरी भेलैक। दरमाहा भेट' लगलै—एक सौ टाका। दस बजेसँ साढ़े तीन बजे धरि वर्ग चलै आ तकर बाद शुरू करय ट्यूशन—तीस-पैंतिस टके घंटा।

ट्यूशन ओ बड़ मोनसँ शुरू कएलक। छओ बजे भोरसँ दस बजे राति धरि·······। एही बीच स्कूलक पढ़ौनी करय आ स्नान, भोजन सभ किछु····। भोरमे तीन टा साँझमे पाँच टा ट्यूशन, बस ! एहिसँ बेसी पार नहीं लगैत छलै। रातिक दस-एगारह बजे जखन डेरा दिस अबैत छल तँ बाटमे कोनो होटलसँ खयने अबैत छल।

डेरामे अबैत छल तँ कहियो तुरन्ते निन्न भ' जाइत छै आ कहियो क' पहिने जकाँ निन्न हेरा जाइत छै। तखन खर्चक हिसाब जोड़ैए। कुल साढ़े चारि सय टाका।

गाम परक खर्च । अपन भोजन, डेराक भाड़ा आ साँझ-भिनसर दू खिल्ली पान ! आमदनी मात्र साढ़े तीन सय । सोचैत अछि जँ पान एकदम छोड़ि दैत तँ आठ आनाक दरसँ एक मासमे पन्द्रह टाकाक बचत क' सकैत अछि । चाह तँ भने पहिनहि छोड़ने अछि । दाढ़ी आब पन्द्रह दिन पर बनबाओत ···मुदा, कतबो कटौती करत तँ पचास टकासँ बेसी नहि पूरि सकत ।

फेर सोचैत अछि, यदि कोनो 'टयूशन' चारि बजेसँ होइतै तँ 'वजट' किछु हद धरि पूरा भ' सकैत छैक । मुदा ओतेक भोरे के पढ़तैक ?

परसू चूड़ा मिल वाला अपन बेटा द' कहने रहैक । ओकर बेटा मैट्रिकमे पढ़ैत छैक । भिनसरेक चारि बजेसँ पढ़ैत तँ ओकरो नीक होइतैक । बात ओ मानियो सकैत छैक । कहबै भिनसरबामे पढ़लासँ सभटा बात स्मरण रहैत छैक । थोड़े बेसिये समय द' द' पढ़ा देतैक तँ काज बनि सकैत छैक ·· पचास टाकासँ कम नहि देबाक चाहियैक ।

मोन कनेक सन्तुलित होइत छैक तँ मोन पड़ि जाइत छैक पत्नीक रत्ती-रत्ती भेल नूआ । धीआ-पूताक उघार देह, बाबूक दबाइ आ पाइक अभावमे पढ़ाइ छोड़िक' बैसल भाइ····।

मोन विचित्र जकाँ औनाइत रहैत छैक । कछमछाइ-कछमाइत राति बितैत छैक आ भोर होइत फेर वैह रोजरमचाक काज ···।

एम्हर सभटा छुटि गेलैक—पढ़ब, लिखब एतेक धरि जे अखबारो धरि नहि पढ़ि पबैत अछि । कखनो क' जखन एहि सभ पर ध्यान जाइत छैक तँ होइत छैक जे ओकर जिनगी इनारक पानि भ' गेलैक अछि । परन्तु धैर्य एहि बात पर होइत छैक जे कहुना परिवार तँ चलैत छैक····। मुदा एना कहिया धरि ? बड़ी काल धरि सनसनाइत रहैत छैक माथ । मोन तँ सदिखन अपस्याँत रहैत छैक । ताहि पर कहियो-कहियो क' केओ आबि क' ओकर घाओ पर नोन छीटि जाइ छैक ।

ओहि दिन डेरासँ झटकारैत स्कूल अबैत रहय । अस्पताल ल'ग हजामक घर छै, ताहि ठाम आबि क' ओ ठमकि गेल । केओ ल'ग अबैत कहने रहै—परनाम मास्साहेब ।

ओ पाछाँ घूरि क' तकलक—वैह हजाम रहैक । ओकर नाम एकरा नहि बूझल रहैक । मुदा, ओकर आर्द्र स्वर एकरा भीतर धरि छूने रहैक ।

"मास्साहेब, देखियौ जे हमर नमकिरबा तीन सालसँ सरकारी स्कूलमे पढ़ै हइ, मुदा एखनी तक अ-आ सेहो नीक नहाँइत नहि अबै हइ । मास्टर आउर की पढ़बै हइ से की जान' गेलिऐ ! अहाँ सभ नै पढ़ा देबै ओकरा · · ?"

मोहन मुस्किआइत कहने रहै,—"किए ने पढ़तै नाम लिखा दिऔ !"

—"कते पाइ लगतै ?"

—"सभटा जोडि-जाड़ि क' पचहत्तरि टाका ।"

—'अयँ ? पचहत्तरि टाका ? जाउ-जाउ, बुझलहुँ · · अहूँ सब धनीके लोकक बेटा-बेटीकेँ पढ़बै छिए खाली · · · । गरीब-गुरबाक गुजर आब अइ संसारमे नै छै । सभ पाइएक यार अछि हुँहू !', ठाकुर भनभनाइत अपन आँगनमे ढुकि गेल ।

मुदा, मोहनक डेग किछु काल धरि ठमकले रहलैक । ओकरा भेलैक जेना कोनो पाथर छिटकि क' ओकर करेजमे लागि गेल होइक · · · । माथ पर पसेना बुनबुना गेलैक ।

ठाकुरकेँ ओ तत्काल किछु ऊत्तर नहि द' सकल रहय । अपन विवशता पर ओकरा क्षोभ भेल रहैक ओहि दिन आ ओ सोचने रहय—आइ जँ सरकारी स्कूलमे नीक पढ़ाइ होइतै तँ एहि महग स्कूल सभक कोन जरूरति रहतैक ! सभठाम शोषण छैक । नहि जानि एहि शोषणसँ कहिया धरि मुक्ति भेटतै लोककेँ !' अपन विवशता पर अपने हँसि क' कने मोन हल्लुकेबाक प्रयास कएने रहय ओ ।

ओकरा मन पड़ि अयलैक पत्नीक ओ गप्प—"अपने त' भरिदिन धीये-पूता सभकेँ पढ़बै छी आ अपन धीया-पूता सभ दूरि भेल जाइए तकर सोह अछि ?"

पत्नीक एहि गप्पक उत्तर ओ किछु नहि द' पाबि सकल रहय । पड़ल-पड़ल सभटा सुनैत रहल । ओहिकाल अपन जिनगीसँ ओकरा घृणा भ' गेल रहैक । मोन अक्कत तीत भ' गेल रहैक । परन्तु से ककरा कहितैक ? कोना कहितैक ?

मोहन भारी मोने ओहि दिन जखन स्कूल पहुँचल रहय तँ प्राचार्य महोदय एकटा सूचना एकरा सोझाँ राखि देलथिन। ओहिमे लिखल रहैक जे प्रत्येक शिक्षकके भिनसर सात बजेसँ नओ बजे धरि 'सेकेन्ड्री एग्जामिनेशन कोचिंग' मे भाग लेब' पड़तैक। सूचना पढ़ि क' ओ जखन प्राचार्यसँ 'कोचिंग'क हेतु अतिरिक्त पारिश्रमिक द' कहने रहनि तँ ओ कहलथिन—स्कूलमे 'कोचिंग' चलतै, कतहु बाहर नहि आ स्कूलसँ तँ अहाँ सभकेँ भेटिते अछि।" तामससँ ओ लोहछि गेल रहय प्राचार्यक ई गप्प सुनि क'।

किछु कालक बाद ओ शिक्षक लोकनिसँ राय-विचार कएलक आ प्रतिनिधिक रूपमे प्राचार्यकेँ अपन फैसला कहलकनि—"हमरा लोकनि भिनसरमे 'ट्युशन'सँ सत्तरि टाका उपार्जित क' लैत छी। जँ से सत्तरि टका हमरा लोकनिकेँ भेटत तखने हम सभ 'कोचिंग'मे भाग ल' सकै छी अन्यथा नहि !"

ओ कतेको बेर शिक्षक सभक शोषणक विरुद्ध प्राचार्य आ सचिवकेँ कहने रहनि। चेतौनी देने रहनि। मुदा, पहिने सभ शिक्षकक समर्थन ओकरा नहि भेटैत छलैक। शिक्षक सभ डेरायल रहैत छलैक। मुदा एहि बेर सभ गोटे मोहनक संग द' रहल छलैक स्कूलक चपरासी सभ सेहो। मोहन ओकरो सभकेँ उसकौने रहैक आ कहने रहैक—"अहाँ सभ एना चुप किए छी ? अहूँ सभक शोषण एत' भ' रहल अछि। जे शिक्षक छथि ओ तँ ट्यूशन'सँ सेहो कमा लैत छथि। मुदा, अहाँ सभ तँ सेहो नहि क' सकैत छी। तखन एतेक कम दरमाहा पर अहाँ सभसँ स्कूलक अतिरिक्त 'कोचिंग'मे सेहो खटाओल जायत ?"

मोहनक ई गप्प सभकेँ नीक लागल रहैक आ सभ गोटे एकटा बैसार कयलक। बैसारमे मोहन सभकेँ उत्साहित करैत कहैक—"प्रत्येक शोषितक हृदयमे अपन शोषणक विरूद्ध आक्रोश रहै छै आ से अहूँ सभक हृदयमे अछि। तेँ हमरा विश्वास अछि जे अहाँ सभ निडर भ' क' अपन शोषणकेँ समाप्त करबाक लेल तत्पर रहब। हमरा लोकनिकेँ जँ स्कूलसँ हटा देल जायत तँ सभ एकहि बेर त्याग-पत्र द' क' एकटा दोसर स्कूल खोलि लेत। 'पब्लिक

कन्ट्रैक्ट' अछिए आ एहिमे गरीबो लोकक धीआ-पूता पढ़ि सकतै। तेँ फीस क'मे लेबै। एहि स्कूलमे ककरो शोषण केओ नहि क' सकतै।"

जेना पानि पीबाक लेल लोक पानिक बीच ठाढ़ हो आ चारु दिससँ बहुत रास महीस एकहि बेर धमार लैत पानि घोंकि रहल होइ, तहिना बुझयलै आइ मोहनकेँ सचिवक डेरासँ घुरैत काल। एह ! कतेक लोभ द' रहल छलै सचिव आइ ! एक मन होइ सचिवक गप्प मानि स्वयंकेँ लाभान्वित क' लेअय। मुदा, मोन बिलबिला गेलै। ओकरा पाछाँ बहुत रास लोक रहै, जकरा ओ संघर्षक लेल तैयार क' चुकल रहय।

ओकरा मन पड़लै अपन डाक्टर श्यामानन्दक गप्प। जखन ओ संघर्षक जिनगीक एकर सिद्धान्त पर प्रसन्नता व्यक्त करय तँ एकरा अपन 'पब्लिक स्कूल'क बात मोनमे उठि जाइक आ ई उदास भ' कहैक—"भाइ, एहि स्कूलमे लगैए जे सभटा नष्ट भ' जायत।"

ताहि पर डाक्टर कहैक—"मोहन, मनुक्खकेँ अपन स्वभाव नहि छोड़बाक चाही। किए तँ एहि बिना ओकर मौलिकता नष्ट भ' जेतै आ मौलिकतासँ अलग होएब कठिन छै। तेँ संघर्ष करबाक स्वभावकेँ बिसरी नहि ! अपन मनुक्खकेँ जियौने रही। एकरा बेची नै। 'पब्लिक स्कूल' एकटा ठहरावो थिकै। एहिठाम रहि क' बहुत रास काज करबाक अछि।"

अपन मित्रक गप्प पर ओकर ठोर बिहुँसा गेलैक। मोन किछु हल्लुक लाग' लगलैक। स्कूलमे प्रवेश करैत काल ओकरा मन पड़ि अयेलैक अपना पिता। जखन ओ कोनो तीर्थ यात्रामे पयरेँ जाइत छलाह। हुनक चेहरा पर अत्यन्त उत्साह रहैत छलनि। कतेको दुर्गम बाट रहैत छलैक मुदा हुनक उत्साह सभठाम हुनका सफलता दैत गेलनि।

एक क्षण लेल ओकरा भेलैक जेना ओहो आइ अपन पिते सन संघर्षक यात्रामे उत्साहित भ' गेल अछि। मोन आनन्दित भ' गेलैक।

ध्यान भंग भेलैक तँ ओ अपनाकेँ वर्गमे पौलक। बच्चा सब हल्ला क' रहल छलैक। ओकरा अपन अपराधक भान भेलैक। फेर ओ अंग्रेजीमे

पढ़ायब प्रारम्भ कएलक । मोने-मोन ओ सोचैत रहल, जँ सचिव सभकेँ एहि स्कूलसँ हटा देतैक तँ सभ गोटे अपन स्कूल खोलत आ ओहिमे अपन भाषामे धीया-पूताकेँ पढ़ाओत ।

साँझ खन स्कूलमे जखन छुट्टी भेलैक तँ सभ शिक्षक मिलि एकटा बैसार फेर कयलक । लिखित रूपमे अपने निर्णय सचिव आ प्राचार्य केँ पठा देलकनि । थोड़ेक कालधरि शिक्षक लोकनि अपन स्थिति पर विचार विमर्श करैत रहलाह ।

एहि बीच सचिवक हसबखाह चपरासी मोहनक हाथमे एकटा कागज थम्हा गेलनि । सभ ओहि कागतकेँ पढ़बा लेल आतुर होअय लागल । मोहन जे पढ़ि क' सुनौलकैक तकर अनुसार—प्राचार्य, भोला झा, विलट मिश्र आ दू टा चपरासीकेँ छोड़ि क' सभ गोटेकेँ स्कूलसँ हटा देल गेल छलैक ।

ई सूचना सुनैत सभक मोन धधकि गेलैक । सभ सचिवक डेरा दिस नारा लगबैत सभक संग उत्साह जगबैत दौड़ि गेल ।

एहि बीच मोक्षानन्द हाथ भँजैत गरज' लगलाह—"हम घोषणा करैत छी जे हमरा लोकनि आइसँ एहि स्कूलकेँ वास्तविक 'पब्लिक स्कूल' बनायब । पूरा क्षेत्रक लोकक सहयोगसँ ई एकटा जनवादी प्रवृत्तिक संस्थाक रूपमे एहि स्कूलकेँ सम्पूर्ण समाजक स्कूल बनायब ! आउ, सभ गोटे लक्ष्यक पूर्तिमे लागि जाइ• • •।"

मोहनकेँ भेलैक जे आब ओकर जिनगी संघर्षक नव डेग ल' लेलकैक अछि । मोनमे एकटा दृढ़ता अयलैक आ आँखि पर भविष्यक सफलताक आभास जेना नाचि गेलैक । तखनहि गुम्म भेल बसात अपन शीतलता लेने सिहकए लगलैक । दूर कोनो टेन जा रहल छलै····झ' झ'····काली······झ' झ'··· काली····: ···· ····।

★

शैलेन्द्र आनन्द

- तूतीक आलाप
- एकटा आर मर्डर केस
- अनुत्तरित प्रश्न
- उठ पुत्ता : पुरल-पूरल
- चिनगी

तृतीक अलाप

ट्रेन एक छोट छीन धक्काक संग रूकल आ रूकबाक संगे प्लेटफार्मक धोन्हीआयल प्रकाशमे ओ बाहर तकलक। गरम दूधऽऽ संतोलाऽऽ गरम चाह पान-बीड़ी-सिकरेटऽऽ आ ताहि संग दातुनऽऽ दातुनऽऽ केर सम्मिलित स्वर बातावरण मे आबऽ लगलै।

ओ शरीर मे किछु थाकनिक अनुभव करैये। आ' तें एकबेर शरीर कें धनुषाकारक' अंगैठीमोर लैये। सीट पर बैसल-बैसल मोन ऊबिया गेल छै। सर्टक जेब टटोलैए तँ ओहि मे गाम तक अयबा लेल एकटा टिकट आ' एकटा एकटकिया अभरै छै। ओ सोचैये जे बारह घंटा तँ गुजरि गेल, मुदा एखनो बारह घंटाक सफर बांकी अछि। एक बेर यदि ओ चाह पीबि लेत तँ मोन किछु हल्लुक भऽ जेतै। ओकर ध्यान प्लेटफार्मं पर फेरी लगाकऽ बेचऽ बला चाहवला दिस जाइ छै। ओ संकेत सँ चाहबला के लग बजा एक कुल्हर चाह लैये। एकटकिया नोट बढबैत छै तँ फिरता भेटै छै-चारि आना कैंचा। ओ चाहबलाक गलती बूझि ओकरा सँ कहै छै—"एके कप चाह छैक हौ।" आ चाहवला अपन करजनी आंखि एकरापर उठबैत कहै छै-'हाँ, इसलिए एक कप चाय का दाम काटे हैं। अभीए से ठकभूड़ी लगता है? आगे तो एक रूपया से कम मे मुहों न बोलने देगा।" आ' गरम चायऽऽ गरम चायऽऽ करैत चाह बला आगू बढ़ि गेल। आ' ई घुँआइत चाहक चुस्की लैत, चाहवलाक कथन पर, मोन कें मथैत रहल। ओकरा होइत छै जे चाहवला कोनो मैथिली क्षेत्रक जरुर छी, भले ओ पेट भरवाक हेतु एहि टीशन पर आबि काहे-कू है बजैत, दिन बिता रहल हो। ओकर आँखि आ ओकर भाषा कहि रहल छलै जे जगह जमीन ओकरा रोटी नै द, सकल, ओकरा प्रेम नइ द' सकल ओकरा ओ नीक जकां बिसरा देलक अछि। आब ओकर समाज बदलि गेल छैक।

समाज बदलै छै, परिस्थिति बदलै छै, तँ लोको बदलि जाइये। आब ओकर समाज, चाहवलाक समाज, माने 'चाह विक्रेता यूनियन।' सभक अपन फराक फराक यूनियन छै। तांगा आ रिक्शा यूनियन राजपत्रित आ अराजपत्रित कर्मचारी यूनियन, मुदा बेकारी मे नगरे-नगरे छिछियाइत वेरोजगार युवकक कोनो यूनियन नहि। क्यो देखऽ वला नहि। मैट्रिककुलेशन सर्टिफिकेट, इन्टर मीडिएट सर्टिफिकेठ, वेचलर आफ आर्टसक सर्टिफिकेट, मास्टर आंफ आंर्टस केर लाम काफ बला सर्टिफिकेटक पुलिन्दा एखनो बैग मे पड़ल छै।

ओकरा होइत छैक जे ई सम्पूर्ण सर्टिफिकेट भूखक भूगोल छियै। जकर सहायता सँ ओ नगरे-नगरे भूखक भूखण्ड नापि सकत। ओ एक शहर सँ दोसर शहर घरि कैक बेर भूखक जमीन नापि चुकल अछि आ'जर्मान नपलाक बाद किछु सहानुभूति, किछु आश्वासन आ' किछु उपदेशक फीस लऽ गाम घूरि आयल अछि। मुदा तैयो ओ गाम सँ शहर आ, शहर सँ गाम जायब, नै बिसरि पौलक। ओ कैक बेर कोनो तूती चिड़ै जकां बाजल होयत -" आब नै आयब शहर। आ फेर ओही चिड़ै जकां शहरक खाक छनवाक लेल विवश भऽ जाइये।

सोचैत सोचैत मोन अकत तीत भऽ गेलै। लगक सीट पर एकटा अधवयसू शुभ्रशाभ्र सन लोक तमाकू पर थाप दैत छथिन आ' एकर ध्यान उचटि कऽ हुंनक पीयर तरहत्थी पर चल जाइत छै।

जेबी मे मात्र चारि आना कैंचा छै बारह घंटा सफर बांकी छै। ओ भारी मोन के बहटारबाक लेल ओहि सज्जन सँ एक जूम तमाकूक मांग करैत अछि। सज्जन किछु स्थिर चित्तेँ एकरा सँ पूछैत छथिन - अपने चुनौटी नै रखने छियै की? आ, ओकरा होइ छै जे ई शब्द बहुत सीमित आ' संयमित छै। ओकर करेज तक बेधि केँ राखिदेलकै। ओकरा होइ छै जे आइ ओ कोनो मंत्री रहितय तँ ई व्यक्ति ओकरा आगू मे पोसुआ कुकुर जकां नाङरि डोलबैत रहितै, एकर थूक अपन तरहत्थी पर लोकि लैते। मुदा, ओ एकटा ग्रेजुएट अछि तँ एक जूम तमाकू ओहि सज्जन केँ सोनाक भस्म सन मुल्य-

वान बुझा रहल छलनि। ओ पयरवानाक कोठरी दिस लगही करऽ बढ़ि गेल। सज्जन टोकै छथिन-तमाकू लेल जाउ। आ' ओ मूड़ी डोलबैत कहै छनि-रखियौ अपने। हम बाहर सँ लऽ अनैत छियैक। अपने केँ कम्मे तँ अछि। आ' ओ उत्तरक बिना प्रतीक्षा कएने आगू बढ़ि गेल।

फरीछ भऽ गेलै तँ गाड़ी बख्तियारपुर टीशन पर रुकल। ओकरा इच्छा भेलै जे ओ गाड़ी सँ उतरि जाय। मुदा एखन आठ घंटाक सफर बांकी छलै। आठ घंटा अर्थात आठ सए उपदेश। नीति शतक, दोहावली, कवीर उपदेश मानस पाठ आ' नहि जानि कोन-कोन शैली मे ओकरा बोर कयल जयतै। ओ बोर होयत रहत किएक तँ बी० ए० एम-ए० पास अछि। ओ बोर कयल जायत कियेक तँ वेरोजगार अछि आ एकर अर्थ छी जे एकरा लग कोनो सिफारिश नै छै। माने निखटू लोक। गाम मे तँ लोक आब दरमाहा सँ वेसी ऊपरबाइली केर मादे पूछै छै जे जतेक ऊपरवाइली पाइ कमाइए समाज मे ओ सभ सँ चर्चित लोक। ओकरा एखनो मोन छै अपन गामक मुक्खन मिसरक उक्ति-'इहो बुड़ियाइये गेलै। हरदम हुल्ले लेऽऽ ले मे समय वितबैत छै। ओकरा भेल रहै जे भूक्खन मिसरक बेटा स्टोरकीपर नै अपितु कोनो अफसर होइ जेना। वर्षमें दू नम्बर केर कृपासँ बीधा दू बीधा जमीन तँ खरीदबे करैये आ' एकटा मकान सेहो बना रहल अछि। ओकर चरम उपलब्धि छै मकान आ जमीन। मुदा जमीन आब ककरा लेल? एहने झक्खन अदौड़ी आ ओहने बोर प्रूफ ग्रामीण सभक लेल। ओ पांच सय टाका कुसिआरक खेत मे लगा चुकल अछि। मुदा पूजींकअभाव मे सभ सुखा केँ संठी भऽ गेलै। आ' ओही संग ओकर आशा आकांक्षा ध्वस्त भऽ गेलै। आइ कालिह पुर्जीक लेल बीस, तीस आ पचास तक खुरपुजाइ जमेदार मङै छै।

ओकरा अपन गामक जमेदार अदौड़ी मिसर मोन पड़ै छै। एहि पुर्जीक कृपा सँ ओ जमेदार सँ जमीन्दार बनि रहल अछि आ धाम बहाकऽ कुसियार उपजाबऽ वला किसान गाम सँ भागि रहल अछि। नै जानि कहिया धरि ई

क्रम लागल रहत। गाम सँ शहर आ शहर सँ गाम। ओ सीट पर चुक्कीमाली भऽ बैसि रहैत अछि।

पड़ोसक सीटवला सज्जन फेर एक बेर तमाकू मे थाप दैत छथिन। एकर मोन लोहछि उठै छै। आ' ओ उड़ैत सुरसुरीके नाकक पूरामे हिलबैयेथाकऽ छीऽऽ।

एक धोन्हा पोटा सज्जनक मुँह पर पोता जाइ छनि आ' ई हुनके जकां एकटा मीनी शब्द, जे शिष्टताक छै, प्रयोग करैये-शारी। अहूँ कतेक तमाकू खाइ छी ?" सज्जन जाबत गमछासँ मूह पोछि, ओकरा दिस मुखातिभ भेलाह गाड़ी गामक टीशन पर आबि रुकि गेल छल।



एकटा आर मर्डरकेस

कहै की छी ?

सुनबै तै एम्हर ?

रघुनन्दन मिसरक पत्नी अपन पति कें कोठलीसँ आबाज दैत छथिन आ प्रत्युत्तर मे एकटा फाटल बांस बला कँठ ओसारा पर सँ बमकि उठैछ-भाग छुतहरिया। एतबहि काल मे नहि जानि रघुनन्दन मिसरक मुँह सँ कैकटा अश्लील शब्द सभ बन्दूकक गोली जकां निकलि गेल। रघुनन्दन मिसरक मुँह तँ ओहि समय देखबा योग्य रहैए जखनि की ओ बिगड़ल रहैत छथि। जहिया विगड़ैत छथि तँ लगै छै जेना टोल-पड़ोसक छौड़ा-छौड़ी सभ असंख्य टीन पीट रहल अछि। ओ हँसैत छथि तँ लगै छै जेना कोनो ड्राम के कियो बीच सड़क पर गुड़कौने जा रहल हो। ओना रघुनन्दन मिसरकें हँसैत वड़ कम देखल जायत छनि। ओ जहिया हँसैत छथि त लोकक विश्वास छै जे ओहि दिन गाम मे जरूर कोनो अनिष्ट होयत। ओ सतत् अपना मुँह कें तुरुछ कएने रहैत छथि। सर्वांग शरीर पर चरक केर उज्जर-उज्जर दाग छनि आ जाहि मे हुनक लाल ठोर आरो हुँनक चेहरा कें भयाबह बना देने छनि। दूटा बेटा छथिन। बड़का बेटाक नाम छियनि यमुना आ' छोटका बेटाक नाम प्रयाग। यमुना जहिया एकटा साधारण गिरहत रघुनन्दनक बेटा रहऐ, किछु लिखबो पढ़बो करय मुदा जहिया सँ ओ रघुनन्दन बाबूक बेटा भेल, सभ पढ़नाइ लिखनाइ घोड़ी घास मे चल गेलै। दिन भरि ओ बाध बोन आ पोखरि झांखड़िक खोज मे अपस्यांत रहय। प्रयाग कहुना तीन बेरे मैट्रिकुलेशन पास कएने छल। बाद मे अयलैक मुखियाक भोट आ, लाठीक बल पर ओ भोट जीति लेलक। किछु धुस-पेंच खर्च कऽ सभ मुखिया के मिला मुखियाक प्रधान भऽ गेल। आइ कालिह जेबी गर्म रहए तँ कि "चियरमैन" आ, भाइस चेयरमैन' सभ एक्के बेर भऽ जाउ। जे किछु होउ मुदा प्रयाग

मिसर अपन जेठ भाइ जकां माल पत्ताक खोज मे नै रहैत छथि। चौंकक कोनो चाहपानक दोकान पर बैसि जनता जनार्दन कें भजियबैत रहैत छथि जे के आइ काल्हि बेसी शक्तिशाली भऽ रहल अछि। ककरा मे एतेक स्फूर्ति आबि रहल छैक जे हमर अड्डा के उखाड़ि-पुखाड़ि फेंकि देत। एहि सूचीक अन्तर्गत जे कियो आबि गेलाह हुनकर कल्याण नै यदि ओ नौकरी करैत छथि त' हुनक परोक्ष मे हुनक सम्पति पर चुपचाप आक्रमण भऽ जयतनि। प्रयाग मिसर अपन लगनिये जकां जखन मोकदमाक भिरानी देखबैत छथिन, डरबुक जनता घर मे नुका रहैये। ऐहि तरहें प्रयाग मिसर दागल सांढ जकां चौक पर बौआइत रहैत छथि।

ई बहुत दिनुक गप्प छियै। माघ मास रहै। बाहर मे ततेक पाला पड़ै जे जाड़क डरसँ सूर्यक जहनि धाही फूटनि तखनि जाके लोक घर सँ निकलय। कुसियारक कटनी शुरु भऽ गेल रहै। रघुन्नदन मिसर ओहि समय एतेक एकबाली नै भेल रहथि। छोट सन गिरहस्थी रहनि। अपनहि माथ पर छिटटा उठाउठा ओ खेत मे ढ़ाकी देने रहथिन। कुसियार खूब जमल रहनि। एहि समय जकां कुसियार मे बिदैतो नै होइ। आब ने गामक पगड़वाह के कुसियारक कटनी मे पगाड़ कटनाइ 'दुस्हह रहै छै। कटनी सँ बहुत पहिने कुसियारक मूड़ी ठुट्ठ कके छोपा गेल रहै छै। जखनि जन करू, तखनिह जाके कुसियार कटायत। हँ,त ओहि समयक कुसियार। हरियरे-हरियर खेत लह-लह करैत पगाड़। रघूनन्दन मिसर जखनि अपन खेत देखि घर जाथि तऽ अपन पत्नी सँ कहथिन- यमुनाक माय सुनै छी? एहि बेरूका कुसियार मे बाबा बैधनाथ भगिसक अपन सभक सभ दुख बेगारता हरि लेताह। अहांके बनारसी साड़ी लेल बड़ मोन लागल अछि, ओहो भऽ जायत आदू कट्ठा खेत सेहो कतहु कोनि लेब। प्रत्युत्तर मे हूनक पत्नी कहथिन-धौर, अहूँ की मोन बँटै छी। शुभ-शुभ कऽ पहिने कुसियार बेचि लियऽ तखनि ने? आ, आगुक गप्प एहि वाक्य पर ठमकि जाय। तऽ कहऽ जे लागल रही-हँ, ओहि माघ मास मे कियो ओतेक भोरे उठनिहार नै। ककरा मरबाक छै एहि ठंढ़ सऽ। मुदा रघुनन्दन मिसर लोभोपतन रहथि। कोनो धन-कुवेरके धन अर्जित

करबा बेर मे अन्ध होबऽ पड़ै छैं। भला रघुनन्दन मिसर सन लोभी के ई लसरि कोना ने लगतनि? ओ अपन बहलमान के तीने बजे भोर मे उठि जाय लेल कहने रहथिन। साँझे पगाड़ बना-सोना गाड़ी पर लदा गेल रहै। हुनक बहलमान झोटहा एहि प्रस्ताव के अनर्गल बुझैत कहने रहनि-"गिरहत। एतेक भिनसरबा मे उठल पार लगतै? देह तँ बलू वरफ भऽ जाइहइ, आ, बाहू पर देह बेनंगन भेल अइ। सभ हवा सिट्-सिट् के देह मे माड़तै बलू।" ओ जोशबैत कहने रहथिन-एहि बेरूका कुसियारक पाइ मे एकटा तौनी जरुर देबौ पहिने कुसियार तँऽ बेच। आ, ओ निरूत्तर भऽ घर चल गेल रहय। भोरे तीन बजे रघुनन्दन मिसर जागि फराठी सम्हारैत ओकर लग जाके हाक देने रहथिन-झोंटहा छेंरौ। रौं झौटहा। धत् मरदे, की मरद के कोखि मे जनम लऽ बिनबैत छें। उठ' राटन नै जेबही? झोटहा अपन गिरहतक आस्मर्द सूनि उठि बैसल आ, फटकी खोलि जखनि बाहर आयल, माघक सिहकी ओकर करेज तक बेधि देलकैक। ओ दांत खटखटबैत गिरहत सँ कहैत छनि-भोर फूटऽदू गिरहत। एहना समय मे तँ परानो ने बँचतै। रघुनन्दन मिसर रहथि घाघ लोक, भला एहन छोट दलील पर ओचुप कोना भऽ जयतथि ओ ओकरा पोल्हबैत कहैत छथिन-धत् मरदे। काल्हिये तोहर तौनी आबि जेतौ, एकटा गोल गला सेहो सिया लिहें, भेलौ आब। ओकर पत्नी चौल करैत कहै छनि-आ, हमरा की मिलतै गिरहत? तौरो नूआ हेतौ आर की? ओकर पत्नी अर्थात मटरी। कसल कसल बाँहि, गदरायल जुआनी पर मुस्की मारैत ओकरा उसकऽबैत कहै छै—गिरहत कहै छथिन त चल ने जाउ। हमर बला नूआं के दोहरी कऽ के ओढ़ि लोउ। झोंटहा लोहछि के भीतर जाइये। सामने मे ठाढ़ दूटा यमदूत बुझाइत छै। रघुनन्दन मिसर मटरिक देहयष्टि पर अपन कामुक नजरि गरबैत कहै छथिन-मतिछिन्न छै। हम तँ मालो-माल कऽ देब। हमर गप्प मानै तखनि ने? मटरी गिरहतक एहि गप्प सँ आ ओकर आदिम आंखि स परिचित अछि आ, ओ मुस्की दैत कहै छै—ओहन मैल नूआ मे गिरहत ओहिठाम जाइ मे हमरो घीन अबै हइ। बलू ओकरे पर हमहुँ छियैने? आ' रघुनन्दन मिसर ओकर चिकांरी भाषा बुझइत

चरकाहा ठोर के 'कनिये कोचियबैत बाजि उठलाह- अरे ताही दुआरे ने कहलियै। काल्हिये दुनु बेकती के कपड़ा आबि जेतौ, लैत ने रह, कतेक लेबें हमरा सँ।

आ, कुसियारक गाड़ी जखनि छहर के ढ़लान पर गेलै त' झोटहा के बुझेलै जेना हाथ काज नै कऽ रहल छै। सम्पूर्ण शरीर मे पाला पैसि गेल छै। ओ जोर सँ रासि के टानैए, मुदा हाथ मे जोड़ नै वड़ै छै। गाड़ी जे ढ़लकलै से नेने देने ऊपर सँ गाड़ी आ, तर मे झोंटहा। जखन सूर्य धाही देलकै तँ रघुनन्दन मिसर के कियो समाद कहलकनि जे झोंटहा गाड़ीक तर मे पड़ल अछि आ, गाड़ी उनटि गेल अछि। रघुनन्दन मिसर रहथि वड़ साकांक्ष लोक। धन बढेबाक आ एकबाली कहेबाक भूत सवार रहनि हुनका पर। ओ ओकर खोज-पुछाड़ी करबा सँ पेहिने दौड़ल-दौड़ल एकटा वाइल साड़ी ओकरा पत्नी केँ दऽ एलखिन आ जखनि चोटटे घूरि घर पर चल अयलाह तँ रामपुर वाली अर्थात मटरी के आइ आश्चर्य भेलै। आन दिन त दू सेर दू कनमा पर मनसा मनबैत रहैत छल. आइ एते दामक नूआ दैयो के एको लबज बाजल त ने? साँचे कतेनीक भऽ गेलै ओकर गिरहत। ओ किएक ने गेल जे ओकर भाग्य विधाता ओकर भाग्य मे अगराही नेसँ लेल आयल छथिन। ओ एहि सभ सँ दूर सोचैत रहल-लक्ष्मी के अबैं के होइ छनि तँ लोक एहने भऽ जाइये। आ' लक्ष्मीक पुत्र रघुनन्दन मिसर ओतऽ सँ सीधे थाना गेलाह आ' नै जानि कतेक काल धरि दरोगा सँ हँसि-हँसिकऽ गप्प कयलनि। आ जखनहि दरबाजा पर पएर देलनि त एसटा प्रचण्ड विरड़ो मे पड़ि गेलाह। सोझें बिरड़ो-ए नै कहबाक चाही, झाँट आ, पाथर सेहो। आगू मे काली स्वरूपा भेष, छिड़िआयल केश आ, हवोढ़कार कनैत मटरी ठाढ़ छलनि-गिरहत यौ गिरहत! आब ककरा देखि के एतेकटा जीवन बितेबै यौ गिरहत।" आ, वाइल साड़ी के हुनक आगाँ मे पटकैत कहऽ लगलनि-ई "साड़ी ओकरे खून मे बोरल हइ, से जैनतौ त, एको क्षण अपना लग नै रँखती। हमहीं ओकरा एतेक भोर मे ठकि फूसिया के विदा केलियै रौ दैबा।' रघूनन्दन मिसर के लागि रहल छलनि जेना ओकरा एक-एक गप्प पोल खोलबाक लेल उद्यत

अछि तँ ओ परबोधैत कहै छथिन भावी के रोकनिहार के? जो, ज्ञान कर हम तोहर परबरिस कऽ देबौ। ओकरा गिरहतक एक-एक शब्द कान मे टहकैत बुझाइ छै। किछु काल पूर्व जे चित्र गिरहत लेल ओकरा मन मे बनल छलै। आब ठीक ओकर उल्टा चित्र मोन मे खिचा गेल छै। ओकरा गिरहत एकटा भयंकर आदमखोर बाघ बुझाइ छै। बाघ, जे निसभेर राति मे मनुक्खक हरणकऽ ओकर माँस आ सोनितक स्वाद चखै छै। कड़-कड़ाके हड्डी चिबबै छै मटरीक आँखि पर ओएह बाघक चित्र नाचि जाइ छै। ओकरा लगै छै गिरहतक मुँह मे सद्यः शिकार कयल आदमीक खून लेभरायल छै। ओ बप-हारि तोरऽ लागल-'रौ वजर खसौना सभ जेना आइ हमरा लूटि खखरी बना बाहर फेकि देलही। तहिना तोरा सभ पर विततौ रौ टटीबा।' आ नहि जानि ओ कोनादन झुमैत, काचर-कुचर बजैत चल गेल।

सांझ जखनि भेलै। तखनि जा कऽ जीप रघूनन्दन मिसरक, दरबाजा पर लागि गेलनि। जीप सँ सिपाहीक संग दरोगा उतरलाह। किछुए काल मे मिठाइ एलै, नमकीन एलै, काँफी बनलै आ सभसँ अंत मे एलै दू बोतल ठर्रा। आठ बजे राति तक भोजन के तैयारी चललै आ तकर बाद......' आंगन मे धमर्थन। रघूनन्दन मिसर बमकि उठलाह आ अपनहि सँ भरि पांज के पकड़ि पत्नी के दरोगा वला कठली मे ढ़केलि जिजिर लगा देलथिन सिपाहीक ओसारे पर रघुनन्दन मिसरक बगल मे सूतल।

भोरे दरोगा थाना चल गेलाह। यमुनाक माय हवोढकार कनैत, केश छिड़ियौने आंगन मे बैसल छलीह। यमुनाक माय के कखनों कऽ मटरी आँखि पर नाचि जाइत छनि। ओकर कहल एक-एक बात जेना सद्यः भऽ हुनक जीवन मे उतरि रहल छनि। मोन कहै छनि-जो गइ यमुनाक माय। एहि दिन लेल तोहर बाप एहेन पुरूषक हाथ धरा विदा कएने रहौ? की एही दिन लेल माय कहने रहौ, बेटी नैहर के लाज रखिहें, मिसरक दू बात सहि हुनक पयरक पूजा करिहें। की एही दिन लेल ओ अपन चरकाहा स्वामी के भगवान बुझैत आयल? नै यमुनाक माय तोहर एहि धरती पर आब काज नै छौ। मोनक दोसर कोन कहै -जे मरि जेबें तँ यमुना आ प्रयाग पर की

बित्तत? की ओ सभ अपना के सम्हारि सक्त ?हँ ठीके होयतै। सभके एकटा सबक भेटि जयतै आ फेर कियो दोसर यमुनाक माय नै होयत।" आ' ओ ओहि दिन कतेक काल धरि कनिते रहि गेल रहय। प्राते ओकर शरीर आगूक पोखड़ि मे दहाइत देखल गेलै। कौआ कांव-कांव कऽ चारू मोहार चकभाउर दऽ रहल छलै। एकटा बतही पोखड़िक मोहार पर लुकठी लेने कौआ के रोमि रहल छलै।

सूर्यक धाही पड़लै आ लोक पोखड़ि पर जमा होअए लागल। कियो कहै पुतोहु सँ झगड़ा भेल हेतै तऽ कियो कहै साँय मारने-पिटने हेथिन ताही सँ ऊबि के वेचारी ...। लोक तरह तरह के अटकर लगा रहल छल बतहिया कहलकै-चोप्प। ओ सूतल हइ। एतेक दिन कियो ओकरा सूतऽ नै देलकै निश्चिन्त सँ आइ मोन भरि सूतऽ दहक वेचारी के यमुना घाट पर ठाढ़, बौक भऽ सभक गप्प सूनि रहल छलै। ओ बतहिया के चिन्हलकै' ओकर गप्पो सुनलकै आ आँखि मीरैत घर मे आबि धराम सन चौकी पर खसि पड़ल। पत्नी हतास भऽ भरि पांज कऽ उठबय लगलै ओ पत्नीक दिस तकैत अछि आ' फेर ओकर नजरि बाहर मे माथा पर हाथ धेने अपन बाप पर चलि जाइत छै। ओकर करेज कांपि जाइत अछि। ई फेर एकटा मर्डर केस। मुदा नै' ओ अपन बाप के, अपन भाइ के, अपना के, फांसीक फंदा पर दऽ आबि सकैए मुदा दोसर कड़ी, एहि क्रम मे नै जोड़त। पोखड़िक मोहार पर जमा भेल भीड़ एक दोसराक आदेशक प्रतीक्षा कऽ रहल छल।

□

अनुत्तरित प्रश्न

जखन ट्रेन खजौली टीशन पर एक झटकाक संग रूकल तँ एकटा सज्जन, एकटा अनचिनहार मुदा परिचित सन युवती कें हमरा जिम्मा लगा कम्पार्टमेण्ट सँ उसाँस पीलनि। आ' मूड़ी लटकौने प्लेटफार्म सँ फराक भऽ गेलाह। जाइत-जाइत ओ कहने गेलाह—हे ! हिनका जनकपुरमे उताड़ि देबनि। अहूँ जनकपुरे जाइत होयब ? हमरा आश्चर्य लगैये जे ई हमरा सँ एतेक परिचित कोना छथि जे हमर प्रोग्रामक पूरा-पूरा पता छनि। किछु काल प्रतीक्षा कयलाक बाद जखन हमर कोनो उत्तर नइ भेटलनि तऽ ओ उतरि बाहर चल अयलाह आ' हुनका संगमे आयल ओ युवती जकर उमेर करीब-करीब बीसक हेतै. हमर नजदीकक खाली सीट पर बैसि गेल। ओ बड़ी काल धरि हमर मुँह निहारैत रहल आ फेर टोकैत बाजलि—अहाँक घर कतऽ भेलै ? हमर छोट सन उत्तर पर ओ चिहुँकि उठलि-तरौनी ? जेना एक सय मोनक माँटि कियो एक्के बेर ओकर देह पर लादि देने होइ। किछु कालक बाद ओ एक नम्हर साँस छोड़ि कनेक हँसबाक प्रयास कयलक। मुदा हँसी, हँसी नहि भऽ सकलै। ओ सुखायल धार महक खच्चा जकाँ विवर्ण भऽ उठलै। ओकर आँखि प्लेटफार्म पर किछु कालक लेल गेलै आ' फेर हमर चेहरापर घूमि अयलै। ओकर हँसब हमरा अनसोहाँत लागल। ओकर आँखि जे गोल-गोल, कजरायल आ' बहुत विस्तृत छलै हमरा हृदयमे धुकधुकी आनि देलक। ओ धुकधुकी प्रेमोद्रेक सँ नहि। डर सँ छल। ओ हमरा रहस्यमयी कोनो मूर्ति जकाँ लागल। गाड़ी सीटीक संग प्लेटफार्म छोड़ि देलक। मुदा हमरा आभास हुअए जे गाड़ी नहि हमर शरीरे डोलि रहल अछि। ओकर प्रश्नक संग हमर तन्द्रा टूटल-अहाँक नाम विकास छी ने ? स्वीकृतिमे हमर मूड़ी डोलि गेल छल आ' हमहूँ प्रश्न कऽ देने छलिऐ-अहाँ के छी ? हम कनिये के भोतला

रहल छी। हमर प्रश्नक संग ओ चौंकि उठैत अछि आ' नूआक खूट सँ अपन बामा हाथ के झँपैत कहैत अछि। हमर माय बाप तऽ मरि गेलै। हम असगरे एहि दुनिया मे छी। आ' गप्पक संदर्भ बदलैत ओ फेर दोसर प्रश्न कऽ देलक-अहाँ वियाह कयलियैक कि कुमारे छियैक? हम हँसैत उत्तर देने रहिऐक-इएह पाँच साल भेलैक अछि अपन गामे मे वियाह कऽ लेलियैक। ओकर मुँह फेर लटकि अयलै। हमरा भेल रहय जे हमर वियाह सँ एकरा दुख किएक भेलै? मोनमे प्रश्न आ उत्तर संगहि उतरऽ लागल। किछु कालक घमर्थन मे परिणाम ठोस भऽ निकलल-गाम। ओकरा हमर गाम माने तरौनी सँ घृणा छलै। ई तामस किएक हम ओकर कारण नहि जानि सकलिऐक। तावत ट्रेन जयनगर टीशन चल आयल छल। सरहदिया गाड़ी केँ खुजबामे विलम्ब नहि छलै तैं झटकि कऽ आगाँ बढ़लहुँ। ओ किछु काल लेल हमरासँ विलायल रहल मुदा जहाँ कि गाड़ी चलबा लेल भेलै, हहाएल-फुफुआयल हमर कम्पार्टमेंट मे चढ़ि आयल। हाथमे दू टा पॉपिन्स क डिब्बा रहै। एकटा डिब्बा हमरा हाथमे थम्हबैत कहलक-गर्मी बड़ छै। पियास मारत। लज्जावश हमर हाथ थरथरा गेल ओ' हमर हाथक मुट्ठी बन्हैत कहैए—विकास बाबू, हम कतेको बेर गाछ सँ लताम तोड़िकेँ अहाँकेँ देने छी। कतेक बेर गिलासमे पानि आनि पियौने छी। अहाँक माय के कतोक बेर अरघी पँचपात आ सराइ माँजि के दऽ आयल छी। हरदम तऽ अहींक संग खेलाइत छलौं, मोन पारू? एहि क्रममे हाथ परहक लीखल कारी-कारी आखरमे 'रेखा' हमरा साँस के अवरुद्ध कऽ देने छल। हम अनायासे बाजि उठल छलहुँ-अरे रेखा? हमर बाजब सूनि ओकर आँखि भादवक मेघ जकाँ सजल भऽ आयल छलै। ओ निधोख बाजि गेल छल—अहाँ डेराउ नहि विकास बाबू। हम भूत नहि एकटा जीवित लहास छी। जे चलितो अछि, खाइतो अछि आ हँसियो लैत अछि। मुदा........" हमर कंठक बोल लटपटा गेल छल कि तखनहि ओ फेर बाजऽ लागल—अहाँ कहब जे रेखा गंगामे डुबि गेलै, ओकर सराध बिटारि सभटा भऽ गेलैक। आ फेर ई कोन रेखा छी, सैह ने? हमर छाती जोर-जोर सँ धड़कए लागल आ' फेर मोन पड़ि आयल गामक निस्तब्ध बाट। की

सत्ते रेखा जीबै छै? आ यदि नहि त' ओ ओकर एक-एक कहल बात हमरा झूठ किएक नै लगैए? हमर चुप्पी ओकरा लेल असह्य भऽ उठलै आ सन्दर्भ के बदलने बिना ओ कहइत गेल जे कोना ओकर बाप जहाज देखबै लेल गंगाक कात अनलकै आ फेर एकटा पंडाक हाथमे समर्पित कऽ चल गेलै। बदलामे ओकर बाप के छब्बीस सय रुपया भेटल रहए। ओ फकसियारी दैत रहि गेल रहए, मुदा बाप नै घुरलै। ओहि समयमे ई मात्र दस वर्षीया एकटा अबोध नेना रहय। आ फेर आगूक संदर्भ हमरा स्वतः जोड़ा गेल। ओकर बाप काली चरण चौधरीक असगर गाम आपस आयब हमरा आँखि पर नाचि गेल। ओकर झूठ-मूठ के कानब हमरा एखनो मोन पड़ैत अछि। दस दिनक बाद ओहि जीबैत दस वर्षीया बालिका के सराध संस्कार बजाप्ते भऽ गेलैक। गाम मे कुहराम मचि गेलैक जे रेखा गंगामे डुबि गेल। पयर पिछड़ला सँ ओकर मृत्यु भऽ गेलैक। एहि बात केँ दस वर्ष बीति गेलै आ आइ वैह रेखा बीस वर्षक वियाहलि युवतीक रुपमे हमर समक्ष छलि। हम अनायासे बाजि उठल रही-रेखा! माथ केँ भरियबै ले पाँपिन्स आनि के देलौं! रेखा चट हमर मुँह पर हाथ राखि बाजल-हमर सप्पत जे ई कत्तौ बाजी, हम ओकर सप्पत स्वीकार कऽ लेलियैक आ चुप्प भऽ गेलौं। हमर दृश्य पटल पर तीनटा रेखा उगि आयल। आ तीनू के विभाजन कर' लगलौं। पहिल ओकर भाग्यक रेखा। मोनमे होइत अछि यदि ई ठीके होइत रहितै तऽ? दोसर ओकर कर्मक रेखा। जकर फल उल्टे भेल छलै आ' तेसर ई सिन्दूर रेखा। की ई वास्तव मे चमकि रहल छै आ' कि नकली छै? सिन्दूर कहियो नकली नै भऽ सकै छैं। मनुक्ख नकली होइत छैक ओकर काज नकली भऽ सकै छै। हम तीनू रेखा क' विभाजन नै कऽ पबैत छी किएक तऽ तीनू रेखाक माला एहि रेखा केँ बरजोरी पहिरा देल गेलैए बातमे भसियाइत भसियाइत नहि जानि कखन जनकपुर पहुँच गेलौं आ जखनि गाड़ी सँ उतड़ि ओ हमरा दिस तकलक तऽ हमर पिपनी भीजि गेल छल।

आइ रवि छियै। जनकपुर सँ एना एक सप्ताह भऽ गेल। उमा तुरंते टेबुल पर चाह दऽ गेलीह' टेबुल पर राखल किताब केँ उठा कऽ पढ़ऽ लगैत

छी, मोन बहटारबाक लेल। फेर किताब कें राखि चाहक सेय लैत छी। लगले बोतला बजबैले अवैत अछि जे हमर बाउ गाछ सँ खसि पड़लै। बड़ चोट छै कुहरि रहल छै। बोतला हमर टोलक एकटा गरीब लोक अछि। मुदा बातक पक्का आ जवानक तन्दुरूस्त। तें ओ हमरा बड़ पसिन अछि। तुरत चाह छोड़ि कोठली अबैत छी आ' सर्ट पहिरि टोल दिस विदा भऽ जाइत छी। जखनि ओकरा अंगना पहुँचैत छी तऽ देखै छी गलगुल-गलगुल भऽ रहल छैक। कत्तौ फुसराहटि तऽ कत्तौ बनावटी सहानुभूतिक प्रदर्शन मात्र। हम लग जा देखैत छियैक तऽ अनुभव होअए जे चोट तऽ ठीके छै मुदा आघात बहुत कम भेन हड्डी पर जरब नहि छैक। हमर मुँह सँ अनचोके मे निकलि जाइत अछि-कोनो डर नहि गरम पानिसँ तावत ससारहिन आ' हम आयोडेक्स लेने अबैत छी। ताबत टुम्ब दऽ केम्हरो सँ कालीचरण बाजि उठैत अछि-अहूँ पढ़ल लिखल भऽ कऽ की गुँहथोप थोपै छियै? विदा कऽ दियौ बेचारा के लहेरियासराय। प्राण बचतै तऽ पाइ कमा लेत।" बिच्चे मे बोतला बाजि उठै छै—"नै मालिक अहाँ अपना गियान से सभटा करियौ। एहि गिरहकट्ट के हाथ मे हमरा नै दियऽ। ई एहीतरी हमर डीह लिखबऽ चाहैए। आब आगि मे घी ढ़रा गेलै। कालीचरण करिया नाग जकाँ फुफकारि उठलाह—"अयँ रौ बोतला, तोहर बापक ऋण धारने छलियौक जे हम दौड़ल अयलियौक। चण्डाल- कसाइ नहि तन। बाप मरै छनि आ' ई डीह ताकऽ लगलाहे।" ओ कोहुना अपन दाव सुतारय चाहैत छलाह कि हमरा सँ नहि रहि भेल। हम जबाब दैत कहने रहियैन—"चुप्प, अहाँ की बाजब, अहाँ तऽ स्वयं कसाइ छी।" ओ फेर एक बेरि बमकि उठलाह—"अयँ यौ, अहाँ पढ़ियो-लीखि कऽ भरिसक बाजब नहि सिखलियै?" हमरा चिन्हैत नहि छी? हमर क्रोध ठिका-सन छूबि देने छल तें हमहूँ ओहि स्वर मे बाजि उठल छलहुँ—चुप्प, बेटी बेच्चा, धनक गुमान हम नहि सहि सकबौ। कालीचरण के मुँह सियाह भऽ गेल छजैक। हमरा रेखाक देल सप्पत धक्क दऽ मोन पड़ि गेल छल। ओहि काल मे हम त्रिशंकु भऽ गेल छलहुँ। हमरा लागल जेना हमहीं नै कालीचरण

आ बोतला तीनू गोटे त्रिशंकु भ' गेल रही। कालीचरण रेखा आ हमरा बीच त्रिशंकु भ' गेल छलनि आ बोतला अपन बाप आ हमरा बीच त्रिशंकु भ' मूड़ी निप्घरौने बापक मुँह निहारि रहल छल। ओकर सक्क नहि भ' रहल छलै जे हमरा बलजोड़ी डेन पकड़ि उठा लेत आ' आयोडेक्स अनबा लेल कहत, ओकर सक्क नहि भ' रहल छलै जे ओ भोड़क संग कालीचरण के कहि देतैक जे ओ सभ उठिकें एतऽ सँ चलि जाय। बेकार के ओकर बाप के घेरने छैक। वातावरण जबदाह भ' गेल छैक। हमर प्रश्न वातावरण मे घुरिया रहल अछि, की एकर जवाब कालीचरण दऽ सकताह?



उठ पुत्ता : पुरल-पुरल

सड़कक कात वला बड़क गाछ, ओहि टोलक चौकरीही भऽ गेल छै। गाछक चारू कात माटिसँ भरल आ गोबरसँ नीपल-नापल रहैत छै। साँझमे बूढ़सँ लऽ जुआन धरि आ ढेरबासँ लऽ बच्चा धरि ओहि गाछ तर आबि बैसैत अछि। नारक बनल एक टा नम्हर पटिया सेहो बिछाओल रहैत छै।

ई सभ प्रबन्ध मुक्तेसर कामति अपना दिस सँ कयने अछि। गाछक सटले ओकर मालक घर छै। जाहि ठाम दुनू परानी अपन माल-जाल के देख-रेखमे सतत् लागल रहैत अछि।

एकटा बेटा छै आ दूटा बेटी। दूनू बेटी सासुर बसै छै। आ तेँ माल जाल घास-पात लेल दुनू परानी अपने अपस्यांत रहैत अछि।

जखनि सूर्य डूबि जाइ छै ओ सभ दिन ओहि स्थान कें बहारि-सोहारि एकटा पटिया ओछा दैत छै। आ जखनि ओहि चोकरीहीपर सभ जमा भऽ जाइत छै, तखनि ओ खिस्सा शुरू करैत अछि राजा-रानी-दीवान-बजीर राक्षस दैत्य, भूत-प्रेत आ नै जानि आर कोन खिस्सा सभ।

खिस्सा कहबोक ढ़ंग अलबत्ते छै। ओकर खिस्सा सुनि के के केहेन होयत जे रूचि नहि लेत? बाट चलैत बटोही कें ओकर खिस्सा सुनबाक लेल रूकि जाय पड़ै छै।

एक दिन ओ एकटा पौरकीक खिस्सा कहने छल — जे एकटा मौगी रहय ओकरा एक्के टा बेटा रहैक। ओ मौगी एक दिन राजाक धान कूटैत रहय। लगमे ओकर बेटा बैसल रहैक। चाउर कुटल भऽ गेलै तँ ओ चाउर फटकऽ लागलि। छौंड़ाकेँ भूख लागल रहै। दू साँझक उपासक ला छौंड़ा कतेक सहाज करितैक? एक लप चाउर लऽ मुँह मे धऽ लेलकै।

खाली पेट आ ताहू पर ओतेक ढ़ेकीक हरारति। ओकर माय कें बड़ तामस चढ़लै। जे चाउर घटि जायत तँ राजा भकसी झोंका देत। ओकरा

हरलै ने फुरलै एक चाट छौंड़ा कें लगा देलकै। छौंड़ा ठामहि सूति रहलै। माय बड़बड़ाइत कहलकै -रूसले तऽ रूस।' आ जखनि चाउर पूरि गेलै तँ ओ ओकरा उठबय लागल छौंड़ा एके चाटमे सभ दिनक लेल रूसि गेल रहय। ओ बपहारि तोरि कानऽ लागलि। श्रापित भऽ जखनि ओ पौरकी चिड़ै भेल तँ वैह रट्ट सदिखन लगबैत रहय—'उठ पुत्ता - पुरल-पुरल।

ई खिस्सा कहैत काल मुक्तेसर कामति दहो-बहो नोरे कानऽ लागय। के जानय गेलै जे एक दिन ओही परूकी जकां ओकरो अपन एक मात्र संतान कें अपना सँ बिलगाबऽ पड़ै आ ओही थोही परुकीये जकां—'उठ पुत्ता-पुरल पुरल।' रटैत रहय?

करीब तीन वर्ष सँ एहि परोपट्टा मे लोक कें नीक पानीक दरस नहि भऽ सकलै कहियो भेबो कयलै तँ छिट-पुट सभ दिन गृहस्थ यैह रटैत रहि गेल जे —"एक बेर दमसि कऽ बरखा होइतै तँ इलाकाक दरिद्रा पार भऽ जयतै।" मुदा लोकक कथन ओहि शून्य लोक धरि नहि पहुँचि सकलैक आ अद्यावधि लोक पानिक आस मे मेघ दिस तकिते रहि गेल। बरमहल मेघ ढनढना कऽ चल जाय। नक्षत्रपर नक्षत्र बीतैत गेल। की पुनर्वसू? की पुख? की हथिया??? सभ एक रंग। डाकक बचन झूठ साबित होमऽ लागल। कतऽ गेलै खेतिहरक ओ कथ्य सभ—"जौं पुरवैया पुरबा पाबय, सुखलो नदिया नाव बहाबय" गामक फनैत बात लोकैत कहैत छथिन- कातिक कंता घूरि उड़ाबय' परदेश पकड़ह आब किसान।" आ मुक्तेसर कामतिक करेज भालड़ि जकां कांपय लगैक ई सभ सुनि सुनिकऽ। पहिल बेरक रौदी मे एकटा गाय बेचलक। दोसर रौदी मे महींस आ एहि रौदी मे यदि बरदो बेचि लेत तँ जेहो आस छै सेहो टूटि जयतै। अपन खेत नहि छै। दस कट्ठा बटाइ करैए तँ परिवार चलबैत छै। मुदा यदि बड़दो बेचि लेत तँ के देतै खेत आ कथी सँ खेती करत। आ दोसर बरदो तँ अपन नै छै? ग्रामीन बैंक सँ कर्जा लऽ कऽ बड़द कीनने अछि। जनसेवक जी कर्मचारी साहेब, डाक्टर साहेब आ मैनेजर साहेबक हिस्सा चुकायबा ले महाजन सँ दू सय रुपैया सूदिपर लेबऽ पड़ल छै। सभक चुकती करबाक छैक। यदि बड़द बेचि लैये, तैयो

पूरा चुकती नै होयतै। बैंकक सूद, महाजनक सूद आ ताहू पर रौदीक समय। बेगरता पड़लापर दू पाइ कम्मे कऽ कें बेचऽ पड़ैत।

गाम मे पंजाब जयबाक होड़ लागल छै। अधिकांश लोक मोटरी-चोटरी लऽ पंजाब बिदा भेऽ गेल अछि।" सुनै छिऐ ओतऽ बड़ काज छै मजदूरक। तलब सेहो बढ़ियाँ मिलै छै।" कियो ककरो पुछलापर बाजि रहल छलै आ मुक्तेसर कामति, डबडबायल आंखि सँ रोटीक खोज मे भागल जाइत अपन ग्रामीण सभ कें देखि रहल छल। पांच-सात गोटे ओकर चोकरीहीक सेहो छलै। जे कि नित्य ओकर खिस्सा सुनबाक लेल साँझ कऽ गाछतर जुमि जाइत छलै।

जखनि किरमचरना अर्थात ओकर रामशरण बेटाक लंगोटिया संगी पंजाब विदा भऽ गेलै तँ रामशरण सेहो पंजाब जाय लेल बापसँ जिद्द करऽ लागल। मुक्तेसर कामति बौक भऽ गेल छल। ओकरा बोल नै फूटै जे ओ अपन बेटा सँ किछु कहितै। मुक्तेसर कामति सोचय आगूक दिन पहाड़ ठीके अछि। महाजनक सूदि आ बैंकक सूदि समान भाग मे बढि रहल छै। बुताद सेहो सधिये गेल छै। ओ सोचय जे एहि हालति मे ओकरा रोकि कोना सकतै? आ जेबौक आज्ञा कोना देतै? एक मात्र संतान आ सेहो परदेश धऽ लेतै? यदि ओकरा किछु आड़-समाङ भऽ जाइ तँ के बजा कें आनि देतै ओकर रामशरणकें? रामशरण बापकें कहलकै—"बाउ, पंजाब नहि जाय देबह त' डीहो बिका जेतह। बैंकक संग महाजनक सूदि बढ़ि रहल छै। खेती-बाड़ी हेबे ने करतै, तखनि कोन आस पर गाम मे रहब? तों आ माय कहुना थोड़ेक दिन कष्ट काटि रहिहऽ। हम काज धऽ लेबऽ तऽ सभ के खर्चा चलि जेतह।" आ मुक्तेसर कामति चरखाना गमछा सँ आँखि पोछैत स्वीकारात्मक मूड़ी डोला देने छलै। आ प्राते एक हेंजक संग रामशरण पंजाब विदा भऽ गेल रहै। डबडबायल आँखि सँ मुक्तेसर कामति ओकरा चल जाइत देखैत रहलै।

जहिया सँ रामशरण पंजाब गेलै मुक्तेसर कामति कें चोकरीही उदास उदास सन लागै। आब खिस्सा सुननिहार कम जुटै। एकर कारण छलै जे

मुक्तेसर कामति खिस्सा कहैत-कहैत कतहु भासि जाइ। कहऽ लागै परीक कथा आ अन्त मे जोड़ि दै वैह पोरूकी कथा—"उठ पुत्ता, पुरल-पुरल' लोक ओकर भरियायल कंठ सँ अंखियाइस लैक जे ओकर खिस्सा आब रामशरण क संग पंजाब धऽ लेलकै।

रामशरण दू-तीन बेर बाप कें मनोआर्डर सँ रूपैया पठौलकै आ सभ बेर चिट्ठी मे लिखै जे अगिला मास सँ ओ महाजन क कर्जा चुकबऽ लगतै। किछु दिन ई क्रम चललै आ तकर बाद एकदम चुप्पी। मास दिनक बाद रामचरनाक चिटठी अयलैं जे दोसक कतहु पता नहि छै। ओ ओकरा सँ भेट करबा लेल, ओकर बासा गेल रहय। मुदा ओकर मालिक कहलकै जे जे—"रामशरण भागि गिया। आ साथे-साथ सरदारनी को गहना-गुड़िया भी ले गिया।"

मुक्तेसर कामति चिट्ठी सुनिते धराम सन पटिया पर खसि पड़ल। चोकरीही परहक दू-चारि लोक जे आबो आबि रहल छल, पानि लऽ दौड़ल। पानिक छिटका आँखि पर देलकै तँ ओ आँखि खोललक। लोक कहै—ई सभ भऽ नै सकैये जे रामशरण चोरि करत? कहियोक लत नैं ओकरा मे छलैं। पंजाब मे इ सभ होइते छै। दू-चारि महीना खटौलाक बाद यदि तलबकें चारज करू तँ चोर मे नाम लिखा देत आ तकर बाद बिला देत। मुक्तेसर कामति सभक गप्प सुनि रहल छल आ शुन्य अकाश दिस ताकि रहल छलैं। ओकर आँखि कहि रहल छलै—'रामशरण गाम चल आ। महाजनक कर्जा पूरि गेलै। आब कहियो पंजाब नहि जाइ देबौ। आ तखने प्रत्युत्तर मे बड़क गाछ सँ पोरूकी बाजि उठल—"उठ पुत्ता, पुरल-पुरल।'



चिनगी

सूर्यास्त भऽ रहल छलै ! सूर्य बसबारि मे नुका रहल छलाह । गाय अपन टूनाक संग झटकारने बस्ती दिस आबि रहल छल । छोट-छोट छौंड़ा सभ बकर काज दिन भरि बकरी चरौनाइ आ टालि-गुल्लो खेलेनाइक अतिरिक्त किछु नहि छै घर घूरि रहल छल । मोन मस्त छलै । आइ भरि दिन मे एको थापड़ नहि लागल छलै । ओना ई थापड़ मुक्का ओकरा अखियासल छै । बकरी कोनों खेत दिस ढ़र्राक गेलै, गिरहत एलै, बिना पुछने आछने पीठ पर दू मुक्का ध' देलकै । बान्हक कात मे बकरी पात खेलकै आ कि जिम्मरक सट्टा पर पएर देलकै कि बकरी चरौना छौंड़ाक ऊपर धेले चटकन पड़लै । आइ धरि बकरी चरौना छौंड़ा ककरौ सँ मुँह खोलि के बजलैये नहि । मारि खा लेलाक बाद, मारनिहार के मुँह दिस ताकि, पिपीन मीरैत बिदा भऽ जाइत अछि । कौखन के बड़ तामस चढ़ै छै तऽ करची सँ बकरीये के पिटपिटबय लगैये । भरिसक ओकरा तामसक अंतिम परिणतो यैह छियै । सम्पूर्ण मोहना गाम मे दू टोल मे मात्र एतेक बकरी छै । एकटा दक्षिणवारि टोल जकरा गामबला 'भूइयाँथान' कहै छै ताहि मे आ, दोसर उत्तरवारि टोल मे । उत्तरबारि टोलक नन्हकू मुखियाक बेटा शशिधरवा अपन एही पुश्तैनी धंधा के पकड़ने छल । ओकर बापो बहुत दिन धरि बकरी चरौलकै । तखनि तऽ ओकरा ऊपर कृपा भेलनि किंतू गिरहत के आ, ओकर बाप नन्हकू मुखिया ओतुक्का हसबरवाह भऽ गेल ओना ई अलग बात रहै जे नन्हकूक पत्नी गिरहतक आँखि मे गड़ि गेल रहै । बिना चारा छिड़ियौने माछक शिकार नहि कएल जाइत छै । ओहि समय मे नन्हकू पैंतीस के पार कऽ लेने छल मुदा संतान नहि भेलै, गिरहतक कृपा सँ शशिधरबा अपन माइक पेट मे आएल । एक राति नन्हकू अपन स्त्री सँ पुछने रहै—" कहलियै कि एकरा केहेन लगै छै छौंड़ा हेतै कि

छौंड़ी ?" आ' ओकर पत्नीक देह ओकर गप्प सँ भालरि जेकाँ काँपि उठल रहै । आ मोन पड़ि गेल रहै ओ राति, जहिया कि ई कितू गिरहतक ओहिठाम धान कुटै लेल गेल रहय । धान कुटैत-कुटैत साँझ भऽ गेलै । आ' साँझ सँ राति । कितू गिरहत एकर कसल-कसल देह आ' ब्लाउजक अभाव मे साड़ीक भरकछ बन्हने आ' ओहि भरकछ साड़ी के आर बेशी तानि देने ओकर पुष्ट छातीक उभार के अपलक देखैत, कहने रहथिन--" आइ तो बड़ खटि देलेहें जाय लागें तऽ कनिये समाद लेने जइहें आ'हेतरतरकारी लेल सेहो किछु ल लीहें ।"

आ' ओ ओहि राति जे समाद लऽ वूरल तऽ ओकर पएर भारी लागि रहल छलै । नन्हकू मड़ुवा पीसि रहल छलै । ओकरा साहस नहि भ' रहल छलै जे ओ नन्हकू सँ मना करैत । आत्मग्लानि इनार—पोखरि मे धँसबाक हेतु कहि रहल छलै । मुदा ओकर मूइला पर नन्हकू पर की वितते ई ओकरा आभास छलै । पुलिस-दरोगा औतै, नन्हकू के बान्हि-छेकि ल, जेतै, एहि सँ कितु गिरहतक को बिगड़तै ? ओतऽ ओकरा पहिने धमकी दऽ चुकल छै--" यदि ई बात कत्तौ बजबे तऽ सार नन्हकूवे के तऽ जेल पठाइये देबनि आ' तकर पाछू तोहर जे हाल हेतौ से दस गामक लोक देखतौ ।" आ' ओ बहशीपनाक शिकार भऽ दम साधि चुप्प रहि गेल । शशिधरवाक जनम भेलै । कितू गिरहते एकर नामो रखलकै ।

सात साल बीति गेलै । शशिधरबा माइक टहल टिकोरा करऽ लागल । तें ओकर माय हरदम ओकरा अपनहि संग राखै गिरहतक धान कुटै लेल गेल । त, छौंड़ा खूब उमकि उमकि के ढ़ेकी चलौलक । चाउर कूटल भऽ गेलै । फटकल गेलै । खुद्दी एक कात आ' चाउर एक कात कएल गेला । एक लप चउर उठौ-लक कि तावत गिरहतनी आबि गेलै । लप सन हाथधऽ लेलकै । नहि जानि छोड़ा के की फुरेलै । ओ चोट्टे दोसर हाथे एक फक्का चाउर लऽ मुँह मे धऽ लेलक । गिरहतनी आस्मर्द कऽ उठलीह--" एतेक सपरतीब ? एकर सभक

काजे एहने। चोरि सिखबैले आ' करैले हमरे घर हिनका सभके भेटैये। कहि दैत छी दोसर दिन सँ ई बात दोहराइ नहि।" पत्नीक ललकब सूनि कितू गिरहत घरक मोख लग आबि ठाढ भऽ गेलाह। शशिधरबा पर एकर कोनो असैर नहि छलै। आशान्ति छलै त' ओकर माय जे ओतेकटा बिहाड़ि के अपना मे समेटि के रखने छल। कितू गिरहत चुप्प छलाह।

शशिधरबाक माय एक बेर अपन बेटाक दिस तकैये आ' दोसर बेर कितू गिरहतक दिस। ओकरा आँखि पर ओ काल रात्रि नाचि जाइत छै। समाद बुझबाक लेल जहनियें ओ कितू गिरहतक द्वारि पर गेल, गिरहत कोना बाज जेकाँ झपट्टा मारलकै? ओ जाबत काल कोनो बात बूझय, अपना के सम्हारबाक कोनो यत्न करय, ताबते काल मे बाज अपन मजबूत दूनू चाङुर एकर फड़फड़ाइत दूनू पाँखि पर राखि माँसु नोचऽ लगलै। ई दर्द सँ छटपटाइत रहल। अन्तिम मे ई असोथकित भऽ गेल। लबेजान। ओ ओइ रात्रि कितू गिरहत केँ एहिना ठाढ़ देखने रहै किछु काल, जखनि कि ओ अपन बेवस आँखि ओकर चेहरा पर टिका देने रहै। कितू गिरहत आइयो चुप्प छलाह। ओहिना। मुदा, मोन हुनको मथि रहल छलहि। अपनो एकटा बेटा छलनि। शशिधरबाक माय केँ ठकमूड़ी लागि गेल छलै। आगू मे आबो दू टा कूड़ी छलै—एक भाग चाउर आ' एक भाग खुदीक। चाउर गिरहतक, खुद्दी ओकर। ओ सभ दिन खुद्दीयेक हकदार रहत। चाउर ओकरा कहियो ने भेटतै।

बाहर सँ गिरहतक बेटा गेन्द खेलाइत अबै छै। शशिधरबा ओमहर लपकैये आ कि ओकर माय तखनहि जोर सँ डेन पकड़ि लैत छै। शशिधरबा माय केँ झमारि निकलि जाइये आ' गेन्द केँ उठा बड़ी जोर सँ 'सूट' लगबैत अछि। गेन्द घरक छत पर जा अटकि जाइत छै। कितू गिरहत के होइत छै जे शशिधरबा गेन्द नै, एकटा चिनगी ओकर घर पर फेकि देलकैये।

□

...मके भेटैये ।
...ताकब सूनि

- ☐ एक गाम-लोहना मे जनमल, तीन संगीक कथा-रचनाक संग्रह थिक—त्रिकोण ।

- ☐ 'त्रिकोण' मे मनुक्खक सपना, सोच आ संघर्ष अपन भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण मे भेटत । मुदा कतहु दूर मे विभिन्नतो मे समानता एक विन्दु पर मिलैए आ बनबैत अछि – त्रिकोण ।

- ☐ तीन कथाकारक अलग-अलग स्वाद मे पन्द्रहटा कथाक सग्रह थिक-त्रिकोण । हमर अहाँ क कथा, गाम-घर क कथा, घर सँ बाहर क कथा, संघर्ष करैत मनुक्खक कथा थिक—त्रिकोण ।